स्थापना वर्ष 1949

ज्ञान-ज्योति

2019 – 2020

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर

(एम0 जे0 पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन
द्वारा B श्रेणी (तृतीय चरण) प्रदत्त
दिनांक : 8 फरवरी 2019

महाविद्यालय परिवार
प्राध्यापक वर्ग

प्रथम पंक्ति बैठे हुए (बाएँ से दाएँ)-डॉ० प्रवेश कुमार, डॉ० वी०के० चौधरी, डॉ० मो० नासिर, डॉ० विनय कुमार शर्मा, डॉ० अरुण कुमार डॉ० हितेन्द्र कुमार, डॉ० सीमा तेवतिया, डॉ० कुसुमलता, डॉ० जागृति मदान, डॉ० विनीता सिंह, डॉ० पी०के० वार्ष्णेय - प्राचार्य डॉ० दीपा अग्रवाल, डॉ० वी०के०राय, डॉ० मुजाहिद अली, डॉ० सै० मौ० अरशद रिज़वी, डॉ० सहदेव, डॉ० एस०एस०यादव डॉ० अजय विक्रम सिंह, डॉ० सुरेन्द्र कुमार गौतम।

द्वितीय पंक्ति खड़े हुए (बाएँ से दाएँ)-डॉ० सोमेन्द्र सिंह, डॉ० प्रदीप कुमार, डॉ० मुदित सिंघल, डॉ० महेन्द्र पाल सिंह यादव, डॉ० जुबैर अनीस डॉ० कामिल हुसैन, डॉ० सै० अब्दुल वाहिद शाह, डॉ० रेनू, डॉ० रेशमा परवीन, डॉ० बेबी तबस्सुम, डॉ० मोनिका खन्ना, डॉ० ब्रहम सिंह डॉ० राजू, डॉ० ललित कुमार, डॉ० शैलेन्द्र कुमार, डॉ० राम कुमार, डॉ० आर०के० सागर, डॉ० अमित अग्रवाल।

तृतीय पंक्ति खड़े हुए (बाएँ से दाएँ)-डॉ० रेखा कुमारी, डॉ० प्रतिभा श्रीवास्तव, डॉ० दीपमाला, डॉ० राजीव पाल, डॉ० सुमनलता डॉ० प्रिया बजाज, डॉ० ज़ेबी नाज़, डॉ० दीपक कुमार शर्मा, डॉ० जहाँगीर अहमद खान ।

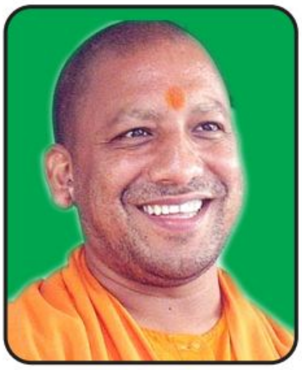

मा. योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान-ज्योति ' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ विद्यार्थियों में साहित्यिक अभिरूचि उत्पन्न करने के साथ ही लेखन के प्रति जिज्ञासा पैदा करती हैं। इस तरह की पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को वैचारिक रूप से परिपक्व बनाने में भी सहायक होती हैं।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका ' ज्ञान- ज्योति ' में ऐसी सामग्री का समावेश किया जाएगा, जो पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(योगी आदित्य नाथ)

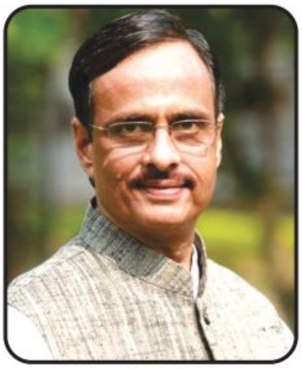

डॉ० दिनेश शर्मा
उप मुख्यमंत्री उ.प्र. सरकार

99-100, विधान भवन
लखनऊ

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें छात्र/छात्राओं के पठन-पाठन एवं शिक्षणेंत्तर, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद एवं प्रतियोगात्मक गतिविधियों का समावेश होगा ।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उक्त पत्रिका के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं की वैचारिक क्षमता एवं रचनाशीलता को गति प्राप्त होगी और उनकी विशिष्ट प्रतिभाओं को उभारने तथा सर्वांगीण विकास के लिये यह पत्रिका उपयोगी होगी ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें ।

(डॉ० दिनेश शर्मा)

कार्यालय : ४, नवीन भवन
उ०प्र० सचिवालय

प्रो0 बलदेव सिंह औलख
राज्य मंत्री
जल शक्ति विभाग

सन्देश

" किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। उसी से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक रूचि का भी पता चलता है। विद्यालय की पत्रिका अभिव्यक्ति इस बात का प्रमाण है कि यहाँ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय प्रबंध परिवार प्रतिबद्ध है। वे इस क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक प्रयास कर रहे है। 'ज्ञान ज्योति' पत्रिका इस क्षेत्र में सबसे उपयुक्त प्रयास है, इसका निरंतर बने रहना जरूरी है। "

प्रो0 बलदेव सिंह औलख

डॉ० विशेष गुप्ता

अध्यक्ष

उत्तर प्रदेश राज्य बाल अधिकारी सरंक्षण आयोग
लखनऊ

सन्देश

संज्ञान में आया है कि आपके सद्प्रयासों से राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर के निर्देशन में वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' वर्ष-2019-20 का प्रकाशन होने जा रहा है। मुझे आशा है कि आपके महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका छात्रों, प्राध्यापकों, शोधकर्ताओं व अभिभावकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

आपके द्वारा महाविद्यालय के छात्रों और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए किये जा रहे सद्प्रयासों की मै खुले मन से सराहना करता हूँ। साथ ही आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' वर्ष-2019-20 के लिए मैं अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

डॉ० विशेष गुप्ता

2/135, व्यस्त सदन,
बुद्धि विहार, मझोला,
मुरादाबाद।

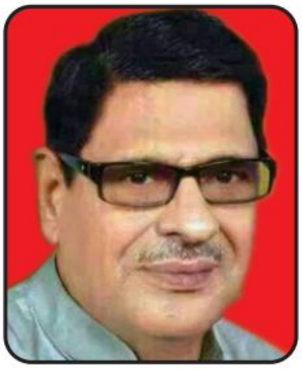

डॉ० जयपाल सिंह 'व्यस्त'
सभापति
प्रदेशीय विद्युत व्यवस्था जाँच समिति
सदस्य : विधान परिषद् (भाजपा)

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.) अपनी वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान-ज्योति ' सत्र 2019-20 का प्रकाशन करने जा रहा है।

आशा है कि पत्रिका में नवीनतम ज्ञान-विज्ञान, उपलब्धियाँ, सृजनात्मक कार्य एवं उत्कृष्ट रचनाओं को उचित स्थान दिया जायेगा, जो छात्र-छात्राओं, शोधार्थियों एवं समाज के सभी वर्गों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए प्राचार्य एवं पत्रिका सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

डॉ0 जयपाल सिंह ' व्यस्त '

सूर्य प्रकाश पाल
अध्यक्ष/सभापति

उ.प्र. राज्य निर्माण सहकारी सघं लि., लखनऊ (UPRNSS)
सहकारिता विभाग
मुख्यालय-जी-4/5-बी, सेक्टर-4.
गोमती नगर विस्तार, लखनऊ-226 010 उ.प्र.

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जनपद रामपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें छात्र/छात्राओं के पठन-पाठन एवं शिक्षणेत्तर, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलकूद एवं प्रतियोगात्मक गतिविधियों का समावेश होगा।

मुझे आशा ही नही बल्कि पूर्ण विश्वास है कि ' ज्ञान ज्योति ' पत्रिका के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं की वैचारिक क्षमता एवं रचनाशीलता को गति प्राप्त होगी और उनकी विशिष्ट प्रतिभाओं के उभरने तथा सर्वांगीण विकास के लिए उक्त पत्रिका उपयोगी होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

सूर्य प्रकाश पाल

राजबाला

विधायक (भा.ज.पा)

कार्यालय : डी - 9, औद्योगिक आस्थान,
अजीतपुर, रामपुर(उ.प्र.)

<u>सन्देश</u>

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता एवं हर्ष हो रहा है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०) अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि में पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं से पाटकों एवं छात्र-छात्राओं का ज्ञानवर्धन होगा। पत्रिका छात्र-छात्राओं को शैक्षिक गतिविधियों के संचालन, बौद्धिक विकास तथा भविष्य की और अग्रसर होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य कार्यालय स्टाफ, सम्पादक मण्डल एवं गुरूजनों को मेरी शुभकामनाये।

राजबाला

डॉ० वंदना शर्मा
निदेशक, उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा निदेशालय, उ0 प्र0
प्रयागराज
0532-2623874 (का0)
0532- 2423919 (फैक्स)
0532- 2256785 (आ0)
9452906572 (मो0)

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर वर्तमान सत्र 2019-20 में महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' का प्रकाशन करने जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका के प्रकाशन से छात्र/छात्राओं के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास एवं रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का अवसर प्राप्त होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की छात्र/छात्राएँ अपने लेखों, कविताओं, कहानियों आदि के माध्यम से सामाजिक सरोकारों से जुडने का प्रयास करेंगी।

आशा है कि सार्थक लेखों के संग्रह के द्वारा पत्रिका छात्र/छात्राओं के लिये सृजनशीलता, सुरूचिपूर्ण रचनात्मक प्रतिभा व उनके व्यक्तित्व के सर्वागीण विकास के साथ ही देश प्रेम की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

डॉ0 वन्दना शर्मा

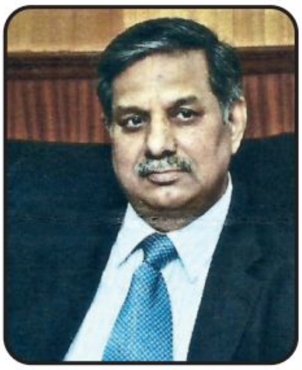

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Human Resource Development] Govt] of india)
बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002
Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi &110002
दूरभाष Phone: कार्यालय off: 011-23234019, 23236350
फैक्स Fax & 011-23239659, e-mail:cm.ugc@nic.in I web: www.ugc.ac.in

प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह
अध्यक्ष
Prof. D.P. Singh
Chairman

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश, सत्र 2019-2020 के लिए अपनी वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' का प्रकाशन करने जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका के माध्यम से कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही महाविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों और उपलब्धियों का भी पत्रिका में समावेश होता है। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठायेंगे तथा अपने विचारों से समाज व राष्ट्र को नई दिशा देने में रचनात्मक भूमिका निभायेंगे।

इस अवसर पर मैं कॉलेज के प्राचार्य, संकाय एवं कर्मचारियों, सभी छात्र-छात्राओं तथा सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

धीरेन्द्र पाल सिंह

प्रो. एस. सी. शर्मा
निदेशक
Prof. S.C. Sharma
Director

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत संस्थान
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
An Autonomous institution of the University Grants Commission

सन्देश

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर, उत्तर प्रदेश में महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' 2019-2020 का प्रकाशित करने जा रहा हैं। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका शैक्षणिक, पाठ्येत्तर और सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्रों की छिपी प्रतिभा को प्रदर्शित करती है।

इस अवसर पर मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, संकाय और छात्रों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

एस. सी. शर्मा

एस. सी. शर्मा

महात्मा ज्योतिबा फुले
रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय,
बरेली - 243006

प्रो. अनिल शुक्ल
कुलपति
Prof Anil Shukla
Vice Chancellors

सन्देश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी अपनी महाविद्यालय की पत्रिका ' ज्ञान-ज्योति ' का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे आशा है कि ' ज्ञान-ज्योति ' के प्रकाशन से महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं को ज्ञानवर्द्धक, रूचिकर एवं प्रेरणादायी पाठ्य-सामग्री उपलब्ध होने के साथ-साथ अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का अवसर भी मिल सकेगा। मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का प्रकाशन आगामी सत्रों में भी जारी रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

शुभकामनाओं सहित।

Anil Shukla

अनिल शुक्ल

प्रो० हरबशं दीक्षित
सदस्य

उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद
U.P Higher Education Services Commission, Allahabad
18-ए, न्याय मार्ग
इलाहाबाद-211001

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर अपनी पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' अंक 2019-2020 का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ऐसे लेखों व तथ्यों को स्थान दिया जायेगा जो सभी विद्यार्थियों व पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होंगे व इससे एकैडमिक गतिविधियों को बढ़ावा भी मिलेगा। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं में लगन से अपने क्षेत्र में अग्रसर होने, बौद्धिक विकास व भविष्य को और अधिक बेहतर बनाने में सफल सहयोग करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रो० हरबशं दीक्षित

उच्च शिक्षा निदेशालय उ.प्र.
प्रयागराज
0532-2423378 (का0)
0532-0423919 (फैक्स)

डॉ0 हिरेन्द्र प्रताप सिंह
संयुक्त निदेशक (उच्च शिक्षा)
उ.प्र. प्रयागराज

सन्देश

यह जानकर मैं अत्यन्त हर्षित, गर्वित और अभिभूत हूँ कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर - उ0प्र0 द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' का अंक 2019-20 प्रकाशित किया जा रहा है।

किसी शैक्षिक संस्थान की पत्रिका की स्थिति एक ऐसे ' आइने ' की तरह होती है, जिसमें सम्बन्धित संस्था के सभी क्रियाकलाप व गतिविधियों के साथ उसकी समस्त उपलब्धियाँ ' अक्स ' के रूप में मौजूद होती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' के प्रकाशन से छात्र /छात्राओं एवं प्रतिभागियों की बौद्धिक क्षमता एवं मौलिक अभिव्यक्ति की प्रतिभा का भी विकास होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

डॉ0 हिरेन्द्र प्रताप सिंह

डॉ0 राजीव पाण्डेय
संयुक्त निदेशक (उच्च शिक्षा)
उ0प्र0, प्रयागराज।

उच्च शिक्षा निदेशालय, उ0प्र0,
प्रयागराज
0532-2423378(का0)
0532-2423919(फैक्स)
(मो0)7880886060

सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' का प्रकाशन करने जा रहा है।

आशा है कि पत्रिका में नवीनतम ज्ञान-विज्ञान एवं उत्कृष्ट रचनाओं को उचित स्थान दिया जायेगा, जो छात्र-छात्राओं, शोधार्थियों एवं समाज के सभी वर्गों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए प्राचार्य एवं पत्रिका सम्पादक मण्डल को साधुवाद देता हूँ।

डॉ0 राजीव पाण्डेय

डॉ0 ध्रुव पाल
उप सचिव

उच्च शिक्षा विभाग
उ.प्र. शासन

<u>सन्देश</u>

मैं राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर द्वारा महाविद्यालय पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' अंक 2019-2020 के प्रकाशन के सम्बन्ध में जानकर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

वस्तुतः महाविद्यालय में इस प्रकार के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं में अभिव्यक्ति सामर्थ्य का विकास होता है। इससे युवा शक्ति में सृजनात्मक प्रवृत्ति व उत्कृष्ट लेखन क्षमता का भी प्रादुर्भाव होता है और प्रेरणास्पद संवाद से ज्ञानवर्धन भी होता है। आपका यह प्रयास अत्यधिक प्रशंसनीय है।

प्राचार्य महोदय, पत्रिका के संपादक मंडल, सम्मानित लेखकों, छात्र-छात्राओं एवं समस्त महाविद्यालय परिवार को इस अवसर पर मेरी शुभकामनाएं व पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक साधुवाद।

डॉ0 ध्रुव पाल

डॉ0 राजेश प्रकाश

क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी
बरेली एवं मुरादाबाद मण्डल
बरेली
दूरभाष 0581- 2423799
9412153063

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर अपनी पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' अंक 2019-2020 का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ऐसे लेखों व तथ्यों को स्थान दिया जायेगा जो सभी विद्यार्थियों व पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक होंगे व इससे एकैडमिक गतिविधियों को बढ़ावा भी मिलेगा। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं में लगन से अपने क्षेत्र में अग्रसर होने, बौद्धिक विकास व भविष्य को और अधिक बेहतर बनाने में सफल सहयोग करेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ0 राजेश प्रकाश

प्रो0 सैयद हसन अब्बास

निदेशक

भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - 244901 (उ0प्र0)
Government of India
Ministry of Culture
RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR - 244901 (U.P.)
TEL: (O) 0595-2340548
E-mail: directorrazlibrary@gmail.com
website : www.razalibrary.gov.in

सन्देश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' अंक 2019-20 प्रकाशित कर रहा है।

महाविद्यालय स्तर पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ छात्रों की सृजनात्मक प्रतिभा निखारने का सशक्त माध्यम होती हैं। अनेक छात्र तो अपने महाविद्यालय की पत्रिका में प्रकाशन के लिये पहली बार लिखते हैं और आगे चल कर बड़े लेखक बनते हैं। मुझे विश्वास है कि 'ज्ञान ज्योति' के माध्यम से महाविद्यालय अपने छात्रों की प्रतिभा खोजने एवं निखारने में सफल होगा।

पत्रिका के प्रकाशन पर मैं इसके सम्पादक मंडल एवं लेखकों के प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सैयद हसन अब्बास

प्रो0 सैयद हसन अब्बास

प्राचार्य की कलम से ....

नव्य, सभ्य एवं प्रगतिशील समाज के सृजन की एकमात्र प्रक्रिया है। सर्वधर्म समभाव एवं सहज मानवीय मूल्यों से युक्त व्यक्ति का विशुद्ध हृदय परिवर्तन। हृदय परिवर्तन व्यक्ति द्वारा परिवार, शिक्षा संस्थान, अथवा समाज से ग्रहण किए गए मनोभावों का प्रतिफल होता है। इसलिए यदि हम परिवार, शिक्षण संस्थान एवं समाज में मानवीय मूल्य आधारित शिक्षा को प्राथमिकता दें तो निःसन्देह न केवल मानवता अपितु समस्त सृष्टि अनन्त काल तक अक्षुण्ण रहेगी।

उत्तरोत्तर उन्नति एवं प्रगति के बावजूद मनुष्य रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, रोजगार जैसी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ रहा है। महत्वाकांक्षी मनुष्य यदि इन आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति कर भी लेता है तो विलासिता सम्बन्धी अनन्त आवश्कताओं को पूर्ण करने के मोह में पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं समाज के प्रति अपनी अन्य नैतिक जिम्मेदारियों को भूल जाता है। शिक्षा, साहित्य और सत्संग इन्हीं जिम्मेदारियों का बोध कराने का एक माध्यम है। अतः शिक्षा, साहित्य और सत्संग को किसी विशेष धर्म, वर्ग, जाति, क्षेत्र, अथवा समाज आधारित संकीर्ण वादी व्यवस्था से मुक्त एवं सहज मानवीय मूल्यों से युक्त होना ही चाहिए, अन्यथा मनुष्य विज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कितना भी विकास कर ले किन्तु यह विकास यदि सृष्टि सदि सृजन के मंगलकारी भावनाओं से युक्त नहीं है तो परमाणु बम, कोरोना विषाणु, बाढ़ भूकंप आदि मानव निर्मित अथवा प्राकृतिक आपदाओं के भय से कभी मुक्त नहीं हो सकता।

मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि महाविद्यालय पत्रिका 'ज्ञान-ज्योति' अंक 2019-2020 का प्रकाशन होने जा रहा है। मुझे आशा ही नही अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका मानवीय मूल्यों एवं सद्भावों से युक्त होकर, नव-पल्लवित प्रतिभाओं में रचनात्मक एवं क्रियात्मक क्षमता विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। अंतःकरण में आत्मबल, हृदय में सहानुभूति, भावनाओं में स्पंदन तथा मस्तिष्क में अध्ययन की मशाल बनकर उनके पथ को आलोकित करेगी।

इस पत्रिका में संकलित संदेश, प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं के लेख, कविताएँ एवं रोचक जानकारियाँ, महाविद्यालय के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं द्वारा प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं में प्राप्त सर्वोच्च स्थान की सूची एवं उनके छायाचित्र निःसन्देह अध्ययनशील पाठकों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं उदीयमान प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं, सम्पादक मंडल, एवं महाविद्यालय परिवार के अन्य सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

प्राचार्य
डॉ0 प्रमोद कुमार वार्ष्णेय
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0 प्र0)

मुख्य सम्पादक एवं मुख्य शास्ता
की कलम से ...

मेरे प्रिय छात्रों,

आप सभी युवा अत्यधिक उर्जा एवं साहस से ओत-प्रोत होते हैं जिस कारण कभी-कभी भ्रमित हो जाते हैं और अपने सपनो को सही दिशा नहीं दे पाते हैं और जब तक इसका ज्ञान होता है, काफी देर हो चुकी होती है। उतनी उर्जा शेष नहीं रहती एवं साहस भी क्षीण हो जाता है। हम अध्यापक छात्र/छात्राओं को अनुशासित करने के साथ-साथ योगा एवं व्याख्यानों के माध्यम से आत्मनियन्त्रण करना सिखाते हैं "Be Your Own guide" हमारे महाविद्यालय में विद्यार्थियों पर कोई सपना थोपा नहीं जाता, अपनी मंजिल एवं सपना वे स्वयं तय करते हैं। अध्यापक सिर्फ उनके साहस एवं सपनों को मर्यादित करते हैं, उन्हें सही मार्ग पर चलने में सहयोग करते हैं ताकि उनके भीतर की अग्नि, साहस एवं पराक्रम बरकरार रहे तथा वे अपनी तरह 'जीवन का उद्देश्य' पा सकें। हमारे बच्चे 'पानी की तरह' बहते रहते हैं एवं बढ़ - चढ़कर बिना किसी विघ्न के सभी पाठ्य सहगामी क्रियाओं में सहभागिता करते हैं।

अनुशासन के द्वारा उनमें राष्ट्रवाद की भावना जगायी जाती है, जो हम शिक्षकों का पुनीत कर्तव्य भी है। ज्ञान-ज्योति पत्रिका में उनके द्वारा की गयी पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं अतिरिक्त पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संकलन किया जाता है ताकि सनद रहे। पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी अपने अन्दर छिपी प्रतिभा को उजागर करते हैं। उनसे हर क्षेत्र, विषय, एवं भाषा के लेख आमन्त्रित किये जाते है तत्पश्चात् उन सभी लेखों को गुलदस्ते की तरह क्रमवद्ध रूप में सजाने का प्रयास किया जाता है।

पत्रिका प्रकाशन में सहयोग हेतु प्राचार्य महोदय, सम्पादक मण्डल, मेरे सहयोगी प्राध्यापकगण ऑफिस स्टाफ को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं छात्र/छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

VSingh

डॉ0 विनीता सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर (अंग्रेजी)

सम्पादक की कलम से...

यह सर्वविदित है कि मनुष्य सृष्टि की सर्वोत्कृष्ट संरचना है। 'सत्यम् शिवम सुन्दरम् ' की संकल्पना से युक्त सृजन के लिये सबसे बड़ा कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व मानव का ही है। प्रकृति ने बहुत सी शक्तियाँ पशु -पक्षियों में मनुष्य से अधिक प्रदान की हैं, जैसे-कुत्ते में घ्राण (सूँघना) शक्ति, गिद्ध और चील में तीक्ष्ण दृष्टि आदि। कुछ पशु-पक्षी आने वाले भूकम्प अथवा तूफान
गौप हटना है।
की आहट को चौबीस घंटे पहले से ही सुनने लगते हैं। निःसन्देह ये शक्तियॉ मनुष्य के निजी संरचना में अपेक्षाकृत सीमित हैं। केवल बुद्धि, विवेक और ज्ञान ही ऐसे तत्त्व हैं जो उसे सृष्टि में सिरमौर बनाते हैं। इन्हीं के बल पर मनुष्य अधिभौतिक तथा आध्यात्मिक विकास के पथ पर अग्रसर होता है। प्रकृति ने मनुष्य को स्वतन्त्र विकास के साथ स्वतन्त्र इच्छा शक्ति के प्रयोग हेतु स्व-विवेक का सुन्दर उपहार दिया है। वह अपने विवेक द्वारा शारीरिक अणुओं में सन्निहित ऊर्जा का प्रयोग अपने आत्मिक उन्नति तथा सृष्टि के समन्वित विकास हेतु कर सकता है । कवि जयशंकर प्रसाद भी कामायनी के 'आनन्द सर्ग' में यही कहते हैं-

शक्ति के विद्युत कण ज्यों व्यस्त,
विकल विखरे हों हो निरुपाय।
समन्वय उसका करे समस्त,
विजयनी मानवता हो जाय।।

विखरी हुई ज्ञान- शक्तियों को समन्वित करने एवं मानवता के विजय की आकांक्षा को हृदय में संजोये हुए महाविद्यालय विगत वर्षों की भॉति इस वर्ष भी ज्ञान-ज्योति पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। वास्तव में यह पत्रिका' वह ज्ञान-पुंज है जहॉ से स्वविवेक की रश्मियाँ निकलकर छात्र-छात्राओं एवं पाठकों के मन और मस्तिष्क में स्वतः ही विकीर्णित होंगी। पत्रिका में संकलित संदेश, प्रध्यापकों के गहन ज्ञान से सम्पृक्त लेख एवं छात्र-छात्राओं के मानसिक उद्‌गार निःसन्देह विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, रचनात्मकता, सृजनशीलता, तथा लेखन एवं अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करने में सहायता प्रदान करेंगे। एन0सी0सी0, क्रीड़ा, एन0एस0एस0, रोवर्स/रेंजर्स, महाविद्यालय एवं विभाग स्तरीय प्रतियोगिताएँ छात्र, छात्राओं की संकलित उपलब्धियाँ तथा ज्ञान वर्धक सामग्रियाँ विद्यार्थियों में उत्साहमयी ऊर्जा का संचार करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होंगी।

डॉ० अरुण कुमार
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

कार्यालय स्टाफ

प्रथम पंक्ति बैठे हुए (बाएँ से दाएँ)- श्रीमती अज़ीज़ा बानो, श्री राधेश्याम (दफ्तरी), श्री राजकुमार, श्री श्याम सिंह, श्रीमती शहला नाज़, प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय, डॉ० रजनीबाला, कु० इन्दू, श्री भोपाल सिंह, श्री एस० के० जौहरी, श्री महेश पाल

द्वितीय पंक्ति खड़े हुए (बाएँ से दाएँ)- श्री अशोक कुमार, श्री लाल सिंह, श्री जय किशन, श्री अशोक कुमार, श्री अरविन्द कुमार, श्री सुधीर कुमार, श्री अम्मान शाकिर, श्री उपदेश ।

फोटो गैलेरी – संकायवार/समितियाँ

सम्पादक मण्डल

वाणिज्य संकाय

समस्त विभागाध्यक्ष

बी०एड० संकाय

कला संकाय

शास्ता मण्डल

विज्ञान संकाय

राज भाषा परिषद् समिति

आई० क्यू० ए० सी० समिति

राष्ट्रीय सेवा योजना समिति

रेमिडियल कोचिंग (नेट/स्लैट) समिति

रोवर्स/रेंजर्स समिति

छात्र-छात्रा उत्पीड़न/रैगिंग उन्मूलन समिति

क्रीड़ा समिति

छात्रसंघ चुनाव समिति

क्रीड़ा समारोह

वार्षिक गतिविधियाँ

एन. सी. सी.

एन. एस. एस.

रोवर्स / रेंजर्स

राष्ट्रीय संगोष्ठी

वार्षिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय संगोष्ठी (22–23 फरवरी 2020)

राष्ट्रीय संगोष्ठी–उर्दू (9 फरवरी 2020)

राजभाषा परिषद्

युवा महोत्सव (उमंग)

वार्षिकोत्सव

कौमी एकता

नवीनतम उपकरण

महाविद्यालय के प्रतिभावान छात्र/छात्राएं

मनोज कुमार
बी.एस-सी. तृतीय
सर्वोच्च अंक स्नातक स्तर
82.44%

अरमिश खान
एम.ए. द्वितीय
सर्वोच्च अंक परास्नातक स्तर
73.7%

गौरव मिश्रा
सड़क सुरक्षा एवं परिवहन
निबन्ध प्रतियोगिता, जनपद एवं
मण्डल स्तर - तृतीय स्थान तथा
राज्य स्तर पर चयनित

सुशील सहगल
सड़क सुरक्षा एवं परिवहन
निबन्ध प्रतियोगिता, जनपद
स्तर प्रथम एवं
मण्डल स्तर - सांत्वना पुरस्कार

यू.ओ. विकास कुमार
थल सैनिक कैंप डी.जी. एनसीसी
नई दिल्ली में चयनित एवं
क्रीड़ा चैंपियन 2019-20

कु0 अंकिता
क्रीडा चैंपियन
2019-2020

एस0यू0ओ0 साकिम
नौ सैनिक कैम्प डी०जी० एनसीसी
नई दिल्ली 2019-2020

एस0यू0ओ0 अमित कुमार
प्री- आर०डी०सी०
तृतीय 2020 में चयनित

कैडेट विजेन्द्र कुमार
मावलांकर सूटिंग
में चयनित

कैडेट नीलम
मावलांकर सूटिंग
में चयनित

कैडेट ललित सागर
आई०जी०सी०
कैम्प में चयनित

पारस त्यागी
चयनित महाविद्यालय
फुटबॉल टीम

हरकिशोर
चयनित महाविद्यालय
मुक्केबाज़ी टीम

रामकुमार साहू
कप्तान महाविद्यालय
कबड्डी टीम

शिवालिका
कप्तान महाविद्यालय
जूडो टीम

पीयूष सक्सेना
चयनित विश्वविद्यालय
शतरंज टीम

गौरव कुमार पंवार
कप्तान महाविद्यालय
शतरंज टीम

सुरेन्दर
कप्तान
हैण्डवॉल पुरूष टीम

नवेद अली
कप्तान महाविद्यालय
तैराकी टीम

मोहम्मद नवेद
चयनित महाविद्यालय
क्रिकेट टीम

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र0)
ज्ञान ज्योति पत्रिका- 2019-2020
अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं
1.	संदेश	I
2.	फोटो गैलेरी	XXII
3.	प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ-फोटो एवं उपलब्धियाँ	XXVI
4.	विकास के चरण - स्थापना वर्ष	1
5.	परीक्षाफल (संकायवार)	3
6.	गौरवमयी प्राचार्यों का कार्यकाल	8
7.	वार्षिक आख्या	10
8.	महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताएँ	26
9.	परिषदीय (विभागीय) प्रतियोगिताएँ	32
10.	प्राध्यापकों की अकादमिक उपलब्धियाँ	42
11.	महाविद्यालय में कार्यरत् प्राध्यापकों की सूची -विभागवार	62
12.	महाविद्यालय में कार्यरत् शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की सूची	63
13.	खण्ड - • हिन्दी	64
	• संस्कृत	116
	• अंग्रेजी	119
	• उर्दू	136

राजकीय रज़ा स्नातकोतर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

विकास के क्रमिक चरण

स्थापना तिथि - 16 जुलाई 1949

परिसर क्षेत्रफल - 52,000 वर्ग मी., आच्छादित क्षेत्रफल - 11,412 वर्ग मी.

प्लिंथ क्षेत्रफल - 12,721 वर्ग मी., चारदीवारी परिमाप- 855.60 मी.

स्थापना वर्ष

क्रम	विषय (पद)	स्नातक	परास्नातक	विषय (पद)	स्नातक	परास्नातक
	कला संकाय			(ख) वाणिज्य संकाय		
1	हिन्दी (6)	1949	1969	वाणिज्य (6)	1962	1973
2	अंग्रेज़ी (7)	1949	1968	(ग) विज्ञान संकाय		
3	उर्दू (3)	1949	1969	1. भौतिक वि. (6)	1949	1968
4	फॉरसी (1)	1949	-	2. रसायन वि. (10)	1949	1968
5	अर्थशास्त्र (5)	1949	1968	3. गणित (4)	1949	1973
6	भूगोल (3)	1949	1978	4. वनस्पति वि. (8)	1958	1973
7	इतिहास (3)	1949	1969	5. जन्तु वि. (8)	1958	1973
8	राज. शा. (4)	1949	1969	6. औद्यो. रसा. (-)	1999	-
9	मनोविज्ञान (7)	1964	1969	(घ) शिक्षा संकाय		
10	संस्कृत (1)	1981	-	बी० एड० (8)	1973	-
11	दर्शन शा. (1)	1981	-			
12	समाज शा. (1)	1979	-			
13	शा. शिक्षा (1)	2018	-			

•	यू.जी.सी. द्वारा 2(F)/12(B)में सम्बद्धता	1972 से पूर्व
•	नैक द्वारा प्रत्यायन	2005 (ग्रेडिंग B)
•	रा.से. योजना राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाईयों की स्थापना	
•	एन. सी.सी. यूनिट की स्थापना -	1967
•	रोवर्स - रेंजर्स यूनिट की स्थापना -	1992
•	"इग्नू अध्ययन"- केन्द्र की स्थापना -	2007

ABOUT THE PRINCIPAL AND COLLEGE

Govt. Raza P.G. College, Rampur is one of the reputed and oldest colleges of UP, established in 1949. The College has completed about 71 years of its existence. Ever since its inception, this college is in the vanguard of upholding the high standards of dignity and decorum, which goes with any noble profession. However, seventy one years is a good span of life to take stock of the previous performance and introspect on the part of teachers and students as to the contributions they have made in furthering the cause of Education and Research. Both the learned and the laity expect a great deal from the Institution regarding the original contributions made to the heritage. The garden of Raza College has been perfumed by the fragrance of many learned Principals in past and now a days it is continued in the form of visionary Principal Dr. P.K. Varshney.

Dr. P.K. Varshney was born on 01 July 1965 in Bahjoi, Distt.Sambhal Uttar Pradesh. It is the privilege of Raza College that he was the student of same college. He has 30 years of teaching experience, started his career as Lecturer, Commerce in Higher Education Department from Veer Bhoomi P.G. College, Mahoba, Uttar Pradesh. He is renowned person in his field. His personality is full of positivity with slogan line of life "Think Positive and Act Positive". As according to his academia, he has supervised 14 Ph.D. scholars and published more than 65 research papers in reputed, refereed national and international journals moreover edited 03 books. He is a member of several Academic and Professional bodies in several renowned institutions. He had held the important position of "Joint Director" in the hierarchy of Higher Education of U.P. during the year 2018 to 2019. Dr. Varshney is a combination of strict administrator and apt professor. He has put the college forth for development in all the directions from teaching learning to co-curricular activities, campus cleaning to discipline and infrastructure development. He has put a new step for wellness of faculty by establishing Yoga classes and Gymnasium. Under his resign, College has touched new heights in all fields in smart way to make foot steps equal making digital India.

"Think Positive and Act Positive"

From the desk of RUSA Co- Ordinator
Dr. Baby Tabassum

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)
परीक्षाफल (संकायवार)
सत्र 2018-19

किसी भी महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम छात्र/छात्राओं एवं अभिभावकों को गर्व का अनुभव कराता है। यह परीक्षा परिणाम उनकी अद्‌भुत प्रतिभा, लगन एवं कठिन परिश्रम का प्रतिफल होता है।

वर्ष-2019 की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के नाम :

स्नातक स्तर

1. कला संकाय

बी.ए. प्रथम	ऐना मर्ज़िया	श्री मरगूब अहमद	276/400	69%
बी.ए. द्वितीय	अर्फी बी	श्री महबूब अली	268/400	67%
बी.ए. तृतीय	मरगूब फ़ात्मा	श्री अफसर अली	262/400	65.5%
समग्र सर्वोच्च	उरूज फिरोज़	श्री फिरोज़ फरहत	776/1200	64.66%

2. विज्ञान संकाय (PCM)

बी.एस-सी. प्रथम	तूबा नूर	श्री ज़ाहिर नूर	344/450	76.44%
बी.एस-सी. द्वितीय	रश्मि	श्री मोहनलाल	323/450	71.78%
बी.एस-सी. तृतीय	उरूज तालिब	श्री तालिब उब इस्लाम	337/450	74.89%
समग्र सर्वोच्च	नम्रता सिंह आर्या	श्री राजेन्द्र सिंह आर्या	995/1350	73.70%

3. विज्ञान संकाय (BIO)

बी.एस-सी. प्रथम	मरयम बी	श्री सैयद मियां	371/450	82.44%
बी.एस-सी. द्वितीय	तययबा मुजद्‌दी	श्री जुनैद नबी मुनद्‌दी	358/450	79.55%
बी.एस-सी. तृतीय	अरमिश खान	श्री सारि निशात खान	362/450	80.44%
समग्र सर्वोच्च	अरमिश खान	श्री सारि निशात खान	1113/1350	82.44%

4. वाणिज्य संकाय

बी.कॉम. प्रथम	ज़रका नाहिर	श्री मौहम्मद ताहिर	399/600	66.50%
बी.कॉम. द्वितीय	सौन्दर्या सक्सैना	श्री संजीव कुमार	457/600	65.29%
बी.कॉम. तृतीय	सोनली नेगी	श्री धीरेन्द्र सिंह नेगी	499/600	71.29%
समग्र सर्वोच्च	उमरा खान	श्री अज़हर हुसैन खान	1371/2000	68.55%

5. शिक्षा संकाय

बी.एड. प्रथम	उमरा ख़ानम	श्री महबूब हसन खान	572/700	81.71%
बी.एड. द्वितीय	ऋतु शर्मा	श्री पद्‌म प्रकाश शर्मा	600/700	85.71%
समग्र सर्वोच्च	ऋतु शर्मा	श्री पद्‌म प्रकाश शर्मा	1126/1400	80.40%

परास्नातक स्तर
कला संकाय

हिन्दी विभाग

एम.ए. प्रथम	आकाश	श्री रामलाल सिंह	298/500	59.6%
एम.ए. द्वितीय	नगमा बी	श्री मक़सद अली	284/500	56.8%
समग्र सर्वोच्च	रूबी	श्री शिवकुमार	508/1000	50.8%

उर्दू विभाग

एम.ए. प्रथम	मौ. महफ़ूज़	श्री मौं. मतलूब	304/400	76%
एम.ए. द्वितीय	सायमा बी	श्री जुल्फिकार अली	382/500	76.4%
समग्र सर्वोच्च	सायमा बी	श्री जुल्फिकार अली	660/900	73.33%

अंग्रेजी विभाग

एम.ए. प्रथम	रूबीना	श्री नत्यू अहमद	240/400	60%
एम.ए. द्वितीय	शिफा जावेद	श्री जावेद शम्सी	620/1000	62%
समग्र सर्वोच्च	मरयम इकबाल	श्री मौ. इक़बाल	564/900	62.66%

इतिहास विभाग

एम.ए. प्रथम	अंकिता सिंह	श्री बलिराम सिंह	264/400	66.00%
एम.ए. द्वितीय	निशा नाज़	श्री मुज़ाम्मिल हुसैन	316/500	63.2%
समग्र सर्वोच्च	राहुल कुमार	श्री विजय पाल	538/900	59.7%

भूगोल विभाग

एम.ए. प्रथम	रूपाली राय	श्री अश्विनी कुमार राय	351/500	70.2%
एम.ए. द्वितीय	मनोज कुमार	श्री ध्यान सिंह	387/500	77.4%
समग्र सर्वोच्च	मनोज कुमार	श्री ध्यान सिंह	737/1000	73.7%

अर्थशास्त्र विभाग

एम.ए. प्रथम	दक़रा अतहर	श्री अतहर खान	334/500	66.8%
एम.ए. द्वितीय	मोमिना खान	श्री उबैद अली खान	344/500	68.8%
समग्र सर्वोच्च	मोमिना खान	श्री उबैद अली खान	638/1000	63.8%

मनोविज्ञान विभाग

एम.ए. प्रथम	शाहीन	श्री अनीस अहमद	346/500	69.2%
एम.ए. द्वितीय	समरा तनवीर	श्री तनवीर अहमद	281/500	56.2%
समग्र सर्वोच्च	समरा तनवीर	श्री तनवीर अहमद	570/1000	57%

राजनीति विज्ञान-विभाग

एम.ए. प्रथम	सुरेन्द्र सिंह	श्री ओमकार सिंह	240/400	60.00%
एम.ए. द्वितीय	रंजीत कुमार	श्री परशुराम प्रसाद	306/500	61.20%
समग्र सर्वोच्च	रंजीत कुमार	श्री परशुराम प्रसाद	564/900	62.67%

विज्ञान संकाय

रसायन विज्ञान विभाग

एम.एस-सी. प्रथम	शिवी	श्री आनन्द बाबू	393/600	65.50%
एम.एस-सी. द्वितीय	खिज़रा खान	श्री उबैदुर्रहमान खान	447/600	74.50%
समग्र सर्वोच्च	खिज़रा खान	श्री उबैदुर्रहमान खान	863/1200	71.91%

जन्तु विज्ञान विभाग

एम.एस-सी. प्रथम	नीलोफ़र खान	श्री शाकिर खान	432/600	72%
एम.एस-सी. द्वितीय	सायमा	श्री इन्त्रेज़ार अहमद	450/600	75%
समग्र सर्वोच्च	तसमिया खान	श्री रऊफ़ खान	853/1200	71.07%

वनस्पति विज्ञान विभाग

एम.एस-सी. प्रथम	महक खान	श्री फिरोज़ मौ. खान	518/700	74%
एम.एस-सी. द्वितीय	मरयम सईद	श्री सईद उज्ज़फर खान	556/700	79.42%
समग्र सर्वोच्च	मरयम सईद	श्री सईद उज्ज़फर खान	1011/1400	72.21%

भौतिक विज्ञान विभाग

एम.एस-सी. प्रथम	अमनदीप सिंह	श्री ओमप्रकाश	451/600	75.2%
एम.एस-सी. द्वितीय	सपना गंगवार	श्री प्रेमपाल	42/600	72%
समग्र सर्वोच्च	सपना गंगवार	श्री प्रेमपाल	818/1200	68.2%

गणित विभाग

एम.एस-सी. प्रथम	सोनल अरोड़ा	श्री महेन्द्र अरोड़ा	267/500	53.4%
एम.एस-सी. द्वितीय	वरीक्षा खान	श्री हरामत यार खान	373/500	74.6%
समग्र सर्वोच्च	वरीक्षा खान	श्री हरामत यार खान	700/1000	70%

वाणिज्य संकाय

एम.कॉम. प्रथम	दीक्षा शर्मा	श्री प्रकाशचन्द्र शर्मा	413/600	68.83%
एम.कॉम. द्वितीय	ऐमन तंज़ील	श्री तंजील शम्सी	511/700	73.00%
समग्र सर्वोच्च	ऐमन तंज़ील	श्री तंजील शम्सी	900/1300	69.23%

सात सागरों में जल की अपेक्षा मानव के नेत्रों से कही अधिक आंसू बह चुके हैं । - बुद्ध

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)
संकायवार परीक्षाफल प्रारूप - 2
सत्र 2018-19
स्नातक स्तर

कला संकाय

कक्षा	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
बी.ए. प्रथम	930	905	751	82.98%
बी.ए. द्वितीय	699	692	646	93.35%
बी.ए. तृतीय	772	767	740	96.47%

विज्ञान संकाय

कक्षा	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
बी.एस-सी. प्रथम (PCM)	222	209	91	43.54%
बी.एस-सी. द्वितीय (PCM)	116	115	98	85.22%
बी.एस-सी. तृतीय (PCM)	91	91	89	97.80%
बी.एस-सी. प्रथम (BIO)	320	311	163	52.5%
बी.एस-सी. द्वितीय (BIO)	200	196	194	99.00%
बी.एस-सी. तृतीय (BIO)	171	170	163	96%

वाणिज्य संकाय

कक्षा	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
बी.कॉम. प्रथम	321	318	269	84.59%
बी.कॉम. द्वितीय	220	220	205	93.18%
बी.कॉम. तृतीय	273	272	263	96.69%

शिक्षा संकाय

कक्षा	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
बी.एड.प्रथम	50	36	34	94.44%
बी.एड. द्वितीय	30	30	30	100%

स्नातकोत्तर स्तर

वाणिज्य संकाय

कक्षा	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
एम.कॉम. प्रथम	76	75	75	100%
एम.कॉम. द्वितीय	78	76	76	100%

स्नातकोत्तर स्तर

कला संकाय

कक्षा	विभाग	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
एम.ए. प्रथम	हिन्दी	45	43	43	100%
एम.ए. द्वितीय	हिन्दी	10	10	10	100%
एम.ए. प्रथम	अंग्रेजी	76	74	72	97.29%
एम.ए. द्वितीय	अंग्रेजी	59	58	55	93.2%
एम.ए. प्रथम	उर्दू	78	76	76	100%
एम.ए. द्वितीय	उर्दू	54	54	53	98.14%
एम.ए. प्रथम	राजनीति विज्ञान	44	43	43	100%
एम.ए. द्वितीय	राजनीति विज्ञान	21	21	18	85.8%
एम.ए. प्रथम	इतिहास	69	67	66	98.5%
एम.ए. द्वितीय	इतिहास	64	63	61	96.82%
एम.ए. प्रथम	अर्थशास्त्र	35	31	31	100%
एम.ए. द्वितीय	अर्थशास्त्र	30	30	30	100%
एम.ए. प्रथम	भूगोल	25	23	23	100%
एम.ए. द्वितीय	भूगोल	40	35	35	100%
एम.ए. प्रथम	मनोविज्ञान	14	13	13	100%
एम.ए. द्वितीय	मनोविज्ञान	06	06	06	100%

विज्ञान संकाय

कक्षा	विभाग	कुल छात्र संख्या	सम्मिलित छात्र संख्या	उत्तीर्ण संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
एम.एस-सी. प्रथम	जन्तु विज्ञान	11	11	10	91%
एम.एस-सी. द्वितीय	जन्तु विज्ञान	10	10	10	100%
एम.एस-सी. प्रथम	वनस्पति विज्ञान	11	10	10	100%
एम.एस-सी. द्वितीय	वनस्पति विज्ञान	10	10	10	100%
एम.एस-सी. प्रथम	रयायन विज्ञान	12	11	11	100%
एम.एस-सी. द्वितीय	रसायन विज्ञान	06	06	06	100%
एम.एस-सी. प्रथम	गणित	38	36	23	63.88%
एम.एस-सी. द्वितीय	गणित	19	19	14	73.68%
एम.एस-सी. प्रथम	भौतिकी विज्ञान	13	13	10	77%
एम.एस-सी. द्वितीय	भौतिकी विज्ञान	08	08	07	87.5%

राजकीय रज़ा स्नातकोतर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

महाविद्यालय के गौरवमयी प्राचार्यों का कार्यकाल

क्रम	नाम	कार्यकाल
1	श्री अब्दुल शकूर	1949 - 1955
2	डॉ. पी. एन. कुलश्रेष्ठ	1955 - 1958
3	श्री जे.पी. अग्रवाल	1958 - 1963
4	डॉ. ओ. बी. एल. कपूर	1963 - 1967
5	डॉ. के. डी. उपाध्याय	1967 - 1968
6	डॉ. के. एन. श्रीवास्तव	1968 - 1969
7	डॉ. बी. एन. गांगुली	1969 - 1970
8	डॉ. माया राम	1970 - 1971
9	डॉ. बी. एन. गिगरस	1971 - 1972
10	डॉ. माया राम	1972 - 1977
11	डॉ. ओंकार नाथ श्रीवास्तव	1977 - 1979
12	डॉ. चौधरी जे. एन. सक्सेना	1979 - 1983
13	डॉ. ओ. पी. शर्मा	1983 - 1986
14	डॉ. सतीश बाबू अग्रवाल	1986 - 1987
15	डॉ. बी. बी. एस. रायजादा	1987 - 1987
16	प्रो. आर. के. रस्तोगी	1987 - 1989
17	प्रो. एस. आर. प्रजापति- (कार्यवाहक)	1989 - 1991
18	प्रो. आर. के. कोहली	1991 - 1993
19	प्रो. जी. बी. उप्रेती	1993 - 1998
20	डॉ. आर. के. बसलस	1998 - 2000
21	डॉ. सतीश कुमार	2000 - 2004
22	प्रो. आई. सी. गुप्ता - (कार्यवाहक)	2004 - 2005
23	डॉ. एन. पी. तिवारी	2005 - 2005
24	डॉ. एम. ए. सिद्धीकी - (कार्यवाहक)	2005 - 2005
25	डॉ. एल. एन. द्विवेदी	2005 - 06 (05मार्च)
26	डॉ. एम. ए. सिद्धीकी - (कार्यवाहक)	6.3.06 - 30.6.07
27	प्रो. एन. के. बेरी - (कार्यवाहक)	1.7.07. - 26.2.09

राजकीय रज़ा स्नातकोतर महाविद्यालय, रामपुर (उ०प्र०)

महाविद्यालय के गौरवमयी प्राचार्यों का कार्यकाल

क्रम	नाम	कार्यकाल
28.	डॉ. जे.डी. मित्रा	26.02.09 - 07.09.10
29.	डॉ. श्रीमती माधुरी रस्तोगी-(कार्यवाहक)	07.09.10 - 30.06.12
30.	डॉ. मोहम्मद जावेद- (कार्यवाहक)	30.06.12 - 22.09.12
31.	डॉ. जे. पी. सिंह- (कार्यवाहक)	22.09.12 - 31.07.13
32.	डॉ. परमात्मा सिंह	01.08.13 - 31.07.15
33.	डॉ. सईदा बेगम रिज़वी	01.08.15 - 30.06.17
34.	डॉ. राकेश अग्रवाल- (कार्यवाहक)	01.07.17 - 15.08.17
35.	डॉ. पी. के. वार्ष्णेय	16.08.17 - 31.05.18
36.	डॉ. एस. एस. यादव-(कार्यवाहक)	01.06.18 - 06.06.18
37.	डॉ. आर. पी. यादव	07.06.18 - 28.06.19
38.	डॉ. पी.के. वार्ष्णेय	29.06.19 -

★★★★★

माँ सरस्वती जी

महाविद्यालय : वार्षिक आख्या 2019-20

ऐतिहासिक परिचय

रामपुर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक ऐतिहासिक नगर है। यह मुरादाबाद एवं बरेली के बीच में स्थित है। रामपुर नगर कोसी नदी के किनारे पर स्थित है। रामपुर का चाकू और ज़रदोज़ी उद्योग विश्व प्रसिद्ध है। वस्त्र तथा चीनी मिट्टी के बरतन के उद्योग भी नगर में है। रामपुर नगर में खुसरो बाग में स्थित राजकीय रज़ा स्नातकोतर महाविद्यालय के अलावा अरबी भाषा का एक विद्यालय, रामपुर किला, रज़ा पुस्तकालय, आर्यभट्ट नक्षत्रशाला और कोठी खास बाग स्थित है। रामपुर की स्थापना नवाब फैजुल्लाह खान ने की थी। उन्होने 1774-1794 की अवधि में यहाँ शासन किया। यह जिला समुद्र सतह से उत्तर में 192 मीटर व दक्षिण में 166.4 मीटर उँचाई पर है। राष्ट्रीय राजमार्ग 24 यहाँ से होकर गुजरता है। यह जिला उत्तर प्रदेश की राजधानी से 302 किमी० व राष्ट्रीय राजधानी से 185 किमी० दूरी पर स्थित है।

दिनाँक : 8 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा तृतीय चक्र पूर्ण करने वाला यह 'उ०प्र० का प्रथम राजकीय महाविद्यालय है। ज्ञातव्य हो कि महाविद्यालय प्रथम एवं द्वितीय चक्र में भी (NAAC) द्वारा मूल्यांकित होने वाला उ०प्र० का प्रथम राजकीय महाविद्यालय था।

संकाय और विषयः

महाविद्यालय में कला, विज्ञान, वाणिज्य और शिक्षा संकाय के अन्तर्गत कुल 5670 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं। कला संकाय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी, समाजशास्त्र, शारीरिक शिक्षा, दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र एवं भूगोल विषयों का अध्ययन कराया जाता है।

विज्ञान संकाय में स्नातक स्तर पर पढ़ाये जाने वाले विषयों में से गणित, रसायन विज्ञान ,भौतिकी, जन्तु विज्ञान और वनस्पति विज्ञान का अध्यापन स्नातकोत्तर स्तर पर भी कराया जाता है। रसायन विज्ञान विभाग में औद्योगिक रसायन का दो वर्षीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी चल रहा है।

वाणिज्य संकाय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर कक्षाएँ संचालित हैं। शिक्षा संकाय में बी०एड० की कक्षाओं के संचालन की उत्तम व्यवस्था है।

महाविद्यालय में 06 जुलाई 2007 को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के दो अध्ययन केन्द्रों स्थापना की गई। जिसके अन्तर्गत एम०ए०, पी० जी० डिप्लोमा, प्रमाण पत्र कोर्स आदि के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। महाविद्यालय द्वारा News Bulletin, Seminar, Alumni, meet, PTM, सामाजिक सरोकार आदि को परम्परागत रूप से अंगीकार किया गया है।

स्टाफ

महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय के नेतृत्व में 52 स्थायी शिक्षक कार्यरत हैं, जो अध्यापन के अतिरिक्त महाविद्यालय की विभिन्न समितियों के अन्तर्गत कार्य कर अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ कर रहे हैं। लगभग 31 शिक्षणेत्तर कर्मचारी कार्यालय, पुस्तकालय, तकनीकी लैब एवं चतुर्थ श्रेणी में कार्य

कर रहे है। कार्यालय का समस्त स्टाफ महाविद्यालय की प्रगति हेतु अपना पूरा सहयोग एवं योगदान प्रदान करता है।

पुस्तकालय एवं वाचनालय

महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के ज्ञानवर्धन हेतु एक समृद्ध केन्द्रीय पुस्तकालय की व्यवस्था है। जिसमें विभिन्न विषयों की लगभग एक लाख, पुस्तकें और रिसर्च जर्नल्स उपलब्ध है। नवीनतम घटनाओं से छात्र-छात्राओं को अवगत कराने के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू के विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाएँ भी पुस्तकालय में उपलब्ध है। स्नातकोत्तर विषयों के लिए प्रत्येक विभागीय पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है। पुस्तकालय का डिजिटलाइजेशन किया जा रहा है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, उ0 प्र0 सरकार के ड्रीम प्रोजेक्ट 09 अगस्त 2019 को वृहत वृक्षरोपणं प्रोग्राम के अर्न्तगत रामपुर जनपद में स्थित 30 महाविद्यालयों में वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ0 हितेन्द्र कुमार ने नोडल अधिकारी के रूप कार्य करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य जी के दिशा-निर्देशन में 11,000 (ग्यारह हजार) से अधिक पौधों का वृक्षारोपण कराया।

★★★★★

सर्वेपल्ली राधाकृष्णन (5 सितंबर 1888 - 17 अप्रैल 1975)

जो सच्चाई पर निर्भर है वह किसी से घृणा नहीं करता। - नेपोलियन

शिक्षणेत्तर एवं पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियाँ:

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शिक्षण के साथ-साथ शिक्षणेत्तर गतिविधियों में भी छात्र/छात्राओं के भविष्य को संजो रहा है जिनमें :

राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S)

राष्ट्रीय सेवा योजना में छात्र/छात्राओं को श्रम, अनुशासन, आत्मबल एवं सदाचार के महत्त्व को समझाने के लिए महाविद्यालय में आवंटित चार इकाईयों में तीन छात्र और एक छात्रा इकाई है। महाविद्यालय में एन०एस०एस० के कार्यक्रम अधिकारी डॉ० राम कुमार, डॉ० निधि गुप्ता , डॉ० ब्रहम सिंह एवं डॉ० वी० के० राय के निर्देशन में छात्र/छात्राएँ अपने भविष्य को सजों रहे हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत एक दिवसीय शिविरों के साथ-साथ वार्षिक सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन दिनांक 23 से 29 दिसम्बर 2019 को ग्राम हकीम गंज, सीगन खेड़ा, खौद का मझरा एवं खौद में आयोजित किया गया। शिविर में चारों इकाईयों के सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थियों का भी चयन किया गया। निम्न छात्र/छात्राओं को सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी होने का गौरव प्राप्त हुआ।

एन०एस०एस० के सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी

1-	अमीन साहब	श्री मुजफ्फर खान	बी०एस-सी० तृतीय	अम्बेडकरदल दल
2-	हबीबा फैज	श्री मो० तसलीम खान	बी०एस-सी० द्वितीय	रानी लक्ष्मीबाई दल
3-	संजू सिंह	श्री सूरज पाल	बी०ए० द्वितीय	आजाद दल
4-	अमित दिवाकर	श्री राम सिंह	बी०ए० द्वितीय	राधाकृष्णन दल
5-	बृजेश कुमार	श्री राम वृक्ष	बी०ए० प्रथम	राधाकृष्णन दल

रोवर्स - रेंजर्स

उत्तर प्रदेश भारत स्काउट गाईड के तत्त्वावधान में महाविद्यालय में रोवर्स - रेंजर्स त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन दिनांक 19 एवं 27-28 दिसम्बर 2019 को महाविद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य एवं रोवर्स - रेंजर्स प्रभारियों के कुशल निर्देशन में रोवर लीडर डॉ० आर0के० सागर एवं रेंजर्स लीडर डॉ० रेनू भविष्य की पीढ़ी को सजों रहे हैं। सत्र 2019-20 में उत्तर प्रदेश भारत स्काउट एवं गाईड के तत्त्वावधान में आयोजित महाविद्यालय के रोवर्स - रेंजर्स छात्रा/छात्राओं ने ध्वज शिष्टाचार, मार्चपास्ट, अतिथि माल्यार्पण, बैज अलंकरण, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह, पोस्टर एवं नारा-लेखन प्रतियोगिता यूथ-फोरम (वाद-विवाद प्रतियोगिता) टेन्ट, पुल, पेपर-वेट, पाक कला आदि प्रतियोगिताओं में सहभागिता की। त्रिदिवसीय विशेष-शिविर में उक्त प्रतियोगिताओं के आधार पर सर्वश्रेष्ठ रोवर्स एवं रेंजर्स का चयन किया गया। सर्वश्रेष्ठ रोवर्स एवं रेंजर्स बनने का गौरव निम्न छात्र/छात्राओं को हासिल हुआ।

01	फौजिया बी	सर्वश्रेष्ठ रेंजर
02	विकास	सर्वश्रेष्ठ रोवर

एन०सी०सी०

महाविद्यालय में वर्ष 1967 में गठित एन०सी०सी० इकाई में 105 छात्र/छात्राएँ जिसमें 50 छात्र 55 छात्राएँ नामांकित हैं। एन०सी०सी० के कैडेट्स महाविद्यालय के प्रत्येक कार्यक्रम में अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। जिसमे रैलियों का आयोजन कर समाज में जागरूकता, स्वच्छता, वृक्षारोपण, तम्बाकू निषेध आदि कार्यक्रमों को करके समाज को जागरूक करते हैं। एन०सी०सी० का सत्र 2018-19 में बी' एवं ' सी ' प्रमाण पत्र का परिणाम क्रमश: 92 प्रतिशत एवं 70 प्रतिशत रहा। सत्र में 23 यूपी बीएन,एन०सी०सी० मुरादाबाद तथा महाविद्यालय के 02 कैडेस सीनियर अण्डर ऑफिसर साकिम तथा विकास कुमार ने थल सेना कैम्प में पहली बार डी.जी.एन.सी.सी. नई दिल्ली में प्रतिभाग किया।

इस वर्ष महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय जी के द्वारा कैडेट्स के प्रशिक्षण हेतु इण्डोर शार्ट शूटिंग रेंज तथा बाधा प्रशिक्षण हेतु उपकरणों का निर्माण कराया गया जो एक बड़ी उपलब्धि है, अन्य महाविद्यालय में यह सुविधा नही है। अण्डर आफिसर विजेन्द्र कुमार ने मांवलाकर शूटिंग में अच्छा प्रदर्शन कर महाविद्यालय का नाम रोशन किया। छात्र-छात्रा बटालियन का संचालन बी०एड० प्रभारी ले० डॉ० प्रवेश कुमार द्वारा किया जाता है।

क्रीडा

महाविद्यालय में दिनांक 21 एवं 22 जनवरी 2020 को क्रीड़ा प्रभारी डॉ० मुजाहिद अली के संयोजन में वार्षिक क्रीडा समारोह हुआ जिसमें डॉ० राजेश प्रकाश, क्षेत्राधिकारी बरेली, उच्च शिक्षा एवं थाना प्रभारी गंज श्री रामवीर सिंह अतिथि के रूप में सम्मिलत हुए। छात्र/छात्राओं ने क्रीडा में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। बी०ए० द्वितीय वर्ष के छात्र विकास को छात्र वर्ग तथा अंकिता एम०ए० द्वितीय वर्ष को छात्रा वर्ग में क्रीड़ा चैम्पियन घोषित किया गया। समारोह का समापन प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय द्वारा किया गया।

छात्रवृत्ति

महाविद्यालय में अनुसूचित जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/अल्पसंख्यक /सामान्य निर्धन वर्ग/दिव्यांग और बीडी मजदूरों के बच्चों को केन्द्र सरकार/उ०प्र० सरकार की ओर से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उर्दू एकेडमी, लखनऊ उत्तर प्रदेश द्वारा विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। डॉ० सुरेन्द्र कुमार (समन्वयक) के नेतृत्व में महाविद्यालय द्वारा इस वर्ष 3755 छात्रवृति फार्म अग्रसारित किये गये तथा सरकार द्वारा कन्या सुमंगला योजना के अन्तर्गत भी छात्राओं के फार्म लगातार भरवाये जा रहे है।

अन्य सुविधाएँ

महाविद्यालय द्वारा छात्र/छात्राओं के हितों को ध्यान में रखते हुए कुछ अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं। जैसे पुस्तकालय, वाचनालय, छात्रा कक्ष, साईकिल स्टैण्ड, कम्यूटर कक्ष और शीतल जल व्यवस्था आदि। ग्रीन हाउस में जिम का संचालन शुरू हुआ तथा छात्राओं के लिए ऑटोमेटिक स्नेटरी बैडिंग मशीन की सुविधा उपलब्ध करायी गयी। महाविद्यालय में विगत वर्ष एक पुरातन छात्र परिषद् का विधिवत् गठन भी किया गया है । जिसके रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया प्रगति पर है। साथ ही अभिभावक-प्राध्यापक परिषद् और महिला शिकायत निवारण प्रकोष्ठ भी गठित किया गया है।

- महाविद्यालय में शांति व्यवस्था बनाये रखने तथा छात्र / छात्राओं की समस्याओं के निदान के लिए मुख्य

शास्ता डॉ० विनीता सिंह के नेतृत्व में गठित शास्ता मण्डल पूरी लगन और मेहनत से अपने कार्यो को अंजाम दे रहा है।

महाविद्यालय प्रत्येक वर्ष महाविद्यालय पत्रिका ' ज्ञान ज्योति ' का भी प्रकाशन कराता है। पत्रिका में छात्र/छात्राएँ अपने, सृजनात्मक क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों द्वारा रचित हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत एवं फारसी के महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। जो कि उनकी रचनात्मक और सृजनात्मक कलाधर्मिता को प्रोत्साहित करते है। शिक्षक-शिक्षा विभाग (बी०एड० छात्र/छात्राओं की वायोमैट्रिक उपस्थिति का प्रावधान इस सत्र में किया गया है। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र/छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र सम्मानित किया गया।

युवा महोत्सव एवं अन्य कार्यक्रम

महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की नैसर्गिक प्रतिभाओं को उचित पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए युवा महोत्सव उमंग, कौमी एकता सप्ताह आदि कार्यक्रमों का आयोजन समारोहक डॉ० सै० मो० अरशद रिजवी, समन्वयक डॉ० जागृति मदान एवं समारोह व अन्य समस्त प्राध्यापकों तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के सहयोग से किया गया। जिसके अन्तर्गत वाद-विवाद, चार्ट, पोस्टर, निबन्ध, कार्टून रचना, नारा लेखन, संस्मरण लेखन, आशुभाषण, स्वचरित कविता पाठ, रंगोली रचना, सामूहिक परिचर्चा , एकल गायन और नुक्कड़ -नाटक आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस एवं जयन्ती जैसे राष्ट्रीय पर्वो पर राष्ट्र प्रेम स्वतन्त्रता संग्राम के संघर्षपूर्ण इतिहास पर चर्चा-परिचर्चा की गई तथा भारत रत्न माननीय स्व० श्री अटल बिहारी वाजपेयी, सरदार पटेल तथा बी०आर० अम्बेडकर जैसे देश की महान विभूतियों को उनके जन्म दिन पर याद करते हुए उनके सम्बन्ध में वाद-विवाद तथा चर्चा-परिचर्चा का आयोजन किया गया। जल संरक्षण एवं स्वच्छता के कार्यक्रम भी आयोजित किये गये तथा समय-समय पर छात्र/छात्राओं के भविष्य को संवारने हेतु कैरियर काउन्सिलिंग के कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते है।

महाविद्यालय के सभी चारो संकायों कला, विज्ञान, वाणिज्य, तथा शिक्षा (बी0एड0) के नवप्रवेशित छात्र/छात्राओं का परिचयात्मक सम्मेलन (इन्डक्सन मीटिंग) माह जुलाई 2019 में आयोजित की गयी साथ ही महाविद्यालय के अधिकतर विभागों द्वारा विभागीय परिषदों का गठन एवं विभागीय परिषदों के तत्त्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किये गये और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र/छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

यातायात जागरूकता

उ०प्र० प्रदेश परिवहन विभाग द्वारा जिला मण्डल एवं प्रदेश स्तर पर यातायात जागरूकता के अन्तर्गत महाविद्यालय को जागरूकता कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु रामपुर जनपद का नोडल केन्द्र बनाया गया। जिसके तत्ववाधान में आयोजित की गई जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में महाविद्यालय के बी०एड० विभाग के छात्र सुशील सहगल को प्रथम तथा गौरव मिश्र को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। साथ ही मण्डल स्तर पर हिन्दू कॉलेज

मुरादाबाद में आयोजित हुई प्रतियोगिता में महाविद्यालय के बी०एड० प्रथम वर्ष के छात्र गौरव मिश्र को तृतीय एवं बी०एड० द्वितीय वर्ष के छात्र सुशील सहगल को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। जनपद स्तर पर प्रथम स्थान पाने वाले छात्र सुशील कुमार को पुरस्कार स्वरूप धनराशि रु० 21000/- (इक्कीस हजार) तथा तृतीय स्थान पाने वाले गौरव मिश्र को पुरस्कार स्वरूप धनराशि रु० 7000/- (सात हजार) देकर सम्मानित किया गया। मण्डल स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र गौरव मिश्र को रु० 11000/- (ग्यारह हजार) का नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया साथ ही उक्त छात्र का चयन प्रदेश स्तर के लिए हुआ। यह महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है।

रामपुर महोत्सव

जिला प्रशासन रामपुर द्वारा माह दिसम्बर 2019 एवं जनवरी 2020 में आयोजित हुए रामपुर महोत्सव में महाविद्यालय के 52 छात्र - छात्राओं ने प्रतिभाग किया। भारत रत्न डॉ० भीमराव अम्बेडकर विचार गोष्ठी पर छात्र- छात्राओं ने संविधान का चित्रण विषय पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया जिसकी सुंदर प्रस्तुति विज्ञान संकाय के छात्र /छात्राओं द्वारा दी गई तथा विचार गोष्ठी में बी०एड० विभाग के छात्र/छात्राओं ने अपने विचार व्यक्त किये जिसका संचालन बी०एड०विभाग के असि० प्रोफेसर सैयद 'अब्दुल वाहिद शाह ' ने किया। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विचार गोष्ठी में भी महाविद्यालय के बी०एड० विभाग के छात्रों के द्वारा विचार व्यक्त किये गये।

इस विचार गोष्ठी के उपरान्त महाविद्यालय के छात्र मो०नवेद और उनके साथियों के द्वारा मनमोहक मैडले की प्रस्तुति की गयी, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा रामपुर महोत्सव में की गयी। महाविद्यालय के छात्र मोहसिन का सितार के साथ गायन खूब चर्चित रहा एन०सी०सी० व बी०एड०छात्र/छात्राओं ने अपने गीतों की सुंदर प्रस्तुति दी। सभी छात्र/छात्राओं को जिला अधिकारी महोदय रामपुर के द्वारा सम्मानित किया गया।

योगा

महाविद्यालय में प्रत्येक शुक्रवार को विशेषज्ञों के निर्देशन में प्राध्यापकों को एवं छात्र/छात्राओं को योग अभ्यास कराने की व्यवस्था इसी सत्र से हुई जिसमे प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय सहित प्राध्यापकों, छात्र/छात्राओं ने सहभागिता की।

सी०सी0टी0वी0

सम्पूर्ण महाविद्यालय सी०सी०टी०वी० कैमरों से लैस है। प्रत्येक कक्षा एवं प्रयोगशाला में 2-2 कैमरे लगे हुए हैं। साथ ही सम्पूर्ण प्रांगण की समस्त गतिविधियाँ कैमरे की नजर में है।

वायोमेट्रिक

महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों की उपस्थिति वायोमेट्रिक है साथ ही इसी सत्र से बी०एड० विभाग के छात्र/छात्राओं की उपस्थिति वायोमेट्रिक कर दी गयी है। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय का प्रयास है कि सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति वायोमेट्रिक हो।

आधुनिक कम्प्यूटर लैब

रूसा के अनुदान द्वारा महाविद्यालय की कक्ष कक्षाओं तथा एक आधुनिक कम्प्यूटर लैब का निर्माण हो चुका है। इसी सत्र से कक्षा - कक्ष एवं कम्प्यूटर लेब छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध है। इसके अतरिक्त कम्प्यूटर

प्रवीणता प्रमाण पत्र पाठयक्रम महाविद्यालय में संचालित है जो महाविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग में स्थापित कम्प्यूटर लैब में संचालित है।

वार्षिकोत्सव एवं अलंकरण समारोहः-

महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव एवं अलंकरण समारोह दिनांक 5 फरवरी 2020 को आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि श्री गौरव कुमार सयुंक्त मजिस्ट्रेट I.A.S रहे तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में निर्वतमान उच्च शिक्षा निर्देशक डॉ० प्रीति गौतम, निवर्तमान सयुंक्त निर्देशक उच्च शिक्षा डॉ० दिलीप कपूर, डॉ०अतुल शर्मा प्राचार्य महिला कॉलेज रामपुर, डॉ० माधुरी रस्तोगी पूर्व प्राचार्य सहित अतिथि छात्र/छात्राएँ उपस्थित रही। सभी संकायों एवं कक्षाओं के उच्चतम अंक पाने वाले छात्र-छात्राओं एवं सत्र भर में आयोजित किये जाने वाली प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया तथा वार्षिक आख्या समारोह डॉ० सै०मो० अरशद रिज़वी द्वारा पढ़ी गयी एवं मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम भी छात्र/छात्राओं ने प्रस्तुत किये।

राष्ट्रीय संगोष्ठी:- (उर्दू विभाग)

9 फरवरी 2020 को महाविद्यालय के उर्दू विभाग के तत्वावधान में " उर्दू अफ़सानवी अदब के फ़रोग में रुहेलखण्ड का हिस्सा" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके आयोजन सचिव डॉ० सै० मो० अरशद रिजवी रहे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी महाविद्यालय

महाविद्यालय में दिनांक 22 व 23 फरवरी 2020 को " शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व " विषय पर उच्च शिक्षा विभाग ,उ०प्र० सरकार द्वारा संपोषित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो० अनिल शुक्ल, कुलपति MJP रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली उ०प्र० रहे तथा उदघाटन सत्र के मुख्यवक्ता प्रो० जे० एस० राजपूत, संस्थापक अध्यक्ष NCERT पूर्व निदशेक NCERT जो कि पदम श्री एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित यूनेस्को के जान कामेनियस अवार्ड से सम्मानित होने वाले प्रो० राजपूत रहे इनके साथ ही वाणिज्य संकाय विषय के पूर्व आधिष्ठाता MJP रूहेलखण्ड वि० वि० बरेली के डॉ० एन०एल० शर्मा अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित रहे, द्वितीय दिवस के तकनीकी सत्र के मुख्य वक्ता प्रो० मौ० मियाँ, पूर्व कुलपति मौलाना आजाद नेशनल उर्दू वि०वि०, हैदराबाद रहे। संगोष्ठी में अतिथि वक्ता के रूप में प्रो० संबोध कुमार, गढ़वाल वि०वि० : प्रो०के०के० चौधरी व प्रो०संतोष अरोरा, रुहेलखण्ड वि०वि०, बरेली, डॉ० मंजू गुप्ता व डॉ० विकास शर्मा, चौ० चरण सिंह वि०वि, मेरठ, डॉ० हबीब इकराम, कानपुर वि०वि०, डॉ० अभय मीतल, नजीबाबाद, डॉ० मौ० हनीफ अहमद, MAANU, इत्यादि रहे। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी ने कई विशिष्ट उपलब्धियाँ अर्जित की जिसमे इस संगोष्ठी में देश के 14 राज्यों के प्राध्यापकों, प्रतिनिधियों, शोधार्थियों विद्यार्थियों सहित आठ सौ से अधिक प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। संगोष्ठी की स्मारिका में 265 शोध सारांश हॉर्ड व सॉफ्ट कॉपी में प्रकाशित किये इस अवसर पर दो (I.S.B.N न० 2 पुस्तकों सहित) का प्रकाशन हुआ । इन पुस्तकों के सम्पादक डॉ० पी०के० वार्ष्णेय, प्राचार्य, सैयद अब्दुल वाहिद शाह एवं दीपक कुमार शर्मा असि० प्रोफेसर शिक्षक - शिक्षा विभाग (बी०एड०) रहे। इस संगोष्ठी की मुख्य संरक्षिका डॉ० वंदना शर्मा निदेशक उच्च शिक्षा उ०प्र० प्रयागराज संयोजक डॉ० पी०के० वार्ष्णेय, आयोजन सचिव द कुमार शर्मा एवं सैयद ' अब्दुल वाहिद शाह रहे ।

एन०सी०सी० : वार्षिक आख्या - 2019-20

लेफ्टिनेंट (डॉ०) प्रवेश कुमार
असि० प्रोफेसर (बी०एड०) / एसोसिएट एन०सी०सी० ऑफिसर

"महाविद्यालय में एन०सी०सी० की उपलब्धियाँ "

रामपुर में एन०सी०सी० का आरम्भ वर्ष -1967 में हुआ। सन 1967 से आज तक लगभग 52 वर्षो से महाविद्यालय में अध्ययनरत विभिन्न कैडेटस ने एन०सी०सी० ' सी एवं बी ' प्रमाण पत्र की परीक्षा पास कर विभिन्न विभागों एवं सेनाओं में भर्ती होकर देश की सेवा कर रहे हैं। आज सम्पूर्ण भारत वर्ष में 13 लाख से ज्यादा एन०सी०सी० कैडेटस विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, विद्यालयों तथा संस्थानो में भारतीय सेनाओं (थल सेना, वायु सेना, तथा नौ सेना) का प्रशिक्षण ले रहे है। सेना प्रशिक्षण में, मानसिक तथा शारीरिक विकास में वृद्धि करते हैं। इन प्रशिक्षणों में ड्रिल, शस्त्र, बाधा, सिग्नल, मैप रीडिंग, रूढ़िवादी चिंन्हों की जानकारी, वेपन प्रशिक्षण, जजिंज डिस्टेन्स तथा आपदा प्रबन्धन आदि जैसे महत्वपूर्ण प्रशिक्षणों को देकर कैडेटस को मजबूत बनाया जाता है। एन०सी०सी० विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विद्यालयों में कैडेटस प्रशिक्षण के साथ-साथ अन्य अध्ययनरत छात्रों को एकता और अनुशासन का पाठ पढ़ाता है जो छात्र प्रशिक्षण ले रहे होते हैं उनका सामान्य अध्ययन के साथ-साथ सर्वागींण विकास होता है।

<u>महाविद्यालय में एन०सी०सी० में प्रवेश/नामांकनः-</u>

एन०सी०सी० प्रवेश हेतु महाविद्यालय में प्रति वर्ष 105 स्थानों के लिए सीधी भर्ती के रूप में नामांकन की प्रक्रिया होती है इसमें छात्र/छात्रा का 50-50 प्रतिशत नामांकन किया जाता है। जिसमे छात्र/छात्रा बी०ए०/बी०एस-सी०/बी० कॉम० प्रथम वर्ष में महाविद्यालय में प्रवेशित छात्रों को प्रवेश लेने के लिए प्रक्रिया करायी जाती है। छात्र/छात्रा भारत का मूल निवासी हो उसकी आयु 16-25 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। परन्तु ' सी ' प्रमाण पत्र कोर्स 25 वर्ष आयु पूर्ण होने तक किया जाना आवश्यक है। एन०सी०सी० में नामांकन के लिए शारीरिक दक्षता, लिखित तथा साक्षात्कार की परीक्षा से गुजरना पड़ता है जो परीक्षाओं को पास करके तथा मैरिट में आता है उसका नामांकन किया जाता है।

एन०सी०सी०से लाभ

महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्रा जिनका एन०सी०सी० में नामांकन होता है वह 'B' तथा 'C' परीक्षा उतीर्ण कर विभिन्न सेवाओं में उनको वरीयता दी जाती है तथा उनका आरक्षित स्थानों पर चयन होता है जैसे-
भारतीय सेना में 100 स्थान प्रतिवर्ष कमीशन्ड के पद के लिए आरक्षित हैं।

1. नौ सेना में जाने के लिए एन.सी.सी. प्रमाणपत्र वाले कैडेट के लिए विभिन्न स्त्तर पर स्थान आरक्षित हैं।
2. वायु सेना में चयन हेतु 10-15% वोनस अंकों का प्रावधान है।
3. उ०प्र० परिवहन/राज्य परिवहन में ड्राईवर तथा परिचालक के चयन हेतु 'B' एवं 'C' प्रमाण पत्र अनिवार्य है।
4. एन.सी.सी. कैडेटस के लिए राज्य व केन्द्रीय पुलिस में वरीयता के साथ प्रशिक्षण में छूट दी जाती है।
5. एन.सी.सी. 'C' एवं 'B' प्रमाण पत्र धारक छात्र की किसी भी कक्षा में प्रवेश लेने पर 10 से 15 अंक वोनस के मिलते हैं।

6. एन.सी.सी. कैडेटस का शारीरिक विकास के साथ–साथ चरित्र निर्माण ,व्यक्तित्व विकास तथा कम्यूनिकेशन कौशल का विकास भी होता है।

महाविद्यालय में एन.सी.सी. की उपलब्धियाँ:-

सत्र 2019–20 में एन.सी.सी. में महाविद्यालय के कैडेटस द्वारा विभिन्न शिविरों में प्रतिभाग किया गया, शिविरों में कैडेटस ने अपने विवेक का परिचय देते हुए शिवरों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। महाविद्यालय के सीनियर अण्डर ऑफिसर अमित कुमार तथा ललित सागर ने आई०जी०सी० शिविर में स्थान बनाया जिसमें कैडेट अमित ने प्री०आर०डी०सी० तृतीय 2020 में मजबूत पकड़ बनाने में कामयाब रहे। इस सत्र में कैडेट विजेन्द्र कुमार तथा नीलम ने मावलांकर सूटिंग में प्रतिभाग कर श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। महाविद्यालय के कैडेट सीनियर अण्डर ऑफिसर साकिम तथा अण्डर आफिसर विकास कुमार पूर्व वर्षो का रिकोर्ड तोड़ते हुए पहली बार बाधा प्रशिक्षण में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके भारतीय थल सैनिक कैम्प डी०जी० एन०सी०सी० नई दिल्ली में प्रवेश किया जो महाविद्यालय के लिए गौरव का विषय है, बाधा प्रशिक्षण में 23 उ०प्र० बटालियन की ओर से तथा महाविद्यालय में –2019 से पहले किसी भी कैडेट ने बाधा प्रशिक्षण शिविर में प्रतिभाग नहीं किया था।

महाविद्यालय में एन.सी.सी. के लिए नवीन उपलब्धि

महाविद्यालय में पूर्व प्राचार्य डॉ० आर०पी० यादव तथा निर्वतमान प्राचार्य डॉ० पी०के० वार्ष्णेय जी के कर कमलो द्वारा एन.सी.सी. के सफल प्रशिक्षण के लिए महाविद्यालय में शार्ट रेंज तथा बाधा प्रशिक्षण के लिए ऑबस्टीकल का निर्माण कराया जिसका उदघाटन दिनांक 11 दिसम्बर 2019 को दर्जा राज्यमंत्री माननीय सूर्य प्रकाश पाल, पुलिस अधीक्षक डॉ० अजय पाल शर्मा, श्री गौरव कुमार ज्वाइंट मजिस्ट्रेट रामपुर, कर्नल संजय सिन्हा कमानाधिकारी 23 उ०प्र० वटालियन एन.सी.सी. मुरादाबाद तथा डॉ० पी०के० वार्ष्णेय प्राचार्य राजकीय रज़ा महाविद्यालय द्वारा किया गया। उसी दिन 81 कैडेटस को 5–5 राउन्ड० 22 " रायफल से शार्ट रेंज पर गोलियाँ चलवाकर प्रशिक्षण दिलाया गया। भविष्य में एन०सी०सी० कैडेट्स को फायरिगं तथा बाधा प्रशिक्षण महाविद्यालय में स्थित शार्ट रैंज तथा ऑबस्टिकल का प्रशिक्षण महाविद्यालय में ही मिलेगा। महाविद्यालय के संरक्षक डॉ०पी०के० वार्ष्णेय जी के द्वारा कराया गया यह कार्य कैडेट्स एवं महाविद्यालय के लिए सराहनीय है।

एन०सी०सी० में छात्रों के लिए अवसर

- भारतीय सेना में जाने के लिए अवसर।
- नौ सेना में जाने के लिए अवसर।
- वायु सेना में जाने के लिए अवसर।
- राज्य परिवहन में जाने के लिए अवसर।
- राज्य एवं केन्द्रीय पुलिस में जाने के लिए अवसर।
- व्यावसायिक शिक्षा में प्रवेश के लिए अंकों का निर्धारण।
- विभिन्न प्रकार के शिविर में प्रतिभाग करने के अवसर।
- आर० डी०सी० के माध्यम से राजपथ पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर।

एन०सी०सी० कैडेटस द्वारा रैली एवं अभियान

एन०सी०सी० कैडेटर्स की जन जागरूकता अभियान चलाये जाने में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस वर्ष भी कैडेटस ने स्वच्छता अभियान ,साईकिल रैली जो माह अक्टूबर में लखनऊ से चल कर दिल्ली तक गयी, 30 नवम्बर में यातायात रैली, दिव्यांग मतदाता जागरूकता रैली, पॉलीथिन रोकथाम, प्रदूषण रोकथाम, जागरूकता रैली, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, एड्स जागरूकता, बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ तथा मतदाता जागरूकता रैली आदि में प्रतिभाग किया गया। एन०सी०सी० द्वारा गोद लिए गये। गोद लिये गये ग्राम सैजनी नानकार में साफ-सफाई तथा जनजागरूकता अभियान चलाया गया। महाविद्यालय में एन०सी०सी० कैडेटस ने श्रमदान तथा साफ-सफाई का कार्य किया।

अत: महाविद्यालय में "एन०सी०सी० कैडेटस द्वारा विभिन्न वार्षिक शिविरों में प्रतिभाग कर विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की गयी है। कैडेटस के प्रशिक्षण हेतु शार्ट रेंज तथा आबस्टिकल अत्यधिक प्रभावी कार्य हैं। सभी कार्य महाविद्यालय के संरक्षक डॉ० पी० के० वार्ष्णेय तथा डॉ० प्रवेश कुमार एन०सी०सी० प्रभारी के निर्देशन में कराये गये।

लेफ्टिनेंट (डॉ०) प्रवेश कुमार 6 फरवरी 2017 को राज्यपाल
श्री रामनाईक जी से गोल्ड मेण्डल प्राप्त करते हुए।

बहुधा वातावरण में परिवर्तन से कही अधिक व्यक्ति के भीतर ही बदलाव की जरूरत होती है। - एसी बेंसन

क्रीड़ा - परिषद्: वार्षिक आख्या 2019 - 20

महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के सम्यक, शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु एक क्रीड़ा परिषद् गठित है। यह परिषद् महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं हेतु विभिन्न खेलों के आयोजनों का प्रबंधन एवं नियमन करती है। सीमित साधनों के रहते हुये भी यह परिषद् महाविद्यालय मे हॉकी, क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबाल बॉल, एथलेटिक्स, कबड्डी, खो-खो, तीरन्दाज़ी, शूटिंग, तैराकी, शतरंज, जूडो, कुश्ती, बैडमिन्टन आदि खेलों का आयोजन करती है, साथ ही अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं मे भाग लेने हेतु विभिन्न टीमों का गठन करती है। इस परिषद् के सदस्यों का विवरण निम्नवत् है -

1.	डॉ. पी.के. वार्ष्णेय	प्राचार्य / क्रीड़ा अध्यक्ष
2.	डॉ. मुजाहिद अली	क्रीड़ा सचिव
3.	डॉ. एस.एस. यादव	संयोजक
4.	डॉ. जागृति मदान	सह संयोजक
5.	डॉ. सुमनलता	सह संयोजक
6.	डॉ. अजय विक्रम सिंह	सह संयोजक
7.	डॉ. सै. अब्दुल वाहिद शाह	सह संयोजक
8.	डॉ. वी.के. राय	सह संयोजक

वर्ष 2019-20 में विभिन्न अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं में निम्नलिखित खिलाड़ियों ने महाविद्यालय की विभिन्न टीमों का प्रतिनिधित्व किया-

1.	कुश्ती	राजकुमार साहू	बी.एस.सी तृतीय वर्ष
2.	क्रिकेट	मेंहदी हसन	एम.ए. प्रथम
3.	जूडो	शिवालिका	एम.ए. द्वितीय वर्ष
4.	फुटबाल	अमान अहमद खां	बी.ए. प्रथम वर्ष
5.	तैराकी	नवेद अली	बी.ए. तृतीय वर्ष
6.	शतरंज	गौरव कुमार पवार	एम.ए. प्रथम वर्ष

उपर्युक्त खिलाड़ियों के नेतृत्व में महाविद्यालय की टीमों ने एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय , बरेली से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों में जाकर सम्बंधित खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया तथा अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया। निम्नलिखित खिलाड़ी विश्वविद्यालय की विभिन्न टीमों मे चयनित हुये-

1.	क्रिकेट	मौहम्मद नवेद	एम.ए. द्वितीय वर्ष
2.	फुटबाल	पारस त्यागी	बी.एस-सी तृतीय वर्ष
3.	शतरंज	पीयूष सक्सैना	एम.एस-सी प्रथम वर्ष
4.	मुक्केबाज़ी	हरिशंकर	बी.एड. प्रथम वर्ष

वर्ष 2019-20 के वार्षिक क्रीड़ा समारोह का अयोजन दिनांक 21 व 22 जनवरी 2020 को सम्पन्न हुआ।

इस समारोह में छात्र-छात्राओं हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें **विकास कुमार** बी.ए. द्वितीय वर्ष छात्र चैम्पियन एवं **कुमारी अंकिता** एम.ए. द्वितीय वर्ष छात्रा चैम्पियन घोषित किये गये। वार्षिक क्रीड़ोत्सव 2019-20 के विभिन्न खेलों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले खिलिड़यों की सूची निम्नवत् है।

100 मी0 दौड़ (छात्रा)

1.	अंकिता	एम.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	रितु	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	तमन्ना जहां	बी.एस.सी द्वितीय वर्ष	तृतीय

100 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	इरशाद अली	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	विकास कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	विशेष कुमार	बी.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय

800 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	विष्णु	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	महेश सैनी	एम.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	अनिक	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय

800 मी0 दौड़ (छात्रा)

1.	आरती	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	रितु	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	स्वाति	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

गोला प्रक्षेपण (छात्रा)

1.	आरती	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	तमन्ना जहां	बी.एस.सी द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	अंकिता	एम.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

गोला प्रक्षेपण (छात्र)

1.	विकास कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	मानवेन्द्र सिंह	बी.एड. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	अंकित देवल	बी.एड. प्रथम वर्ष	तृतीय

चक्का प्रक्षेपण (छात्रा)

1.	पूजा	बी.कॉम. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	आरती	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	तमन्ना जहां	बी.एस.सी द्वितीय वर्ष	तृतीय

चक्का प्रक्षेपण (छात्र)

1.	अनिल	बी.ए. तृतीय वर्ष	प्रथम
2.	शुभम कुमार सिंह	बी.एड. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	कमल	बी.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय

400 मी0 दौड़ (छात्रा)

1.	अंकिता	एम.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	तमन्ना जहां	बी.एस–सी द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	मीनू	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

400 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	इरशाद अली	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	देशराज	एम.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	वीरेन्द्र	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय

200 मी0 दौड़ (छात्रा)

1.	अंकिता	एम.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	रितु	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	तमन्ना जहां	बी.एस–सी द्वितीय वर्ष	तृतीय

200 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	इरशाद अली	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	विष्णु	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	वीरेन्द्र	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय

1500 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	विष्णु	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	महेश सैनी	एम.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	ललित सागर	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

5000 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	राजकुमार	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	अनिल कुमार	बी.ए. तृतीय वष	द्वितीय
3.	महेश सैनी	एम.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय
4.	कपिल कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	सांत्वना

10000 मी0 दौड़ (छात्र)

1.	महेश सैनी	एम.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	अनिल कुमार	बी.ए. तृतीय वर्ष	द्वितीय
3.	रोहित कुमार	बी.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय
4.	राजकुमार	बी.ए. प्रथम वर्ष	सांत्वना
5.	धर्मवीर	बी.ए. प्रथम वर्ष	सांत्वना

लम्बी कूद (छात्रा)

1.	अंकिता	एम.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	रितु	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	मीनू	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

लम्बी कूद (छात्र)

1.	इरशाद अली	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	विकास कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	विशेष कुमार	बी.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय

ऊँची कूद (छात्र)

1.	विकास कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	जतिन कुमार	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	विजय कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

भाला प्रक्षेपण (छात्रा)

1.	शिवालिका	एम.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	समन इरफान	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	मीना	बी.कॉम. प्रथम वर्ष	तृतीय

भाला प्रक्षेपण (छात्र)

1.	विकास कुमार	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2.	सागर	बी.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	कमल	बी.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय

रोवर्स/रेंजर्स : वार्षिक आख्या 2019-2020

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में त्रिदिवसीय रोवर्स-रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय के प्राचार्य(प्रो0) डॉ० पी० के० वार्ष्णेय ने दीप प्रज्ज्वलित एवं ध्वजारोहण करके किया। ध्वजारोहण के उपरान्त रोवर्स - रेंजर्स झण्डा गीत छात्र/छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। झण्डा गीत के उपरान्त मुख्य अतिथि एवं सभी अतिथियों का स्वागत डॉ० रेनू रेंजर्स लीडर व डॉ० राम किशोर सागर रोवर्स लीडर ने स्कार्प पहनाकर किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० पी० के० वार्ष्णेय ने कहा, " स्काउटिंग के द्वारा छात्र/छात्राएँ अपने जीवन को अनुशासित व सयंमित कर जीवन की ऊचाँइयों को छू सकते हैं।" रोवर्स लीडर डॉ० रामकिशोर सागर ने कहा," रोवर्स-रेंजर्स प्रशिक्षण से छात्र छात्राओं का सम्पूर्ण विकास होता है, जिसके फलस्वरूप परिवार समाज एवं राष्ट्र का विकास होता है।" रेंजर्स लीडर ने कहा " यह प्रशिक्षण छात्र -छात्राओं को सीमित संसाधनो व विपरीत परिस्थितियों में जीवन जीने की कला सिखाता है।"

भारत-स्काउड गाइड रामपुर से उपस्थित जिला संगठन आयुक्त श्रीमती नरवंत कौर व जिला प्रशिक्षक श्री प्रेमपाल सिंह ने शिविर के प्रथम दिन छात्र-छात्राओं को ध्वज शिष्टाचार, प्रार्थना मार्च-पास्ट, झण्डागीत, नियम-प्रतिज्ञा तथा ध्वज के बारे में प्रशिक्षित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० आर०के०सागर, डॉ० रेनु(रोवर/रेजंर लीडर) ने किया। इस मौके पर चीफ प्रॉक्टर डॉ० विनीता सिंह, डॉ० सुमनलता, डॉ० जाग्रति मदान, डॉ० कुसुमलता, डा० सीमा तेवतिया, डॉ० अजीता रानी, डॉ० दीपा अग्रवाल, डॉ० ललित कुमार, डॉ०रेखा कुमारी, डॉ० एस०एस०यादव, डॉ०सहदेव, डॉ० दीपमाला, डॉ० ब्रह्म सिंह, डॉ०अरुण कुमार आदि मौजूद रहे!

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर में चल रहे तीन दिवसीय रोवर्स- रेंजर्स प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन की शुरूआत महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण से की गई। इस अवसर पर उन्होंने छात्र छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा," रोवर्स-रेंजर्स आजीवन अनुशासित रहकर समाज व देश की सेवा करता है।" शिविर में प्रशिक्षण युवा वर्ग के मानसिक व शारीरिक विकास के लिए एक सशक्त माध्यम है।" प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन जिला-स्काउट गाइड आयुक्त श्रीमती नरवंत कौर और जिला प्रशिक्षक श्री प्रेमपाल जी ने रोवर्स-रेंजर्स को मार्च पास्ट, कलरपार्टी, गाँठ बाँधना, सैण्ड स्टोरी, तंबू गाड़ना व पुल निर्माण आदि की जानकारी दी। शिविर में छात्र-छात्राओं की नारा लेखन प्रतियोगिता सम्पन्न कराई गयी। इस अवसर पर रोर्वस लीडर डॉ० रामकिशोर सागर, रेजंर लीडर डॉ०रेनू, डॉ० कुसुमलता, डॉ० अजीता रानी, डॉ० सीमा तेवतिया, डॉ० रेखा रानी, डॉ० रेशमा परवीन, डॉ० सुरेन्द्र कुमार आदि मौजूद रहे।

राजकीय रज़ा स्ना० महा० में चल रहे त्रिदिवसीय रोवर्स-रेंजर्स शिविर के समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बलराम सिंह, जिला मुख्य आयुक्त स्काउट गाइड रामपुर ने कहा- छात्र-छात्राएँ, रोवर्स-रेंजर्स प्रशिक्षण को अपने जीवन में उतार कर सफलता हासिल करें। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो०पी० के० वार्ष्णेय ने कहा कि रोवर्स-रेंजर्स समाज सेवा सीखकर समाजसेवा करके अपने जीवन को सफल बनायें,और समाज में जागरूकता की अलख जलायें। तीन दिनों में कैम्प में नारा लेखन, पेपरवेट, रंगोली, टैण्ट और

पाक कला आदि प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय शिविर में **सर्वश्रेष्ठ रोवर श्री विकास और सर्वश्रेष्ठ रेंजर फौजिया बी को चुना गया।** इस प्रशिक्षण शिविर के प्रशिक्षक श्री प्रेमपाल और श्री नरवंत कौर रहीं। रेंजर्स लीडर डॉ०रेनू ने सभी का स्वागत किया। रोवर्स लीडर डॉ० आर० क०सागर ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० आर० के०सागर एवं डॉ० रेनू ने किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राएँ प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में दफ्तरी श्री राधेश्याम और वरिष्ठ कार्यालय सहायक डॉ० रजनीबाला का विशेष सहयोग रहा ।

राष्ट्रीय सेवा योजना : वार्षिक आख्या : 2019-20

सत्र 2019-20 का प्रथम एक दिवसीय शिविर दिनांक 12.12.19 को आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत स्वच्छता अभियान चलाया गया। तत्पश्चात एक बौद्धिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कार्यक्रम अधिकारीयों ने स्वच्छता, समाज सेवा आदि विषयों पर छात्रों को संबोधित किया। दिनांक 14.12.19 को आयोजित दूसरे एक दिवसीय शिविर के अन्तर्गत नारी शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छ भारत विषयों पर जागरूकता रैली निकाली गयी तथा बौद्धिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य (डॉ.) पी.के. वार्ष्णेय ने शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि विषयों पर छात्रों को विस्तार से बताया।

सत्र 2019-20 का रा.से.यो. का सात दिवसीय विशेष शिविर दिनांक 23.01.20 से 29.01.20 तक ग्राम हकीम गंज, रामपुर में आयोजित किया गया जिसका शुभारम्भ प्राचार्य (डॉ.)पी.के. वार्ष्णेय ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस शिविर के अंतर्गत हस्ताक्षर अभियान, पर्यावरण संरक्षण, नारा लेखन, नारी शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रा.से.यो. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. राम कुमार, डॉ. वी.के. राय, डॉ. ब्रहम सिंह एवं डॉ. निधि गुप्ता ने अपनी-अपनी ईकाईयो के स्वयं सेवकों एवं सेविकाओं के साथ मिलकर पूर्ण मनोयोग से विभिन्न अभियानों को सम्पन्न कराया। एन.एस.एस. के सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी (2019-20) ।
निम्न है :

1. अमीन साहब पुत्र श्री मुजफफर खान	अम्बेडकर दल
2. ब्रजेश कुमार पुत्र श्री राम वृक्ष	राधा कृष्णन दल
3. संजू सिंह पुत्र श्री सूरज पाल अमित दिवाकर पुत्र श्री राम सिंह	आज़ाद दल
4. हबीबा फौज पुत्री श्री मौ. तसलीम खां	रानी लक्ष्मी बाई दल

सात दिवसीय विशेष शिविर के अन्तर्गत नमामि गंगे योजना के सभी विषयों पर प्रतिदिन प्रभात फेरी, विचार गोष्ठी एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताएँ

युवा महोत्सव " उमंग "2019 - 2020 (16, 17, एवं 18 दिसम्बर)

चार्ट / पोस्टर प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	ज़ैनब दानिश	बी०एस-सी० प्रथम	प्रथम
2	माजिदा	बी०कॉम० द्वितीय	द्वितीय
3	शहाब खाँ	बी०एस-सी० तृतीय	द्वितीय
4	इलमास अमीर	बी०एस-सी० द्वितीय	तृतीय

सामूहिक परिचर्चा प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	अंसार अली (कलावर्ग)	B.A.II	
2	योगेश कुमार		प्रथम
3	नसीम		
4	आसिया		
5	नूर अफशा		
1	सौन्दर्य -सक्सेना(वाणिज्य वर्ग)	B.Com III	
2	शाइमा खान		प्रथम
3	माजिदा खान		
4	साइमा अली		
1	हरीराम यादव (बी०एड० वर्ग)	B.Ed.	
2	अंकित पाठक	B.Ed	द्वितीय
3	मदन मोहन		
4	सिया राम		
5	मनीष कुमार पटेल		
1	सुधा रानी (कला वर्ग)	B.A.I	
2	खुशबू निशा		तृतीय
3	बृजेश		
4	विजेन्द्र कुमार		
1	अमीन साहब (विज्ञान वर्ग)	M.Sc I	
2	आसिफ सैफी		तृतीय
3	शहाब खान		
4	मलीहा खान		
5	अना खान		

स्वरचित कविता पाठ

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	वैष्णवी गुप्ता	बी० एस-सी० द्वितीय	प्रथम
2	अंसार अली	बी० ए० द्वितीय	द्वितीय
3	गार्गी सिंह	बी० एड० द्वितीय	तृतीय

आशु भाषण प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	सुशील सहगल	बी० एड० द्वितीय	प्रथम
2	निगारिस नासिर	बी० एस-सी० तृतीय	द्वितीय
3	अंसार अली	बी० ए० द्वितीय	तृतीय

नारा लेखन प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	मारिया खान	बी०एस-सी० तृतीय	प्रथम
2	प्रशांत राघव	बी० एड० प्रथम	द्वितीय
3	शहवर सिद्दीकी	बी०एस-सी० प्रथम	तृतीय

कहानी लेखन प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	आरिफ सैफी	एम०एस-सी० प्रथम	प्रथम
2	सामया अली	बी०कॉम० तृतीय	द्वितीय
3	प्रशांत राघव	बी०एड० प्रथम	तृतीय

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान

कला संकाय			
1	असांर अली	बी० ए० द्वितीय	प्रथम
2	अफ्शा	बी० ए० द्वितीय	द्वितीय
3	सुधा सैनी	बी० ए० प्रथम	तृतीय

विज्ञान संकाय			
1	अभिषेक चौहान	बी० एस०सी० द्वितीय	प्रथम
2	लियाकत अली	एम० एस-सी० प्रथम	द्वितीय
3	रमिश बी	बी० एस-सी० प्रथम	तृतीय

वाणिज्य संकाय			
1	सौन्दर्या शर्मा	बी० कॉम० तृतीय	प्रथम
2	रूहम खान	बी० कॉम० द्वितीय	द्वितीय
3	माजिदा खान	बी० कॉम० प्रथम	तृतीय

शिक्षा संकाय			
1	जितेन्द्र यादव	बी० एड० द्वितीय	प्रथम
2	हर किशोर सैनी	बी० एड० प्रथम	द्वितीय
3	आलोक कुमार	बी० एड० प्रथम	तृतीय

कार्टून रचना प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	इलमा फिरोज	बी०एस-सी० द्वितीय	प्रथम
2	सनोवर	एम०एस-सी० द्वितीय	द्वितीय
3	शाहब खान	बी०एस-सी० तृतीय	तृतीय

रंगोली/अल्पना प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	मौसिम रज़ा	बी०ए० तृतीय	
2	योगेश	बी०ए० तृतीय	प्रथम
3	समरीन	बी०ए० तृतीय	
4	मिस्कीन	बी०ए० तृतीय	
1	फौजिया	बी०ए० द्वितीय	
2	गुलफशा बी	बी०ए० द्वितीय	द्वितीय
3	अर्शी	एम०ए०द्वितीय	
4	आयशा	बी०ए० द्वितीय	
1	धनजंय सिंह	बी०एस-सी० द्वितीय	
2	मौ० कैफ	बी०एस-सी० द्वितीय	तृतीय
3	मुस्कान खान	बी०एस-सी० प्रथम	
4	मरियम खान	बी०एस-सी० प्रथम	

मेंहदी रचना प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	महक सिराजुद्दीन	एम०ए०(उर्दू) प्रथम	प्रथम
2	सुहानी सोनालकर	बी०एस-सी० प्रथम	द्वितीय
3	इलमा	बी०एस-सी० प्रथम	तृतीय

पुष्प सज्जा प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
	Orchid		
1	मुस्कान खान	बी०एस-सी० प्रथम	
2	मौ कैफ	बी०एस-सी० द्वितीय	प्रथम
3	संयम अग्रवाल	बी०एस-सी० द्वितीय	
	Dahlia		
1	मंतशा	बी० कॉम प्रथम	
2	तरकिया कौसर	बी० कॉम प्रथम	द्वितीय
3	समा शकील	बी० कॉम प्रथम	
	Marigold		
1	नूरअफ्शा	एम०ए० द्वितीय	
2	आसिया कामिल	एम०ए० प्रथम	तृतीय
3	शाहरूख खान	एम०ए० द्वितीय	

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	अमीन साहब	बी०एस-सी० तृतीय	प्रथम
2	आसिफ सैफी	एम०एस-सी० प्रथम	द्वितीय
3	योगेश	बी०ए० तृतीय	तृतीय

एकल गायन प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	आसिफ सैफी	एम०एस-सी० प्रथम	प्रथम
2	अब्दुल मन्नान	एम०एस-ए० प्रथम	द्वितीय
3	मंजू	बी०एस-सी० प्रथम	तृतीय

नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता

क्र.स.	संकाय का नाम	प्रतिभागी	स्थान
1	बी०एड० संकाय	8	प्रथम
2	विज्ञान संकाय	8	द्वितीय
3	वाणिज्य संकाय	8	तृतीय
4	कला संकाय	8	सांत्वना

संस्मरण लेखन प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	अंकित पाठक	बी०एड० प्रथम	प्रथम
2	अमीन साहब	बी०एस-सी० तृतीय	द्वितीय
3	योगेश	बी०ए० तृतीय	तृतीय

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	कु० सनोवर	एम०एस-सी०द्वितीय	प्रथम
2	प्रशांत	बी०एड० प्रथम	द्वितीय
3	मोजिला खान	बी०कॉम० द्वितीय	तृतीय

कहानी लेखन प्रतियोगिता

क्र.स.	प्रतिभागी का नाम	कक्षा	स्थान
1	आरिफ सैफी	एम०एस-सी०द्वितीय	प्रथम
2	सामया अली	बी० कॉम० प्रथम	द्वितीय
3	प्रशान्त राघव	बी० एड० द्वितीय	तृतीय

दयालु चेहरा सदैव सुंदर होता है। - बेली

परिषदीय गतिविधियाँ (प्रतियोगिताएँ)

हिन्दी विभागीय परिषद्

1. स्नातक स्तर प्रतियोगिता -

निबन्ध प्रतियोगिता -

1.	वृजेश कुमार S/o रामवृक्ष	बी.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	महक फातिमा D/o रईस अहमद	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3.	कामरान अहमद	बी.ए. प्रथम वर्ष	तृतीय

2. परास्नातक स्तर प्रतियोगिता -

निबन्ध प्रतियोगिता -

1.	कु. रूबी श्री D/o राधे	एम.ए. प्रथम वर्ष	प्रथम
2.	कु. सबीना D/o मों पूनुस	एम.ए. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3.	कु. निशा बी D/o सहभुद्दीन	एम.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

English Department Association 2019-20

Winners name in easy competition at

At U.G. Level -	Ist -	Sudha Saini	B.A. I
	IInd -	Nida	B.A. II
	IIIrd -	Samreen	B.A. III
At P.G. Level	Ist -	Samreen	M.A. II
	IInd -	Vishwas Saxena	M.A. I
	IIIrd -	Rubeena Bi	M.A. II

Winners of extempore competition

At U.G. Level -	Ist -	Sudha Saini	B.A. I
	IInd -	Maryam	B.A. I
	IIIrd -	Anju	B.A. II
At P.G. Level	Ist -	Rajesh Prajapati	M.A. I
	IInd -	Umaima	M.A. I
	IIIrd -	Waqar Mh. Khan	M.A. II

उर्दू विभागीय परिषद्

गजल सराई प्रतियोगिता

1.	निशरा बी	-	B.A. III	-	प्रथम
2.	निदा ज़हरा	-	M.A. II	-	द्वितीय
3.	इकरा बी	-	M.A. II	-	तृतीय

मजमून नवीसी प्रतियोगिता

1.	मो. महफूज	-	M.A. II	-	प्रथम
2.	कनीज फात्मा	-	B.A. III	-	द्वितीय
3.	समरनि फात्मा	-	B.A. III	-	तृतीय

राजनीति विज्ञान विभागीय परिषद्

- राजनीतिशास्त्र परिषद के तत्वधान में दिनांक 10.12.2019 को निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें 31 छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता का विषय था - भारतीय नागरिकों के मौलिक कर्तव्य।
- परिषद के तत्वधान में 16.12.2019 को " राष्ट्रीय एकता एवं मौलिक कर्तव्य " विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
- विभाग के एम.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र रंजीत कुमार पुत्र श्री परशुराम सिंह की उत्तर प्रदेश परिचालन विभाग में नौकरी लगी।

इतिहास विभागीय परिषद्

इतिहास परिषद द्वारा स्नातक स्तर पर स्वंतत्रता संग्राम में महिला क्रांतिकारियों की भूमिका विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गयी जिसका परिणाम इस प्रकार रहा -

अंसार अली	बी.ए. द्वितीय	प्रथम
ब्रजेश कुमार	बी.ए. प्रथम	द्वितीय
महजवी	बी.ए. तृतीय	तृतीय

अर्थशास्त्र विभागीय परिषद्

वर्तमान सत्र 2019-20 में विभागीय परिषद् के तत्वाधान में " भारतीय अर्थव्यवस्था और आर्थिक मन्दी " विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया -

स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राएं

1. अमित दिवाकर S/o श्री राम सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम स्थान
2. विकास S/o श्री वीर सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम स्थान
3. गुलअफशा बी D/o श्री मोहम्मद इल्यास	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय स्थान
4. फौजिया D/o मो. इल्यास	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय स्थान
5. अफशा	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान
6. महक फात्मा D/o श्री रईस अहमद	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान

1. **चार्ट प्रतियोगिता** -

विषय - 1. भारत में जनसंख्या वृद्धि का प्रदर्शन
2. आर्थिक विकास दर पंचवर्षीय योजना
3. भारत में वृद्धि उपज

स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राएं

1. अमित दिवाकर S/o श्री राम सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम स्थान
2. विकास S/o श्री वीर सिंह	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम स्थान
3. फौजिया D/o मो. इल्यास	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय स्थान
4. गुलअफशा बी D/o श्री मोहम्मद इल्यास	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान
5. महक फात्मा D/o श्री रईस अहमद	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय स्थान

भूगोल विभागीय परिषद्

1. भूगोल विभागीय परिषद की मॉडल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर नसीम अली (एम.ए. प्रथम वर्ष), द्वितीय स्थान पर रूपाली राय (एम.ए. द्वितीय वर्ष) तथा तृतीय स्थान पर आसिया कामिल (एम.ए. प्रथम वर्ष) विजयी रहीं।
2. भूगोल विभाग का शैक्षिणिक भौगोलिक शिविर दिनांक 16.01.2020 से 21 जनवरी 2020 तक देहरादून, मंसूरी एवं ऋषिकेश स्थानों पर आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत छात्र/छात्राओं ने भ्रमण स्थलों की प्राकृतिक स्थिति, जलवायु, उच्चावच, अपवाह प्रणाली खनिज स्थल, चट्टानी संरचना एवं जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया।

वाणिज्य संकाय परिषद्

विषय - भारत में जीएसटी के प्रभाव

स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राएं

निबन्ध प्रतियोगिता

1	कु. तरफिया कौसर	प्रथम
2	कु. सादिया मसूद	द्वितीय
3	कु. सुबुक सलीम	तृतीय
4	कु. मन्तशा	तृतीय

चार्ट प्रतियोगिता

विषय - भारतीय बैकिंग व्यवस्था

स्थान प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राएं

1	कु. मन्तशा	प्रथम
2	कु. तरफिया कौसर	द्वितीय
3	कु. सुबुक सलीम	तृतीय

मनोविज्ञान विभागीय परिषद् 2019-2020

मनोविज्ञान विभागीय परिषद् के तत्वाधान में वर्ष 2019-20 में निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसके परिणाम निम्न है।

चार्ट प्रतियोगिता		दिनांक 05.11.19	
1. रूमायशा	-	M.A. I	प्रथम
2. महरीन मंसूर	-	M.A. I	द्वितीय
3. समरा	-	B.A. II	द्वितीय
4. महक नाज	-	M.A. I	तृतीय
5. इकरा नवाब	-	B.A. II	तृतीय

निबन्ध प्रतियोगिता		दिनांक 25.11.19	
1. महरीन मंसूर	-	M.A. I	प्रथम
2. रूगायशा	-	M.A. I	द्वितीय
3. महक नाज	-	M.A. I	तृतीय

जन्तु विज्ञान विभागीय परिषद्

जन्तु विज्ञान विभागीय परिषद के तत्वाधान में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी। विजेताओं के नाम निम्नवत है–

1- Chart Competition

B.Sc. I -	Muskan Khan	I
	Anamta Bi	II
	Tufail Ahmad	III
B.Sc. II -	Ilma Firoz	I
	Maryam Bi	II
	Ilmas Ameer	III
B.Sc. III -	Shahab Khan	I
	Mohd. Noor	II
	Mehak Jahan	III

2- Model Competition

B.Sc. II -	Warda Saeed	I
	Abhishek Chauhan	II
B.Sc. III -	Uma Yadav	I
	Shazia Bi	II
	Rufa Khan	III

3- Extempore Competition

B.Sc. II	Ilma Firdaus	I
B.Sc. I	Arbaaz Raza Khan	II
B.Sc. III	Sidra	III
B.Sc. III	Uma Yadav	Consolation

4- Essay Competition

B.Sc. I -	Muskan Rai	I
	Zainab Danish	II
	Sanjay Singh	III

B.Sc. II -	Sidra Khan	I
	Ilmas Ameer	II
	Maryam Bi	III
B.Sc. III -	Maleeha Khan	I
	Umme Habiba	II
	Tayyaba Mujaddadi	III

5- Seminar

M.Sc. I -	Fahmeena	I
	Asif Saifi	II
	Taniya Seekdhar	III
M.Sc. II -	Aman Moin Khan	I
	Asma Hasan	II

Physics Department Association
Session 2019-20

The Physics Association held the following competitions and prize distribution list is as following:

Essay Competition :

AAYUSHI RASTOGI	M.Sc. (Prev.)	First Prize
FAIZYAB	B.Sc. Ist	Second Prize
SHAN ILAHI	M.Sc. (Prev.)	Third Prize

Chart Competition :

SEHJAAD HUSSAIN	M.Sc. (Prev.)	First Prize
AAYUSHI RASTOGI	M.Sc. (Prev.)	Second Prize
PRANAV AGARWAL	B.Sc. IIIrd	Third Prize
MUSKAN SAXENA	B.Sc. IIIrd	Third Prize

गणित परिषद

सत्र 2019-20

1. चार्ट प्रतियोगिता

1. नूर बी	एम.एस.सी. द्वितीय वर्ष	प्रथम
2. अल्का मीना	एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3. सानिया	एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	तृतीय

2. निबन्ध प्रतियोगिता

1. अदीबा	एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	प्रथम
2. नगमा	एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	द्वितीय
3. शिफा सुहेल	एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	द्वितीय
4. मौ. जिशाल	बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष	तृतीय

3. सर्वश्रेष्ठ प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

1. शिफा सुहेल	एम.एस.सी. प्रथम वर्ष	प्रथम
2. रूची श्रीवास्तव	एम.एस.सी. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
3. सुमित कुमार	बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष	तृतीय

रसायन विज्ञान विभागीय- परिषद्

सत्र 2019 -20

1. क्विज प्रतियोगिता

B.Sc. I -

प्रथम स्थान -	मौ. साबिर	(Bio)
	नदीम आकिल	(Bio)
	उमेश कुमार	(Maths)
	निज़ामुददीन खुसरी	(Maths)
द्वितीय स्थान -	शुऐब रज़ा	(Maths)
	निरमेश	(Maths)
तृतीय स्थान -	कुरबान अली	(Bio)

B.Sc. II -

प्रथम स्थान -	आलिमा जमील	(Bio)
द्वितीय स्थान -	मरियम बी	(Bio)
	इलमास अमीर	(Bio)
	राहुल वर्मा	(Maths)
तृतीय स्थान -	इलमा फिरोज़	(Bio)
	करन भाटिया	(Maths)

B.Sc. III -

प्रथम स्थान -	सादिया नाज़	(Maths)
द्वितीय स्थान -	पारस त्यागी	(Maths)
	पीयूष शर्मा	(I.C)
तृतीय स्थान -	मौ. ताहिर	(Maths)

2. मॉडल प्रतियोगिता

प्रथम स्थान -	बरीरा शाह	B.Sc. III
	अफीफा खान	B.Sc. II
	इलमास अमीर	B.Sc. II
द्वितीय स्थान -	मरियम बी	B.Sc. II
	सिदरा खान	B.Sc. II
	इलमा फिरोज़	B.Sc. II
तृतीय स्थान -	सादिया नाज़	B.Sc. III

2. निबन्ध प्रतियोगिता

B.Sc. I -

प्रथम स्थान -	अलीमा तारिक
द्वितीय स्थान -	आयशा नूर
तृतीय स्थान -	अम्बरीन खान

B.Sc. II -

प्रथम स्थान -	शन्नो बी
द्वितीय स्थान -	इलमा फिरोज़
तृतीय स्थान -	सिमरा खान

B.Sc. III -

प्रथम स्थान -	सेवी आफरीन
द्वितीय स्थान -	रिफा खान
तृतीय स्थान -	उसमा

वनस्पति विज्ञान विभागीय परिषद् 2019-2020

Dr. (H.K.) Singh)
Head (Dept. of Botany)

वनस्पति विज्ञान विभाग में सत्र 2019-20 में विभागीय परिषद् के अर्न्तगत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें निम्न छात्र- छात्राओं ने पुरस्कार जीते -

1 Poster Competition

प्रथम -	Ilmas Ameer -	B.Sc. II
द्वितीय -	1 Maryam B -	B.Sc. II
	2 Sejal Gangwar -	M.Sc. I
तृतीय -	Huda Hamid - M.Sc. I	

2 Slogan Competition

प्रथम -	Muskan Khan -	B.Sc. I
द्वितीय -	Maryam Bi -	B.Sc. II
तृतीय -	Ilmas Ameer -	B.Sc. II

3 Quiz Competition M.Sc. Level

प्रथम -	Gulafsha Ansari -	M.Sc. I
द्वितीय -	Shireen Zubair -	M.Sc. I
तृतीय -	Nikhil Arora -	M.Sc. II

Quiz Competition B.Sc. Level

प्रथम -	Tooba -	B.Sc. II
द्वितीय-	Ambreen Khan -	B.Sc. I
तृतीय -	1. Ana Khan -	B.Sc. III
	2. Umme Habiba Mujaddai -	B.Sc. III

4 Seminar Presentation (PPT) M.Sc. Level

प्रथम -	Gulafsha Ansari -	M.Sc. I
द्वितीय -	Nikhil Arora -	M.Sc. II
तृतीय -	Uzma Parveen -	M.Sc. I

B.Sc. Level

प्रथम -	Ana Khan -	B.Sc. III
द्वितीय-	Ameen Sahab -	B.Sc. III
तृतीय -	Ambreen Khan -	B.Sc. I

बी०एड० संकाय- परिषदीय प्रतियोगिताएं

विभागीय परिषद् कार्यक्रम-

विभाग में गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी विभागीय परिषद् कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया-

परिणाम

गायन प्रतियोगिता:-

प्रथम -	गार्गी सिंह	-	बी०एड० द्वितीय
द्वितीय -	रूवि खान	-	बी०एड० द्वितीय
तृतीय -	हरीराम यादव	-	बी०एड० प्रथम

नाटक प्रतियोगिता का परिणाम :-

बी०एड० प्रथम - हरीराम, अंकित पाठक, मनीष पटेल, संजय प्रसाद, आलोक, मानवेन्द्र सिंह।

टी० एल० एम० प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम -	किशन सैनी	-	बी०एड० प्रथम
द्वितीय -	प्रत्योष शर्मा	-	बी०एड० द्वितीय
तृतीय -	सोनू गुप्ता	-	बी०एड० प्रथम

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम -	गार्गी सिंह	-	बी०एड० द्वितीय
द्वितीय -	ज्योति कुमारी	-	बी०एड० द्वितीय
तृतीय -	विपिन कुमार	-	बी०एड० प्रथम

भाषण प्रतियोगिता का विषय : सड़क-परिवहन एवं सुरक्षा

जनपद स्तर (दिनांक : 02-12-2019) स्थानः दयावती मोदी एकडमी, रामपुर

छात्र का नाम	कक्षा	पुरस्कार	धनराशि
सुशील सहगल	बी०एड० द्वितीय	प्रथम	21000/-
गौरव मिश्रा	बी०एड० प्रथम	तृतीय	7000/-

मण्डल स्तर (दिनांक : (19-12-2019) स्थानः एम. आई. टी., मुरादाबाद

छात्र का नाम	कक्षा	पुरस्कार	धनराशि
गौरव मिश्रा	बी०एड० प्रथम	तृतीय	11000/-
सुशील सहगल	बी०एड० द्वितीय	सांत्वना	NIL

प्राध्यापकों की अकादमिक उपलब्धियाँ - 2019 -20

हिन्दी विभाग

डॉ0 अरुण कुमार (असि0 प्रोफेसर)

1- पुस्तक- " सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत " : सरहपा और कबीर, 2020 ई० सन्

2- शोध पत्र-

1- " कृष्ण काव्य में सौंदर्य बोध " - पेरियाडिक, रिसर्च, कानपुर, वॉल्यूम-7, इस्यू-3, 2019 ई०।

2- " बच्चन के काव्य में प्रतीक विधान " - रिमार्किंग एन एनालाइजेशन, कानपुर, वॉल्यूम 3, इस्यू-11, 2019 ई०

3- " रामचरितमानस में सौंदर्य विधान "- श्रृंखला एक शोध पर पत्रिका, कानपुर 2019 वॉल्यम इस्यू-7

4- " आधुनिक कहानियों में दलित चेतना के स्वर "- रिमार्किंग एन एनालाइजेशन, कानपुर, वॉल्यूम 3, इस्यू-11, 2019 ई०।

3- चुनौती उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली 2019।

4- शॉर्ट टर्म कोर्स, विषय- रिसर्च मैथडॉलोजी, एच०आर०डी०सी०लखनऊ, 20 से 26 सितंबर 2019।

5- अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में ' मध्यकालीन कवयित्री सहजोबाई का हिन्दी साहित्य में योगदान' विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत। 10-11 अक्टूबर 2019

6- राष्ट्रीय संगोष्ठी, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर विषय " उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा " में सहभागिता दिनांक 09.02.2020

7. राष्ट्रीय संगोष्ठी, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर विषय " भक्तिकालीन साहित्य में मानवीय मूल्य " विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत।

8. आकाशवाणी रेडियो रामपुर द्वारा दिनांक 9.3.2020 को ' रामपुर शहर का ऐतिहासिक परिचय' विषय पर वार्ता प्रसारित।

डॉ० ज़ेबी नाज़ (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)

1. राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा दिनांक : 19 व 20 जनवरी, 2019 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ' हायर एजूकेशन इन प्रजेन्ट कॉन्टेक्सट: चैलेन्जेस एण्ड प्रोस्पेक्ट्स ' तथा ' उ०प्र० राजकीय महाविद्यालय अकादमिक सोसाइटी के 21 वें अधिवेशन' में सहभागिता।
2. राजकीय पी० जी० कॉलेज, बिलासपुर, रामपुर, द्वारा दिनांक: 22 सितंबर 2019 को ' चैलेन्जस टू इकोसिस्टम एण्ड एनवायरमेन्ट टूवर्ड्स सस्टेनेबल डेवेलपमेन्ट ' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में सहभागिता।
3. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
4. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23

फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० ' महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता एवं ' हिन्दी की सन्त काव्यधारा में अभिव्यक्त मानवीय मूल्य का तात्विक विश्लेषण ' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत ।

5. 'उ० प्र० राजकीय महाविद्यालय अकादमिक सोसाइटी के 22 वे अधिवेशन' दिनांक: 23 फरवरी, 2020 को राजकीय स्ना० महाविद्यालय, सम्भल में सहभागिता तथा ' शिक्षा, शान्ति एवं सदभाव ' शीर्षक से शोध पत्र प्रस्तुत।
6, 'राजभाषा हिन्दी का स्वरूप एवं स्थिति: एक सिंहावलोकन' शीर्षक लेख राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर की पत्रिका ज्ञान ज्योति संयुक्तांक में प्रकाशित।
7. आकाशवाणी, रामपुर से विभिन्न साहित्यिक व सामाजिक महत्व के विषयों पर वार्ताएं प्रसारित।
8. उ०प्र०राजकीय महाविद्यालय अकादमिक सोसाइटी की आजीवन सदस्य।
9. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय मानव संसाधन विकास केन्द्र द्वारा वर्ष 2019 में आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम में सहभागिता।

डॉ० राजीव पाल (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22–23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० ' महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

DEPARTMENT OF ENGLISH

Dr. Vineeta Singh - Associate Prof.

1. Paper presented in an international seminar on the topic 'Walt whitman as Demoeratic Poet' in Govt P.G. College, Bilaspur, Rampur on Dated 22 Sept. 2019.
2. Paper presented entitled 'Human Values and Environment Conservation' in seminar organised by G.R.P.G, Rampur on the topic of ' Human Values and Professional Ethics in Education' dated on 22-23 Feb 2020.
3. Life member of U.P. Govt. Colleges Academic society, Allahabad.

Dr. Renu - Asst. Prof.

1. Research Paper titled 'Shelley & Yeats : A Comparative Study' Published in the journal 'Reminations' in the Year Oct. 2019 with ISSN No. 2229-6751.
2. Research Paper titled 'Use of folk element in Girish karnard Naga Mandal' Ruminations' in the year Oct. 2019 with ISSn No. 2229.9751
3. Paper presented in an international seminar in the topic 'challanges. To ecosystem & environment in Thomas Hardly's Poetry' in Govt. P.G College,

Bilaspur, Rampur, U.P. on dated 22 sep. 2019.

4. Paper presented in the National seminar on the topic education and employment in India' in Mahamaya Rajkiya Mahavidyalya Dec.2019.

Dr. Reshma Parveen - Asst. Prof.

1. Paper presented in an international seminar on the topic 'Treatment of Nature in Robert Frost 'Poetry dated on 22nd Sep. 2019.
2. Refresher course dated on A.M.U. Aligarh, U.P.
3. Presented Paper in the national seminar on the topic. Need to teach life-Skill in Modern education' in Mahamaya Rajkiya Mahavidyalya, Sherkot, Bijnor, U.P.

उर्दू विभाग

डॉ० सै० मौ० अरशद रिज़वी (एसो० प्रोफेसर)

1. ' राजभाषा ' पत्रिका रज़ा लाइब्रेरी द्वारा- " गाधी जी की कर्म-प्रधानता एवं वैचारिक दृष्टिकोण " विषय पर लेख प्रकाशित।
2. राजभाषा पत्रिका में " ही दो गाँधी नामे " विषय पर दूसरा लेख प्रकाशित- गाँधी विशेषांक राजभाषा पत्रिका।
3. दिनांक 08.02.2020 को एम० जी० एम० कॉलेज सम्भल में "उर्दू मरसिए की जमालियात " विषय पर शोध पत्र, प्रस्तुत किया गया " राष्ट्रीय सेमीनार में सेमीनार की अध्यक्षता की गई।"
4. राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में " उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा "। विषय पर राष्ट्रीय सेमीनार का आंयोजन मेरे द्वारा किया गया तथा शोध पत्र प्रस्तुत किया गया।

डॉ० जहाँगीर अहमद खान (असि० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना0 महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।
3. 'ताबिराते अदब' किताब का प्रकाशन।

भूगोल विभाग

डॉ० अजय विक्रम सिंह (असि० प्रोफेसर)

1. डॉ० अजय विक्रम सिंह ने दिनांक 02-12-19 से 15-12-19 तक दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (मध्य प्रदेश) में भूगोल विषय में रिफ्रेशर पूर्ण किया।
2. UPPCS 2018 की प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण कर उ.प्र. लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षा 2018 में सम्मिलित हुए।

3. 'उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
4. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व ' विषय पर दिनांक 22–23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० ' महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

इतिहास विभाग

डॉ० वी. के. राय (असि० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व ' विषय पर दिनांक 22–23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

मनोविज्ञान विभाग

डॉ० अजीता रानी (एसो० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व ' विषय पर दिनांक 22–23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

डॉ० मीनाक्षी गुप्ता (एसो० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व ' विषय पर दिनांक 22–23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ० मौ. नासिर (असि० प्रोफेसर)

1. शोध पत्र आसियान भारत सम्बन्ध : एशिया का पुनर्मिलन विषय पर समाज विज्ञान शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

2. 2018 की पी.सी.एस. प्रारम्भिक परीक्षा पास करके मुख्य परीक्षा में अक्टूबर 2019 में सम्मिलित हुए।
3. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना0 महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
4. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ० दीपा अग्रवाल (एसो० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

डॉ0 रामकिशोर सागर (एसो0 प्रोफेसर)

1. ' पर्यावरण संरक्षण में सौर ऊर्जा का योगदान ' INTER NATIONAL SEMINAR ON CHALLENGES TO ECOSYSTEM & ENVIRONMENT TOWARDS SUSTAINABLE DEVELOPMENT' विषय पर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर, रामपुर में शोध पत्र प्रस्तुत किया।
2. " प्रारूप नई शिक्षा नीति- 2019: एक विमर्श " विचार गोष्ठी का आयोजन राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के तत्वाधान में किया गया जिसमें सक्रिय सहभागिता की। दिनांक 11 जून 2019।
3. " उर्दू भाषा एवं साहित्य की उन्नति में गैर मुस्लिम रचनाकारो का बुनियादी किरदार: रूहेलखण्ड के विशेष सन्दर्भ में "। 'उर्दु अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर आयोजित सेमीनार, राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर में शोध पत्र प्रस्तुत। दिनांक 9 फरवरी 2020।
4. " कौशल विकास और उद्यमिता: आर्थिक विकास और रोजगार के वाहन " वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा: चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं, उत्तर प्रदेश राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसायटी, उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश सरोर, ISBN NO 978-81 937071-6-6 दिनांक 19-20, पृ0सं0 104-105
5. " कौशल विकास और उद्यमिता: आर्थिक विकास और रोजगार के वाहक,"
   "SKILL DEVELOPMENT IN INDIA: CHALLENGE'S AND OPPORTUNITIES', DEPARTMENT OF HUMANITIES (ECONOMIC'S) FACULTY OF ENGINEERING AND TECHNOLOGY M.J.P. ROHILKHAND UNIVERSITY BAREILLY, 4-5 फरवरी 2019, पृ0 सं0- 63-64
6. " भारत के आर्थिक विकास में कौशल विकास एवं उद्यमिता की भूमिका, " भारत में कौशल विकास:

चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं, मानविकी विभाग (अर्थशास्त्र) महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली, 4-5 फरवरी 2019 पृ० सं० -69

आकाशवाणी रामपुर से वार्ताओं का प्रसारण:-

1. कन्याओं के भविष्य हेतु महत्वाकांक्षी योजनाएं, दिनांक 25.8.2019
2. वर्तमान अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी की चुनौती, दिनांक 25.9.2019

व्याख्यान:-

(1) बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का समाज को योगदान, तहसील फरीदपुर, बरेली, दिनांक 14 अप्रैल 2019

(2) बजट, वस्तु एवं सेवाकर आर्थिक मंदी, बेरोजगार, गरीबी उन्मूलन आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान, दिनांक 25 नवम्बर 2019 से राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर 28 नवम्बर - 2019 तक

आजीवन सदस्य:-

(1) राजकीय महाविद्यालय एकेडेमिक सोसायटी, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार उत्तराखण्ड एसोसिएशन।

(2) उत्तर प्रदेश सरकार उत्तराखण्ड एसोसिएशन।

(3) भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश (पंजीकृत)।

डॉ० ललित कुमार (असि० प्रोफेसर)

1. 'उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. 'शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्त्व' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।

Dr. Monika Khanna (Asst. Prof.)

Refresher Course

1. Participated in Refresher Course orgaized during 27 August 2019 to 09 Sep. 2019 held at HRDC, Kumaun university, Nainital (UK) and obtained 'A' grade.
2. A research paper titled " changing trends of the Banking Industry" has Published in Printing Area Research Journal (Social and life sciences) Volume -XXVIII -III English edition year -14 (June-2019)
3. Attended a Vichar Goshti " held on 11 June 2019 organized by Govt Raza P.G. College.
4. Attended a International seminar on "Challenges to Ecosystem and Environment Towards sustainable Development" held on 22nd Sep, 2019 organized by Govt. P.G. College Bilaspur, Rampur and Paryavaran Mitra Samiti.

शिक्षक-शिक्षा विभाग (बी०एड०)

Dr. Pravesh Kumar, HOD &Asst. Professor

International Seminar :

1. Topic on challenges to Ecosystem & Environment Towards Sustainable Development" dated 22 sept, 2019 organized by Government P.G College, Bilaspur, Rampur & Paryavaron Mitra samiti presented Topic" Disaster Management & Awareness.
2. Topic on " Quality Education for social Inclusion and sustainable Development" dated 19-20 Dec, 2019 organized By Dept of Education University of Allahabad and under -SAP DRS- II Education Presented Topic" Education for girl-child "

National Seminar :

1. Topic on " youth in India : Education & Employment" dated 14-15 Dec. 2019 organised by Mahamaya Rajkiya Mahavidhalya, Sherkot (Bijnor) U.P Paper presented topic" व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता एवं रोजगार''
2. Topic on" Unrest Among Indian youth" dated 16-17 feb, 2019 organized By Shri Balaji Academy, Sambhal Road Moradabad in Association with IATE, Presented topic with Co-chairperson" Suicides Among youth "
3. Topic on " Human Values and professional Ethics in Education: Needs and Importance organized by Govt. Raza P.G College, Rampur sponsored Higher Education of U.P. Presented paper entitled " समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास से मानवता का अन्त: एक नजर "
4. Topic on " U.P Higher Education Academic Society Conference" organized by Govt. Degree College, Sambhal dated -23 Feb, 2020

Refresher Course

Topic on " Education, Physical Education & Psychology dated 17-30 Jan, 2020 by UGC HRDC sponsored at University of Lucknow.

Edited Chapter Book-:

1. Value Added Education : Need of the Hour " Editor Prof Dr. Y.K. Gupta Publisher Shiksha Prakashan, Jaipur Edited Chapter No. 10 Topic Role of values in Quality Teaching" ISBN No. 978-93-82138-12-9 Page to 61-67 year, 2019
2. " Emerging Trends and Issues in High Education Edited By Shaheen Fatima Khan Publisher ABS Books Delhi -110086 Edited Chapter No. 10 Topic ICT Enhanced Teacher Education : A Conduit for Globalization" ISBN No. 978 - 93 -87229 - 26 - 6 Page No. 114 -120 year 2020
3. " Pollution and population" Edited by Najan UI Rofi Publisher K.G Publications 27, Sona Enclave Modinagas (U.P.) Edited Chapter No. 10 Topic is Environment of Worsened by growing Urbanization (बढ़ते हुए शहरीकरण से बिगड़ता हुआ पर्यावरण) '' ISBN' No- 978 - 81-939741- 4 -8 Page -51-56 Edition, 2020

4. " Human Values and Professional Ethics" Edited by Dr. P.K Varshney and others Publishers, Ocean Publication Near Hamuman Temple, Chaha Saviyaan Miston Ganj. Rampur Editor chapter No. 54 Topic is " The Important ICT on Academic Achievement of physical Education Students: with a special Reference to their moral Developments" ISBN No. 978 - 81- 943559 - 8 - 4 Page - 364 -367. year 2020
5. " शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता " सम्पादक : डॉ०पी० के० वार्ष्णेय एवं अन्य पब्लिशर्स ओशन पब्लिकेशन निकट हनुमान मंदिर चाह सेवियान मिस्टंन गंज रामपुर, पाठ स०- 50 शीर्षक " समाज में नैतिक मूल्यों के ह्यस से मानवता का अन्त : एक नजर " आई.एस.बी़ एन. स०- 978 - 81 -943559 - 81 पेज स०- 353 -357 वर्ष 2020

Workshop:-

1. Workshop faculty Development Programme topic on Basic Molecular Techniques organized by New Era Research foundation Agra Sponsored by Biolink overseas Company Agra, Under Industries outreach Programme for Institution dated 10-16 June 2019

डॉ० प्रदीप कुमार (असि० प्रोफेसर)

1. 'उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

प्रो० दीपक शर्मा (असि० प्रोफेसर)

1. 'उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना0 महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सचित पद की भूमिका का निर्वहन किया।

डॉ० अरविन्द कुमार (असि० प्रोफेसर)

1. 'उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

प्रो० माणिक रस्तौगी (असि० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना0 महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता ।

प्रो० मौ० सै० अब्दुल वाहिद शाह (असि० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना0 महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजनों में सचिव की भूमिका का निर्वहन किया।

प्रो० सोमेन्द्र सिंह (असि० प्रोफेसर)

1. ' उर्दू अफसानवी अदब के फरोग में रूहेलखण्ड का हिस्सा ' विषय पर दिनांक: 09 फरवरी, 2019 को राजकीय रज़ा स्ना0 महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता।
2. ' शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता: आवश्यकता एवं महत्व ' विषय पर दिनांक 22-23 फरवरी, 2020 को राजकीय रज़ा स्ना० महाविद्यालय, रामपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सचित पद की भूमिका का निर्वहन किया।

DEPARTMENT OF MATHEMATICS

DR. SURENDRA KUMAR GAUTAM - Asst. Prof., HOD

1. Attended National Seminar on "Higher Education in present context: Challenges and prospects" held at Govt. Raza P.G. College, Rampur on 19-20 January 2019.
2. Attended National Seminar on " Need and Challenges of Intellectual Property Rights" hed at Hindu College, Moradabad on 30 September 2019.
3. Attended International Seminar on " Challenges to Ecosystem and Environment Towards Sustainable Development" held at Govt P.G. College, Bilaspur, Rampur on 22 September 2019.
4. Life Member of U.P. Govt. Colleges Academic Society, Allahabad.

DR. SHAILENDRA KUMAR - Asst. Prof.

1. Attended National Seminar on Higher Education in present context : Challenges and prospects held at Govt. Raza P.G. College, Rampur.
2. Attended International Semiar on challenges to ecosystem and environment towards sustainable development held at Govt. P.G. College, Bilaspur, Rampur on 22 Sep. 2019.
3. Life member of Indian science congress Association, Kolkata.
4. Life member of U.P. Govt, Colleges Academic Society, Allahabad.

DR. REKHA KUMARI - Asst. Prof.

1. Attended National Conference on "Youth in India: Education & Employment"; Mahamaya Rajkiya Mahavisthalaya, Sherkot; (Dec. 14-15, 2019)
2. Attended National Conference on " New Education Policy - 2019" organised by Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.), 11 June 2019.
3. Attended Annual Conference of Vijnana Parishad of India on "Modelling Optimization and Coputing for Technological and Sustainable Development(MOCTSD - 2019), 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR campus, Ghaziabad.
4. Attended National Conference on "Applications of Technical Terminology in Modelling Optimization & Computing in science and Technology,m 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR Campus, Ghaziabad(U.P)
5. Attended UGC Sponsored Refresher course in "Disater Management" 12 March to 02 April 2019 and obtained Grade 'A' in Aligarh Muslim University, Aligarh (U.P.)

DEPARTMENT OF COMMERCE

DR. VINAY SHARMA - Associate Prof.

1. Attended National Conference on "Youth in India: Education & Employment"; Mahamaya Rajkiya Mahavisthalaya, Sherkot; (Dec. 14-15, 2019)
2. Attended National Conference on a " New Education Policy - 2019" organised by Raza P.G. College, Rampur (U.P.), 11 June 2019.
3. Attended Annual Conference of Vijnana Parishad of India on "Modelling Optimization and Coputing for Technological and Sustainable Development(MOCTSD - 2019), 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR campus, Ghaziabad.
4. Attended National Conference on "Applications of Technical Terminology in Modelling Optimization & Computing in science and Technology,m 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR Campus, Ghaziabad(U.P)
5. Attended UGC Sponsored Refresher course in "Disater Management" 12 MArch to 02 April 2019 and obtained Grade 'A' in Aligarh Muslim Universaity, Aligarh(U.P.)

DR. ZUBAIR ANEES - Asst. Prof.

1. Attended National Conference on "Youth in India: Education & Employment"; Mahamaya Rajkiya Mahavisthalaya, Sherkot; (Dec. 14-15, 2019)
2. Attended National Conference on a " New Education Policy - 2019" organised by Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.), 11 June 2019.

3. Attended Annual Conference of Vijnana Parishad of India on "Modelling Optimization and Coputing for Technological and Sustainable Development(MOCTSD - 2019), 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR campus, Ghaziabad.
4. Attended National Conference on "Applications of Technical Terminology in Modelling Optimization & Computing in science and Technology,m 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR Campus, Ghaziabad(U.P)
5. Attended UGC Sponsored Refresher course in "Disater Management" 12 March to 02 April 2019 and obtained Grade 'A' in Aligarh Muslim University, Aligarh(U.P.)

DR. M.P.S. Yadav - Asst. Prof.

1. Attended National Conference on "Youth in India: Education & Employment"; Mahamaya Rajkiya Mahavisthalaya, Sherkot; (Dec. 14-15, 2019)
2. Attended National Conference on a " New Education Policy - 2019" organised by Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.), 11 June 2019.
3. Attended Annual Conference of Vijnana Parishad of India on "Modelling Optimization and Coputing for Technological and Sustainable Development(MOCTSD - 2019), 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR campus, Ghaziabad.
4. Attended National Conference on "Applications of Technical Terminology in Modelling Optimization & Computing in science and Technology, m 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR Campus, Ghaziabad(U.P)
5. Attended UGC Sponsored Refresher course in "Disater Management" 12 MArch to 02 April 2019 and obtained Grade 'A' in Aligarh Muslim Universaity, Aligarh (U.P.)

DR. Amit Agarwal - Asst. Prof.

1. Attended National Conference on "Youth in India: Education & Employment"; Mahamaya Rajkiya Mahavisthalaya, Sherkot; (Dec. 14-15, 2019)
2. Attended National Conference on a " New Education Policy - 2019" organised by Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.), 11 June 2019.
3. Attended Annual Conference of Vijnana Parishad of India on "Modelling Optimization and Coputing for Technological and Sustainable Development (MOCTSD - 2019), 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR campus, Ghaziabad.
4. Attended National Conference on "Applications of Technical Terminology in Modelling Optimization & Computing in science and Technology,m 26-28 April, 2019 in SRMIST, Delhi NCR Campus, Ghaziabad(U.P)

5. Attended UGC Sponsored Refresher course in "Disater Management" 12 March to 02 April 2019 and obtained Grade 'A' in Aligarh Muslim Universaity, Aligarh (U.P.)

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

Dr. Mohd Kamil Hussain - Asst Professor

Total impact factors of all published articles	: 120.75
Total no of citations	: 342 (Source: Google scholar, Pubfacts etc)
h-Index	: 8
i10 index	: 9

Research

1. Development of new efficient, cost-effective and environment friendly synthetic methodologies for the synthesis of biologically active heterocyclic molecules.
2. Development DNA ligase inbitors and selective estrogen receptor modulators for treatment and prevention of brest cancer.
3. Naturally Occuring Anti Cancer Agents : Extraction, Purification and Structure elucidation of Natural Anti cancer Agents.

Research Articles published in 2019-20 (International Journals)

1. Recent advances in the targeting of human DNA ligase I as a potential new strategy for cancer treatment. European Journal of Medicinal Chemistry 2019, 182, 111657, I.F. 4.83
2. Unmodified household coffee maker assisted extraction and purification of anti cancer agents from Dillenia Indica Fruits, Natural Product Research, 2019 https://doi.org/10.1080/14786419.2019.1608546.IF 1.8
3. Techniques for Extraction, Isolation, and Standardization of Bioactive Compounds from Mediterranean Cypress "Cuoressus sempervirens". A Review on Phytochemical and Pharmacological Properties, Current Traditional Medicine, 2019, 5, 278-297. (Review article).
4. Elucidation of pharmacokinetics of novel DNA ligase I inhibitor, S012-1332 in rats: Integration of in vivo findings; Journal of pharmaceutical and biomedical analysis, 2019, 162:205-214
.IF=2.7863uction and application. Care Practices, Publisher: Springer, ISBN, 978-981-13-7153-0

Book Chapters published in 2019-20 (International publishers)

1. Techniques for Extraction, Isolation, and Standardization of Bioactive Compounds from Medicinal Plants, 2019, Chapter 8 pp. 179-200, http://doi.org/10.1007/978-981-13-7205-6_8

2. Book Title: Natural Bio-active Compounds Sub Title: Volume 2: Chemistry Pharmacology and Health care Practices, Publisher: Springer ISBN: ISBN 978-981-13-7205-6(eBook)
3. Bioactive Compounds Isolated from Neem Tree and Their Application, 2019, Chapter17,pp 509-528, https://doi.org/10.1007/978-981-13-7154-7_17
4. Book Title: Natural Bio-active Compounds Sub Title: Volume I Production and application. Care Practices, Publisher: Springer, ISBN, 978-981-13-7153-0
5. Natural Copound from Genus Brassica and Their Therapeutic Activities, 2019, Chapter, 15 pp 477-491 http://doi.org/10.1007978-981-13-7154-7_15
6. Book Title: Natural Bio-active Compounds Sub Title: Volume I Productuion and application. Publisher: Springer, ISBN: 978-981-13-7153-0
7. Bioflavonoids as Promising Antiosteoporotic Agents, 2020, Chapter 23, Book Title: Plant-derived Bioactives Sub Title: Chemistry and Mode of Action ISBN: 978-981-12-2360-1
8. Chromenes: Phytomolecules with Immense Therapeutic Potentia, I2020, Chapter 8, Book Title: Plant-derived Bioactives Sub Title: Chemistry and Mode of Action ISBN : 978-981-15-2360-1

DEPARTMENT OF PHYSICS

DR. SEEMA TEOTIA - Asso. Prof., HOD

1. Appointed as Mentor, NAAC, by Uttar Pradesh, State Higher Education Council, Lucknow.
2. विचार गोष्ठी प्रारूप नई शिक्षा नीति -2019: एक विमर्श में 11 जून 2019 को राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर में सहभागिता।
3. Attended One day workshop on "Designing Digital Tool for Effective Assestment and Accrediataion of Education Institute" by IQAC, MJPRU Barielly organised by MJP Rohilkhand Unversity, Barielly, (Oct31, 2019)
4. Attended One day "Workshop cum Awareness Programme on NAAC" as Mentor by Uttar Pradesh State Higher Education Council, Lucknow and RHEO Barielly organised by KCMT Barielly, (Dec27, 2019).
5. Attended one day "Workshop on Training Program of Mentor for NAAC Accreditation Process"by Uttar Pradesh State Higher Education Council, Lucknow organised by Dr RML Law University Lucknow, (Jan22, 2019).
6. Attended one day National Seminar on " Problem and Solution for NAAC Process" as a Mentor orgainsed by RHEO Barielly and Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.) Jan24,2019).
7. Attended one day National Seminar on "Teaching Learning and Evolution as Per New Guidelines" organised by RGB Mahila Mahavidyalaya Bijnor (U.P.), (Feb,03,2020) and presented the Paper " A Preview On New NAAC Guidelines."
8. Attended one day National Seminar on "Human Values and Professional Ethics in Educatiob: Need and Importance" organised by Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.), (Feb. 22-23, 2020) and presented the paper.

DR. SUMAN LATA - Asst. Prof.

1. International Seminar on "Challenges to Ecosystem & Enviroment Toward Sustainable Development"; Govt. Raza P.G. College, Rampur (U.P.); (Sep 22, 2019)
2. National Seminar on "Need & Challenges of Intellectual Property Right"; Hindu (P.G.) College Moradabad (U.P.); (Sep. 30, 2019).
3. National Seminar on "Managerial & Enterpreneurial Interventions for Sustainable Development in India"; Veerangana Avantibai Govt. Degree College Mahavidhalaya, Sherkot (U.P.), (Dec.14-15, 2019)
4. National Seminar on " Youth in India: Education & Employment"; Mahamaya Rakiya Mahaviddhalaya, Sherkot (U.P.); (Nov, 20-21, 2019).
5. National Seminar on "Human Values and Professional Ethics in Education: Need & Importance". Govt. Raza P.G. College, Rampur (U..P.); Feb 22-23, 2020.
6. Attended a Short Term Course on "ICT Enable Learning": HRDC Kumaun Unversity, National, Uttarakhand; (Oct 10-16, 2019).
7. Attended a short Term Course on "Educational Technology": HRDC, University of Lucknow.:(Nov22-28, 2019)

DR. MUDIT SINGHAL - Asst. Prof.

1. International Seminar on "Challenges to Ecosystem & Environment Toward Sustainable Development": Govt. P.G. College Bilaspur, Rampur, (U.P.): (Sep 22, 2019)
2. National Seminar on "Youth in India: Education & Employment": Mahamaya Rakiya Mahavidhalaya, Sherkot(U.P.): (Dec. 14-15, 2019).
3. National Seminar on "Human Values and Professional Ethics in Education: Need & Importance". Got. Raza P.G. College, Rampur (U.P.): Feb 22-23, 2020

DR. RAJU - Asst. Prof.

1. International Seminar on "Challenges to Ecosystem & Environment Toward Sustainable Development": Govt. P.G. College Bilaspur, Rampur, (U.P.): (Sep 22, 2019)
2. National Seminar on "Youth in India: Education & Employment": Mahamaya Rakiya Mahavidhalaya, Sherkot (U.P.): (Dec. 14-15, 2019).
3. National Seminar on "Human Values and Professional Ethics in Education: Need & Importance". Got. Raza P.G. College, Rampur (U.P.): Feb 22-23, 2020
4. Establish the SWYAM NPTEL local xhapter in college, and nominate the single point of contract (SPOC).
5. Complete online refresher course on SWYAM NPTEL in solid State Physics.
Published a book Chapter "Thin Film Deposition by Vaccum Arc Technique" in

DR. BRAHM SINGH - Asst. Prof.

1. International Seminar on "Challenges to Ecosystem & Environment Toward Sustainable Development": Govt. P.G. College Bilaspur, Rampur, (U.P.): (Sep 22, 2019)
2. National Seminar on "Youth in India: Education & Employment": Mahamaya Rakiya Mahavidhalaya, Sherkot(U.P.): (Dec. 14-15, 2019).
3. National Seminar on "Human Values and Professional Ethics in Education: Need & Importance". Got. Raza P.G. College, Rampur (U.P.): Feb 22-23, 2020

DEPARTMENT OF ZOOLOGY

DR. JAGRITI MADAN DHINGRA - HOD & Asso. Prof.

1. International Seminar on "Towards sustainable women health : Decoding the menstruation tabes" Feb 01-02, 2019 at Maharaja Bijli Paso Govt PG College, Aashiyana, Lucknow.
2. International Seminar on "Challenges to ecosystem & enviroment towards sustainable Development", 22nd Sep 2019 at Govt PG College, Bilaspur, Rampur.
3. Invented Speaker at NAAC Workshop on 3ed Feb 2019 at Utkarsh College of Management Education, Barielly.

DR. BABY TABASSUM - Asst. Prof.

- Inspire Intership programme of DST organised at shri Ram Murti Smarak College of Engineering & Technology, Bareilly from 11.07.2019 to 15.07.2019.

Books Editted -

- R.Z. Sayyedd and B.Tabassum, Plant Growth Promoting Rhizo-bacteria for Sustainable Stress Management. Volume 2: Rhizo-bacteria in Biotic Stress Management, Springer ISBN 978-981-13-6985-8.

Chapters in Books -

- Robeena Sarah, Baby Tabassum, Nida Idrees and Mohd Zamil Hussain (2019). "Bioactive compounds Isolated from Neem Tree and Teir Application." Nature Bioactive Compounds Volume 1: Oroduction and Application, Springer Nature. ISBN 978-981-13-7153-0, ISBN 978-981-13-7154-7(eBook).
- Nida Idrees, Baby Tabassum, Nida Idrees and Mohd Zamil Hussain (2019). "Natural Compound from Genus Brassica and Thier therapeutic Activities." " Nature Bioactive Compounds Volume 1: Oroduction and Application, Springer Nature. ISBN 978-981-13-7153-0, ISBN 978-981-13-7154-7(eBook). https://doi.org/10.1007/978-981-13-7154-7

Papers in the Journals -

- Ram H, Jaipal N, Charan J, Kashyap P, Kumar S, Tripathi,Singh BP, Siddaiah CN, Hashem A, Tabassum B, Abd_Allah EF. (2020). Phytoconstituents of an ethanolic pod extract of Prosopis cineraria triggers the inhibition of HMG-CoA reductase and the regression of atherosclerotic plaque in hypercholesterolemic rebbits. Lipids in health and disease, 19 (1): DOI: 10.1186/s12944-020-1188-z
- Hashem A, Tabassum B, Abd_Allah EF(2020). Omics Approaches in Chickpea Fusarium Wilkt Disease Management. In:Singh B., Singh G., Kumar K., Nayak S., Srinivas N. (eds) Management of Fungal Pathogens in Pulses. Fungal Biology, Springer, Cham. DOI: https://doi.org/10.1007/978-3-030-35947-8-4
- Abd_Allah EF; Tabassum, B; alqarawi, AA; Alshahram Ts; Malik, JA; Hashem, A (2019). Physilogical makers mitigate drought stress ijin Panicam turgidum Forssk, by arbuscular mu=ycorrhizal fungi, Pakistan Journal of Botany, 51(6):2003-2011. DOI: 10.30848/PJB2019-6(12).
- Srinivas, C; Devi, DN; Murthy, KN; Mohan, CD; Lakshiheesha, TR; Singh, B; Kalagatur, NK; Niranjana, SR; Hashem, A; Alqarawi, AA; Tabassum, B; Abd_allah, EF; Naytak, C(2019). Furarium oxysporum f.sp. lycopersici agent of vasucular wilt disease of tomato: Biology to diversity-A review. SAudi Jounal of Biological Science, 26(7): 1315-1324. DOI: 10.1013/j.sjbs.2019.06.002.
- Noreen, I; Kjhhan, SM; Alsubeuie, MS; Ahmed, Z; Rahmath, NYR; Iqbal M; Alqarawi, AA; Tabassum. B; Abd_Allah, Ef (2019). Responmseof different plant species to pollution emitted from oil and gas plant with special reference to heavy metals accumlation. Pakistan Journal of Botany, 51(4):1231-1240. DOI 10.30848/PJB2019-4(39).
- Rahman, MM; Mostofa, MG; Rahman, MA; ISlam, MR; Keya, SS; Das Ak; Miah; Kawser, AQMR; Ahsan, SM;SM; Hashem, A; Tabassum;,B; Abd_Allah; EF; Trran, LSP (2019). Acetic acid: a Reports, 9: 15186, DOI: 10.11038/s41598-019-51178-w.
- Asif, A, Ansari, MYK; Hashem, A; Tabassum, B; Abd_Allah, Ahmad, A (2019). Proteome profiling of the mutagen- induced morphological and yield macro-mutant lines of Nigella sativa L.Plant-Basel, 8(9): 321. Dol: 10.3390/plants8090321
- Ali, MP; Kabir, MMM; Afrin, S; Nowrin, F; Haque, SS; Haque, MM; Hashem, A; Tabassum, B;
  Abd_Allah, EF; Pittendrigh, BR (2019). Increased temperature induces leaffolder outbreak in
  rice field. Journal of Applied Entomology, 143(8): 867-874. Dol: 10.1111/jen.12652.
- Hashem, A, Tabassum, B, Abd_Allah, EF (2019). Bacillus subtilis: A plant-growth promoting rhizobacterium that also impacts biotic stress. Saudi Journal of Biological Sciences, 26 (6):
  1291-1297. Dol: 10.1016/J.sjbs.2019.05.004.

- Sarah, R, Tabassum, B, Idrees, N, Hashem, A, Abd_Allah EF (2019). Bioaccumulation of heavy metals in Channa Punctatus (BloCh) in river Ramganga (UP), India. Saudi Journal of Biological Sciences, 26 (5): 979-984. DoI: 10.1016/J.sjbs.2019.02.009.
- Ram H, Jaipal N, Kumar P, Deka P, Kumar S, Kashyap P, Kumar S, Singh Bp, Alqarawi AA,
  Hashem A, Tabassum B, Abd Allah EF. (2019). Dual Inhibition of DPP-4 and cholinesterase
  enzymes by the phytoco- stituents of the ethanolic extract of Prosopis cineraria pods: Therapeutic implications for the treatment of diabetes-associated neurological impairments.
  Current Alzheimer Research, 16 (13): 1230-1244. DoI: 10.2174/1567205016666191203161509
- Hashem A, Alqarawi AA, Al-Hazzani AA, Egamberdieva D, Tabassum B, Abd_Allah EF (2019)
  Cadmium Stress Tolerance in Plants and Role of Beneficial Soil Microorganisms. In: Arora N..
  Kumar N. (eds) phyto and Rhizo Remediation. Microorganisms for Sustainability, vol 9. Springer,
  Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-32-9664-0 9.
- Hashem A, Alobeed RS, Alqarawi AA, Tabassum B, Abd_Allah EF (2019). Bacillus subtilis (BERA 71) as biologically based strategy to control Root-knot nematodes (Meloidogyne Javanica) in grapevine (vitis vinifera). International Conference on Plant & Soil Science (ICPSS-19). 27th February 2019 Manama. https: //allcoferencealert.net/eventdetails. php?id=908523
- Abd_Allah EF, Alqarawi AA, Hashem A, Tabassum B (2019). Arbuscular mycorrhizal Fungi improve tolerance in traditional medicinal plants under abiotic stress. Traditional Medicine Conference, October 17-18, 2019 I Dubai, UAE (file:///C:/User/Downloads/olctmc2019.pdf).
- Robeena Sarah Baby Tabassum, Nida Idrees, Abeer Hashem And Elsayed Fathi Abd_Allah "Bioaccumulation of heavy metals in Channa punctatus (Bloch) in river Ramganga (U.P.) India" Saudi Journal of Biological Science, ISSN 1319-562x, Volume-26, Issue 02 (2019).
- Nida Idrees Baby Tabassum And Robeena Sarah, "Psychological and Physical problems related to menstruation" . Interdisciplinary Multilingual refereed Journal. Special Issue (pp) 75-77. ISSN: 2319-9318.
- Iram Noreen Shujaul Mulk Khan, Alsubeie M.S. Zeeshan Ahamd, Inayat-ur-Rahman, MajidIqbarawi A.A. Baby Tabassum & Elsayed Fathi Abd_allah. "Response of different Plant Species to pollution emitted from oil and gas plant with special reference to Heavy Metals accumulation" Pak. j Bot., 51(4), DoI: http://dx.doi.org/10.30848/PJB2019-4(39)

- Abeer Hashem, Baby Tabassum, Elsayed Fathi Abd_allah, Bacillus subtilis: A Plant-growth promoting, rhizobacterium that also impact biotic stress. Saudi Journal of Biological Sciences, ISSN 1319-562x, Volume-26, Issue 02 May. 2019
- Elsayed Fathi Abd_allah, Baby Tabassum Abdulaziz A. Alqarawi, Thobayet Safar Alshahrani, Jahangir Ahmad Mailk and Abeer Hashem. " Physiological Markers Mitigate Drought Stress in Panicum Turgidum Forssk. By Arbuscular Mycorrhizal Fungi" Pak. j Bot., 51(6): 2003-2011, 2019. http://dx.doi.org/10.30848/PJB2019-6(12).

Paper Presented in Conferences-

- Sustainable Agriculture practice International conference on Challenges to Ecosystem & Environment Towards Sustainable Development. Organised by Government P.G. College, Bilaspur, Rampur & Paryavaran Mitra Samiti, 22 September,2019.
- Hashem A, Alobeed RS, Alqarawi AA, Tabassum B, Abd_Allah EF (2019). Signaling in response of table grape (Vitis vinifera L.) to arbuscular mycorrhizal fungi undser chromium stress. 9th food and Agriculture April 15-17 2019, New Delhi, India.
  http://www.unitedlightningvision.com/ events/foodagriculture2019/index.php
- Hashem A, Alqarawi AA, Tabassum B, Abd_Allah EF (2020). Biological control of Meloidogyne incognita in Lycopersicon esulentum by Paecilomyces lilacinus. International Conference: Ancient Wisdom, Civilzation Antiquities and the Present-Day World 31st Jan 2020 to 2nd Feb 2020, Gautam Buddha University, Greater Nodia. India.
  (http://www.gbu.ac.in/SOHSSProfile/Sohss_IntConf_AncientWis_22Nov19.pdf.
- Tabassum B, Abd_Allah EF, Sarah R, Bajaj P, Hashem A.(2020). Azadirachta indica(Neem): Indigenous source of healing since ancient times. International Conference: Ancient Wisdom, Civilization Antiquities and the Present-Day World 31st Jan 2020 to 2nd Feb 2020, Gautam Buddha University, Greater Nodia, India.
  (http://www.gbu.ac.in/SOHSSProfile/SoHSS_IntConf_AncientWis_22Nov19.pdf).

Ram Kumar - Asst. Prof.-

1. Ph.d.
2. Publication : (1) Morphometric description of nymphol inslary lahita gradis (Hemi: Hetropteva: Phyrhocoridar)
3. Referesher course (Dec. 16-28, 2019) from UGC-HRDC Kurvkshetra University, Kurvkshetra.

DR. PRIYA BAJAJ - Asst. Prof.

Paper Presented in Conferences-

1. Sustainable Agriculture practice International conference on Challenges to Ecosystem & Environment Towards Sustainable Development. Organised by Government P.G. College, Bilaspur, Rampur & Paryavaran Mitra Samiti, 22 September,2019.
2. Tabassum B, Abd_Allah EF, Sarah R, Bajaj P, Hashem A.(2020). Azadirachta indica (Neem): Indigenous source of healing since ancient times. International Conference: Ancient Wisdom, Civilization Antiquities and the Present-Day World 31st Jan 2020 to 2nd Feb 2020, Gautam Buddha University, Greater Nodia, India. (http://www.gbu.ac.in/SOHSSProfile/SoHSS_IntConf_AncientWis_22 Nov1 9. pdf).
3. Tabassum B, Abd_Allah EF, Sarah R, Bajaj P, Hashem A.(2020). Azadirachta indica (Neem): Indigenous source of healing since ancient times. International Conference: Ancient Wisdom, Civilization Antiquities and the Present-Day World 31st Jan 2020 to 2nd Feb 2020, Gautam Buddha University, Greater Nodia, India. (http://www.gbu.ac.in/SOHSSProfile/SoHSS_IntConf_AncientWis_ 22Nov19.pdf).
4. Tabassum B, Abd_Allah EF, Sarah R, Bajaj P, Hashem A.(2020). Bioactive compounds and theropeutic properties of Brassica compestris. International Conference: Ancient Wisdom, Civilization Antiquities and the Present-Day World 31st Jan 2020 to 2nd Feb 2020, Gautam Buddha University, Greater Nodia, India. (http://www.gbu.ac.in/SOHSSProfile/SoHSS_IntConf_AncientWis_ 22Nov19. pdf).

Dr. Nidhi Gupta - Asst. Prof.

1. National Seminar on "Convention of UP Govt. Colleges Academic Society", Jan 19-20 January Higher Education in present context : Challenges and Prospectues" & 21st convention of UP Govt. College Academic Society", 19-20 January 2019 at GRPGC, Rampur.
2. Paper "Population characteristics of an ischnoceran louse Companulotes bidentatus compare infesting blue rock pigeons of district Meerut(UP)"
3. International Seminar on "Towards sustainable Women health: Decoding the menstruation Taboo." Feb 01-02, 2019 at Maharaja Bijli Pasi Govt. PG College, Ashiyana, Lucknow.
4. Paper"Hygiene Knowledge and Practice among female".
5. International Seminar on "Challenges to Ecosystem & Environment towards.
6. Sustainable Development, 22nd Sep. 2019 at Govt. PG College, Bilaspur, Rampur.

7. Paper "In Vitro bionomics of an ischnoceran pieon louse (phythiraptera Insecta)".

PAPERS PUBLISHED IN 2019 :

1. Diagnostic characters of there nymphal instars and morphological features of adult collard-dove louse Columbicola bacillus (Phthiraptera: Insectea). Journal of Applied and Natural Science, 11(1):7-11, ISSN 0974-9411, 2231-5209(online).
2. Population characteristics of an ischnoceran louse Companuloies Bidentatus compare infesting Blue rock pigeons in District Meerut (UP). Ann. Entomol., 37(01)87-90.

Dept. of Botany

Dr. Hitendra Kumar Singh - Asst. Prof. & Head

1. Conferences/ Seminars Attended - 05 (Five)
2. Paper Presentation in Seminar - 05 (Five)
3. Membership 1. Life Member - Indian Botanical Society, Jaipur
   2. Life Member - Indian Science Congress, Kolkata
4. महाविद्यालय स्तर पर गठित विभिन्न महत्त्वपूर्ण समितियों में संयोजक, संहसयोजक व सदस्य के रूप में कार्य किया।

DR. PRATIBHA SRIVASTAVA - Asst. Prof.

1. Attended National Seminar on Higher Education in present context : Challenges and prospects held at Govt. Raza P.G. College, Rampur.
2. Attended International Semiar on challenges to ecosystem and environment towards sustainable development held at Govt. P.G. College, Bilaspur, Rampur on 22 Sep. 2019.
3. Life member of Indian science congress Association, Kolkata.
4. Life member of U.P. Govt, Colleges Academic Society, Prayagraj.

DR. DEEPMALA SINGH - Asst. Prof.

1. Refresher Course on Research Methodology 17 Aug 2019 to 31 Aug 2019.
2. Research Paper- Title : Allelochemical Stress, ROS and Plant Defense System Journal : International Journal of Biological Innovations Vol : 1(1) June, 2019 Pg : 42-43
3. Book Chapter : Title - Potential of Biomass as energy resources in sustainable Development. Book - Managerial & Entrepreneurial Interventions for sustainable Development on India. ISBN-978-93-89703-07-8
4. Paper presentation in International Seminar, 04-05, 2020 Title - Language and culture of Uttar Pradesh.

कार्यालय, प्राचार्य राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)
प्राचार्य : डॉ० पी० के० वार्ष्णेय
प्राध्यापक सूची (विभागवार)

1. हिन्दी विभाग
1. डॉ० अरुण कुमार
2. डॉ० जेबी नाज़
3. प्रो० श्री राजीव पाल

2. अंग्रेजी विभाग
1. डॉ० विनीता सिंह
2. डॉ० वी०के० चौधरी
3. डॉ० रेनू
4. डॉ० रेशमा परवीन

3. उर्दू विभाग
1. डॉ० सै० मौ० अरशद रिजवी
2. डॉ० जहाँगीर अहमद खाँ

4. संस्कृत विभाग
1. डॉ० कुसुम लता

5. फॉरसी विभाग
1. रिक्त

6. भूगोल विभाग
1. डॉ० अजय विक्रम सिंह

7. शारीरिक शिक्षा विभाग
1. डॉ० मुजाहिद अली

8. दर्शन शास्त्र विभाग
1. रिक्त

9. समाज शास्त्र विभाग
1. रिक्त

10. इतिहास विभाग
1. डॉ० वी० के० राय

11. मनोविज्ञान विभाग
1. डॉ० अजीता रानी
2. डॉ० मीनाक्षी गुप्ता

12. राजनीति विज्ञान विभाग
1. डॉ० मौ० नासिर

13. अर्थशास्त्र विभाग
1. डॉ० दीपा अग्रवाल
2. डॉ० राम किशोर सागर
3. डॉ० ललित कुमार
4. डॉ० मोनिका खन्ना

14. बी० एड० विभाग
1. डॉ० प्रवेश कुमार
2. डॉ० प्रदीप कुमार
3. प्रो० दीपक कुमार शर्मा
4. डॉ० अरविन्द कुमार
5. प्रो० माणिक रस्तोगी
6. प्रो० सै० अब्दुल वाहिद शाह
7. प्रो० सोमेन्द्र सिंह

15. गणित विभाग
1. डॉ० सुरेन्द्र कुमार गौतम
2. डॉ० शैलेन्द्र कुमार
3. डॉ० रेखा कुमारी

17. रसायन विज्ञान विभाग
1. डॉ० सहदेव
2. डॉ० एस०एस० यादव
3. डॉ० मौ० कामिल

16. वाणिज्य विभाग
1. डॉ० विनय कुमार शर्मा
2. डॉ० जुबैर अनीस
3. डॉ० अमित कुमार अग्रवाल
4. डॉ० महेन्द्र पाल सिंह यादव

18. भौतिक विज्ञान विभाग
1. डॉ० सीमा तेवतिया
2. डॉ० सुमनलता
3. डॉ० राजू
4. डॉ० मुदित सिंघल
5. डॉ० ब्रह्म सिंह

19. जन्तु विज्ञान विभाग
1. डॉ० जागृति धीगंड़ा
2. डॉ० सुरेन्द्र कुमार
3. डॉ० बेबी तबस्सुम
4. डॉ० प्रिया बजाज
5. डॉ० राम कुमार
6. डॉ० निधि गुप्ता

20. वनस्पति विज्ञान विभाग
1. डॉ० हितेन्द्र कुमार सिंह
2. डॉ० प्रतिभा श्रीवास्तव
3. डॉ० दीपमाला सिंह

राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)
शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की सूची

कार्यालय स्टाफ	
नाम	**पदनाम**
डॉ० (श्रीमती)रजनी बाला	वरिष्ठ सहायक/कार्यालय अधीक्षक
श्रीमती शहला नाज	वरिष्ठ सहायक
श्रीमती महजबी	कनिष्ठ सहायक
श्री राजकुमार	कनिष्ठ सहायक
श्री पीयूष कुमार	कनिष्ठ सहायक
कु० इन्दु वाला यादव	कनिष्ठ सहायक
श्री भोपाल सिंह	इलेक्ट्रिशियन

पुस्तकालय स्टाफ	
श्री श्याम सिंह	उप पुस्तकालयाध्यक्ष

वेकेशनल स्टाफ	
श्री सुरेन्द्र कुमार जौहरी	प्रयोग० सहा०-वनस्पति विज्ञान
श्री कौंसर जहाँ	स्टोर कीपर-रसा०वि०

चतुर्थ श्रेणी			
नाम	**पदनाम**	**नाम**	**पदनाम**
श्री राधेश्याम	दफ्तरी	श्री महेश पाल	परिचर
श्री सुधीर कुमार	परिचर	श्री अमित कुमार	परिचर
श्री अशोक कुमार	परिचर	श्री रमेश	परिचर
श्री तेजपाल सिंह	परिचर	श्री अम्मान शाकिर	परिचर
श्री अरविन्द कुमार	परिचर	श्रीमती अजीजा बानो	परिचारिका
श्री लाल सिंह	माली	श्रीमती निशा बी	परिचारिका
श्री विक्की सैनी	माली	श्री अशोक कुमार(द्वितीय)	एनीमल केचर
श्री शाहिद खां	चौकीदार	श्री कमल सिंह	स्वच्छकार
श्री जमीर अहमद	चौकीदार	श्री हरिचन्द्र	स्वच्छकार
श्री विनीत कुमार	पुस्तकालय परिचर	श्री जय सिंह	स्वच्छकार
श्री भागमल	परिचर		

हिन्दी - खण्ड

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी

डॉ0 ज़ेबी नाज़
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)

वर्तमान युग सूचना एवं प्रौद्योगिक का युग है। इस युग में जनसंचार के अनेक माध्यम प्रचार व प्रसार के लिए संचालित हैं। शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से देखा जाए तो जनसंचार शब्द दो शब्दों-जन अर्थात् जनता तथा संचार अर्थात किसी बात को उन तक पहुँचाना के योग से बना है। जनसंचार के लिए अंग्रेजी में Mass communication शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका अर्थ है - व्यापक मात्रा या विस्तृत बिखरे हुए लोगों तक संचार माध्यम द्वारा सूचना या सन्देश पहुँचाना। व्यापक अर्थ में यदि कहें तो जनसंचार वह प्रक्रिया है, जिसमें संचार माध्यमों के द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावों तथा अनुभवों को अनेक लोगों तक पहुँचाता है।

संचार प्रक्रिया को पूरा करने में संचार माध्यमों की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है। घर बैठे हम देश-विदेश की सूचनाएँ अलग-अलग उपकरणों द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। इन संचार यन्त्रों को संचार माध्यम कहा जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए मीडिया शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है- विचारों का आदान-प्रदान करने का साधन। संचार माध्यम अथवा मीडिया को मौटे तौर पर चार प्रमुख वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

मीडिया प्रथम वर्ग का है - परम्परागत जनसंचार माध्यम अर्थात, Traditional Media, गीत, कहानी, कीर्तन, मूर्तिकला, शिलालेख, तमाशे एवं नौटंकी आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

मीडिया का दूसरा वर्ग है- मुद्रित जनसंचार माध्यम यानी Print Media, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, पोस्टर और पैम्पलेट आदि इसके अन्तर्गत आते हैं।

मीडिया का तीसरा वर्ग प्रमुख रूप है- इलैक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम। इसमें रेडियो, ऑडियो कैसेट, टेलीविजन व वीडियो कैसेट आदि शामिल हैं।

मीडिया का चौथा एवं अन्तिम वर्ग है- नव इलैक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम। इसके अन्तर्गत इन्टरनेट, फैक्स, टेलीफोन, ई- मेल आदि आते हैं। यह नव इलैक्ट्रॉनिक मीडिया सोशल मीडिया की व्युत्पत्ति का मूलाधार है।

जब प्रिन्ट मीडिया आया तो वाचिक संवाद की व्याप्तता घटी। जब रेडियो आया तो उसने लिखित और मुद्रित माध्यम को थोड़ा खिसकाकर अपनी जगह बनाई। जब टेलीविजन आया तो मुद्रित मीडिया के विकास और गति पर प्रभाव पड़ा। अब इस सोशल मीडिया के प्रादुर्भाव ने संचार माध्यमों की दुनिया को फिर बड़े बुनियादी ढंग से बदल दिया है।

सन् 2000 में जब हिन्दी का पहला वेब पोर्टल अस्तित्व में आया तभी से इन्टरनेट पर हिन्दी ने अपनी छाप छोड़नी शुरू कर दी थी, जो अब रफ़्तार पकड़ चुकी है। इंटरनेट पर हिन्दी का सफर रोमन लिपि से प्रारम्भ होता है और फॉन्ट जैसी समस्याओं से जूझते हुए धीरे-धीरे यह देवनागरी लिपि तक पहुँच जाता है। यूनिकोड जैसे - मंगल, कोकिला, एरियल और एम० एस० यूनिवर्सल फॉन्टों ने देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर पर नया जीवन प्रदान किया है, यूनिकोड एक अन्तर्राष्ट्रीय मानक कोड है, जिसमें हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं

सहित विश्व की लगभग 200 भाषाओं के कोड निर्धारित किये गये हैं। हिन्दी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब प्रत्येक कम्प्यूटर, लैपटॉप यहाँ तक कि स्मार्टफोन पर भी हिन्दी में काम करना व करवाना बड़ा ही सरल हो गया है।

वर्तमान समय में मोबाइल फोन पर भी हिन्दी समर्थन हेतु निरन्तर कार्य चल रहा है। कई मोबाइल कम्पनियाँ जैसे-सोनी, सैमसंग एवं नोकिया आदि हिन्दी टंकण, हिन्दी वॉइससर्च और तथा हिन्दी में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही हैं। अंग्रेजी के साथ आज हिन्दी भाषा का नेटवर्क भी पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। वेबदुनिया, विकीपीडिया, हिन्दी जागरण, नवभारत टाइम्स, भारतकोश, गद्यकोश एवं कविताकोश आदि इसके उदाहरण हैं।

इंटरनेट पर हिन्दी ब्लॉग लेखन के विकास ने आज हिन्दी के स्वरूप को बड़े गहरे प्रभावित किया है। इंन्टरनेट पर आसानी से देवनागरी लिपि लिखने वाले टूल्स विकसित होने के बाद उन लोगों ने अपने विचार हिन्दी में व्यक्त करना शुरू कर दिया, जो हिन्दी टाइपिंग नहीं जानते थे। आलोक कुमार हिन्दी के पहले ब्लॉगर हैं, जिन्होंने 2003 में 'नौ दो ग्यारह' शीर्षक से पहला ब्लॉग लिखा। आज हिन्दी में ब्लॉग की संख्या एक लाख से ऊपर पहुँच चुकी है। हिन्दी ब्लॉगिंग के जरिए ऐसे लोगों को विचाराभिव्यक्ति का अनुपम मंच मिला, जिनके लिए भाषा की रुकावट थी।

फेसबुक, ट्विटर जैसी साइटों पर हिन्दी में रोज अनेक पोस्ट, सन्देश तथा संवाद दिखाई पड़ रहे हैं। आम जनता से लेकर नेता, अभिनेता तथा उद्योगपति सभी इन मंचों का प्रयोग कर अपने विचार, मनोभाव हिन्दी में प्रचारित -प्रसारित कर रहे हैं।

फेसबुक,ब्लॉग व ट्विटर के अतिरिक्त सोशल मीडिया में हिन्दी को और भी व्यापक रूप से विस्तारित करने में व्हाट्सएप अग्रणी है। हिन्दी चुटकुले, सन्देश अथवा अन्य सामग्री व्हाट्सएप पर ज़्यादा प्रसारित होने के कारण आज हिन्दी व्हाट्सएप की प्रमुख भाषा बनकर उभर रही है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी के व्यापक प्रसार की इस प्रक्रिया ने हिन्दी भाषा के समक्ष एक बड़ी समस्या उपस्थित कर दी है। वह समस्या है-भाषा के स्वरूप की। सोशल मीडिया ने अपनी नई भाषा गढ़ ली है। भाषा और शब्दों के सौन्दर्य, मर्यादा, गरिमा व स्वरूप की चिन्ता करने वाले सभी इस नई भाषा के प्रभाव और भविष्य पर चिन्तित तो हैं ही, वे इस पर भी परेशान हैं कि इस खिचड़ी, विकृत और कई बार अटपटी भाषा की खुराक पर पल-पल बढ़ रही किशोर व युवा पीढ़ी वयस्क होने पर किसी भी एक भाषा में सशक्त व प्रभावी सम्प्रेषण के योग्य बचेगी या नहीं ?

अन्त में कहा जा सकता है कि वर्तमान सदी इंटरनेट तथा वेब मीडिया वाली सोशल मीडिया की सदी है। इस सोशल मीडिया के दौर में हिन्दी प्रमुख भाषा माध्यम के रूप में उभर रही है। यूनिकोड के आने के बाद से हिन्दी सर्वसुलभ और सर्वोपयोगी माध्यम के रूप में कार्य कर रही है। आज हिन्दी के पन्द्रह से भी

★★★★★

घर और विद्यालय की स्वच्छता में बच्चों की भागीदारी

डॉ० राम किशोर सागर
एसोसिएट प्रोफेसर(अर्थशास्त्र)

हमारे धर्मशास्त्रों में माता- पिता और गुरू तीनों को बच्चों के जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण माना गया है तो दूसरी ओर शिक्षा उसके बौद्धिक, आत्मिक और चारित्रिक गुणों का विकास करती है। उसे जीवन जीने की कला की शिक्षा देती है। उसकी चेतना को जागरूक बनाने का काम करती है। हमारे देश के अधिकांश शिक्षकों की शिक्षण की कला, जीवन व्यवहार और उत्तम चरित्र के गुणों की सीखकर और उसके आदर्शो पर चल कर छात्र जीवन जीने का ढंग सीखते हैं।

बच्चे, देवता या भगवान तो नही होते लेकिन वे उन जैसे माने जाते हैं। इसका प्रमुख कारण है उनका निर्मल स्वभाव। वे अन्दर और बाहर से एक होते हैं। बच्चे, अवगुणों और मनोविकारों से मुक्त रहते हैं। बच्चों के अनेक रूप होते हैं- वे स्कूल में विद्यार्थी के रूप में और घर पर किसी के पुत्र, पुत्री, भाई, बहन, भतीजा, भतीजी और दोस्त होते हैं। प्रत्येक रूप में बच्चों का व्यक्तित्व तभी अच्छा माना जाता है जब वे सबके साथ शिष्ट, सदव्यवहारी तथा आज्ञाकारी बने रहें।

घर और विद्यालय की स्वच्छता में बच्चे अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा सकते हैं। बच्चों को कुछ भी करने के लिए प्रोत्साहन और उत्साह वर्धन करने की आवश्यकता है। बच्चों को व्यक्तिगत साफ-सफाई के साथ-साथ पर्यावरण की स्वच्छता की ओर भी ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। स्वच्छता एक अच्छा कार्य है। यदि माता-पिता और शिक्षकों के द्वारा यह कार्य किया जाता है। तो बच्चे उनका अनुसरण भली-भांति करते हैं। स्वच्छता के महत्व और आवश्यकता की जिम्मेदारी को प्रत्येक बच्चों को समझना जरूरी है। स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हमें अच्छे जीवन की ओर बढ़ावा देती है। यह हम सबको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ बनाती है।

एक साफ सुथरे माहौल में रहना किसे अच्छा नही लगता है। जैसे-जैसे हमारे आस-पास कूड़ा कचरा बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे अपने घर और विद्यालय को साफ, सुथरा रखना और भी कठिन होता जा रहा है। घर के अन्दर और विद्यालय में साफ-सफाई के बारे में हमारा नजरिया क्या है? घर और विद्यालय की साफ-सफाई सिर्फ हमारे ही नहीं, बल्कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के नजरिये पर निर्भर करती है।

अक्सर देखा जाता है कि घर में माँ का काम कभी खत्म नहीं होता है। वह खाना पकाने, बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करने, पति को डयूटी पर भेजने, मेहमानों का स्वागत सत्कार करने और खुद अपनी नौकरी पर जाने के साथ-साथ घर आंगन की सफाई करती है। यदि अन्य कार्यो के साथ-साथ स्वच्छता का एक कार्यक्रम बनाया जाये जिसमे पूरा परिवार हाथ बँटाए तो माँ के काम का बोझ काफी हल्का हो सकता है।

कुछ घरों और विद्यालयों में देखा गया है कि कुछ जगहों की साफ-सफाई रोजाना करनी जरूरी है। कुछ की सप्ताह में एक बार में कुछ जगहों की महीने में एक बार, कुछ जगहों की छः महीने में एक बार

और कुछ जगहों की साल में एक बार साफ-सफाई करनी जरूरी है।

बहुत सारे माता-पिता और अध्यापक बच्चों के लिये नियम बनाते हैं और उन्हें छोटे-छोटे स्थानो की साफ-सफाई का काम सौंप देते है। जैसे स्कूल जाने से पहले अपना बिस्तर बनाना, अपने गन्दे कपड़े सही स्थान पर रखना, खिलौने, किताबें ठीक-ठाक प्रकार से रखना, प्रत्येक सदस्य के लिए यह नियम लाभप्रद होंगे।

इसके अतिरिक्त, परिवार के कुछ सदस्यों को साफ-सफाई का काम या घर के किसी हिस्से को साफ करने की जिम्मेदारी सौपीं जा सकती है। जैसे-पिता साल में दो चार बार गाड़ी खडी करने की जगह की साफ-सफाई करे, इस कार्य में बच्चे भी हाथ बँटा सकते हैं। बच्चे स्कूल के बगीचे में जंगली पौधे निकालने, कूड़े करकट की साफ-सफाई, मेज कुर्सियां को साफ करना, गमलों में सिंचाई कर अपनी जिम्मेदारी सही से निभा सकते हैं।

आपके घर के बाहर दरवाजे के पास फुटपाथ पर कूड़ा करकट जमा होने पर बहुत गन्दा लगता है। इसकी स्वच्छता के लिये बच्चों की भागीदारी भी सुनिश्चित कर, उन्हें अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराना चाहिए तभी वे विद्यालय के भी जिम्मेदार विद्यार्थी साबित होंगे। कभी-कभी घर और विद्यालय में डिब्बों में औजार और दूसरी चीजे यहाँ वहाँ पड़ी रहती हैं। यही कीड़े मकोड़े के छिपने का अड्डा बन जाती हैं। इस कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिये भी बच्चों की भागीदारी आवश्यक है।

कुछ परिवार स्वच्छता का कार्यक्रम ही बनाने के बाद एक कागज पर लिख कर ऐसे स्थान पर टांग देते है जहाँ परिवार के सभी सदस्य उसे देख सकें और उसी के अनुसार कार्य कर सकें। ऐसा करने से बच्चों की भागीदारी और अधिक बढ़ जाती हैं।

स्वच्छ भारत मिशन के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में, जब माननीय प्रधानमन्त्री जी ने पहली बार लाल किले की प्राचीर से इस अभियान की शुरूआत की थी। तब से अब तक ये धीरे-धीरे एक जन आन्दोलन बन चुका है। 2 अक्टूबर, 2014 से अब तक ग्रामीण स्वच्छता भारत में सफाई व्यवस्था 42% से बढ़ कर 63% तक पहुँच चुकी है। खुले में शौच करने वालों लोगो की संख्या 55 करोड़ से घट कर 35 करोड़ हो चुकी है।

सम्पूर्ण भारत के बच्चों को स्वच्छता अभियान में भागीदारी बनाने के लिए 14 नवम्बर 2016 को बाल स्वच्छता अभियान के रूप में एक मिशन आरम्भ किया गया। यह एक पाँच दिवसीय स्वच्छता अभियान है। बाल स्वच्छता अभियान की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए बाल दिवस के अवसर पर स्कूल, कॉलेज और दूसरे शिक्षण संस्थानों को सरकार ने आदेशित किया है। इस उत्सव के सभी पाँचो दिनों की अलग-अलग विषय वस्तु रखी गयी थी जैसे -

1- 14 नवम्बर की विषय वस्तु थी- "स्वच्छ स्कूल हमारे आस-पास खेल के मैदान"।
2- 15 नवम्बर की विषय वस्तु थी "स्वच्छ भोजन "।
3- 17 नवम्बर की विषय वस्तु थी -"अलमारियोंको साफ रखें"।
4- 18 नवम्बर की विषय वस्तु थी "पीने के पानी की सफाई करना "।
5- 19 नवम्बर की विषय वस्तु थी " स्वच्छ शौचालय "।

इस उत्सव को अधिक उत्साहयुक्त बनाने के लिये बच्चों ने सक्रियता से स्वच्छता अभियान में भाग लिया और आस-पास के क्षेत्रों से कूड़े हटाने के लिए कड़े निर्देशों का पालन भी किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अभिभावकों, शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित, निर्देशित व मूल्यांकित किया गया।

एक ओर स्वच्छ भारत मिशन अच्छी प्रगति कर रहा है। केन्द्र सरकार और राज्य सरकार की दोनों टीमें आगे आने वाली चुनौतियों को लेकर सजग हैं। प्रधानमन्त्री जी के नेतृत्व में राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों, जमीनी स्तर पर प्रधान, सरपंच और महिलाओं के सहयो़ग ने आन्दोलन को सफल बनाया है। वहीं दूसरी ओर बच्चों के माता पिता और अध्यापकों ने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने से सराहनीय परिणाम सामने आये हैं। हमें अपने सराहनीय लक्ष्य से बहकना नहीं चाहिए, क्योंकि कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। हमारी सरकार का लक्ष्य स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत के साथ सबका साथ सबका विकास है।

★★★★★

माँ मुझे बता दे

सोनम रानी
एम. ए. (पूर्वार्द्ध)

मेरी माँ यह बता दे
अपनी गोद में लेकर
कैसे दुलारती बता दे।

ममता के आँचल में
उंगली पकड़ कर
कैसे चलाती बता दे।।

खुदा, ईश्वर, भगवान
सब तेरी हैं सन्तान
कैसी तू तस्वीर बता दे।

तेरे आँचल की गुड़िया
जब परदेश उड़ जाती है,
कैसे दिल पर पत्थर रखती हैं
बता दे ।।

गीले में तू सोती
सूखे में मुझे सुलाती
कैसा यह राज मुझे बता दे।

★★★★★

समाज सृजन में साहित्यकार की भूमिका

डॉ० अरुण कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त वाङ्‌मय समाहित है जिसमें मनुष्य अपने भावों, विचारों और कल्पनाओं को साकार अभिव्यक्ति प्रदान करता है। समाज में रहकर मनुष्य जो कुछ अनुभव करता या देखता है, अपनी बुद्धि और कल्पना का सहारा लेकर जिस साहित्य का सृजन करता है, उसे हम 'बुद्धि प्रधान साहित्य' अथवा शास्त्र या विज्ञान कहते हैं और जिस साहित्य में कल्पना तत्व मुखर होता है एवं जिसका सम्बन्ध हमारे हृदय की अनुभूतियों से होता है, उसे हम भावना प्रधान साहित्य कहते हैं।

आजकल भावना प्रधान साहित्य को ही साहित्य कहा जाता है और इसके रचयिता को साहित्यकार कहा जाता है। साहित्यकार को यदि समाज का सृष्टा कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी। वह अपनी अनुभूतियों और कल्पनाओं के बल पर ऐसे साहित्य का सृजन करता है जो काल्पनिक होते हुए भी वास्तविक जान पड़ता है। इस तरह साहित्यकार एक कुशल कलाकार होता है। यह मानव के शाश्वत मूल्यों और भावों का उद्‌घाटन इस प्रकार करता है कि उसे पढ़कर अथवा सुनकर पाठक बरबस मंत्रमुग्ध हो जाता है और समाज उसके सत्य को स्वीकार करने लगता है। दूसरे शब्दों में सद्‌साहित्य सत्यम, शिवम, सुंदरम के पवित्र भावों का उद्‌घाटन है।

साहित्य के आचार्यों ने साहित्य और समाज में घनिष्ठ संबंध बताते हुए साहित्य को समाज का दर्पण कहा है। साहित्य किसी देश अथवा समाज के व्यक्तियों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक भावों और विचारों का संचित इतिहास है। साहित्यकार की समाज की प्रत्येक गतिविधियों पर गहरी पैठ होती है। वह समाज में रहकर उसके गुण दोषों को अपनी खुली आँखों से देखता है और अपनी अनुभूतियों को लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। साहित्यकार एक युग नायक और समाज का नेता होता है। उसका साहित्य उस प्रकाश स्तम्भ की तरह होता है जिसकी किरण अंधकार में भटकी हुई जनता को सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है। क्रान्तिकारी कवि दिनकर भी अपनी 'कलम' कविता में कहते हैं-

" कलम देश की बड़ी शक्ति है, भाव जगाने वाली।
दिल ही नहीं, दिमागों में भी आग लगाने वाली।।
पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे।
और प्रज्ज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे।। "

उसके एक-एक शब्द में युग परिवर्तन अथवा क्रांति का आह्‌वान होता है। वह मनुष्य को नैतिकता और सदाचार की शिक्षा तो देता ही है, साथ ही शोषण, उत्पीड़न, और अमानवीय अत्याचार की चक्की में पिसती हुई मूक एवं निर्बल जनता को अपने उद्धार के लिए सत्य एवं स्फूर्ति भी प्रदान करता है।

साहित्यकार का सबसे बड़ा दायित्व है कि वह सत्साहित्य करके सृजन का समाज को सन्मार्ग पर ले जाए। असत्य से सत्य की ओर, तम से ज्योति की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले जाये। कबीर, सूर, तुलसी, निराला, प्रसाद, पंत, महादेवी वर्मा, मुक्तिबोध, केदारनाथ अग्रवाल, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन ', सुभद्रा कुमारी चौहान आदि कवियों और साहित्यकारों ने अपने इसी महान भावना से प्रेरित होकर साहित्य का सृजन किया।

साहित्यकार को अपने युग की आवाज़ को पहचान कर उसी के अनुरूप साहित्य की रचना करनी चाहिए। उसे स्पष्ट वक्ता भी होना चाहिए। किसी राजनीतिक, सामाजिक दबाव में आकर उसे अपनी बात नहीं कहना चाहिए। सर्व समाज के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुए अपनी बात करनी चाहिए। समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

समाज में नैतिकता का सृजन करना और (लोक कल्याणकारी) समाज की स्थापना करना साहित्यकार का परम कर्तव्य है। उसे चाहिए कि वह अपनी अनुभूति और कल्पना की शक्ति के बल पर मानवता में गहरी आस्था रखते हुए ऐसे साहित्य का सृजन करे जिससे समाज में भाईचारे की भावना को बल मिले, व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध सुदृढ़ हों और मनुष्य में नैतिक मूल्यों का विकास हो।

साहित्यकार का सत्य एक मानव सत्य ही होना चाहिए जो सर्वहितकारी हो। इसे किसी धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ग, अमीर, गरीब आदि से मुक्त होकर केवल और केवल मानव मूल्यों की स्थापना की बात करनी चाहिए। मानवीय मूल्यों के विकास से ही समाज में सुख, शान्ति और समृद्धि सम्भव है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि समाज के सृजन में साहित्यकार की बहुत बड़ी भूमिका होती है। साहित्यकार में ही वह सामर्थ्य है जो समाज को कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर तथा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जा सकता है। समाज उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है।

★★★★★

" वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षक- शिक्षा एवं समाज "

लेफ्टि. (डॉ०) प्रवेश कुमार
विभाग प्रभारी बी०एड०

मानव को संसार में सबसे ज्यादा चिन्तनशील, बुद्धिमान एवं श्रेष्ठतम प्राणी की संज्ञा प्रदान की गयी है। प्रत्येक मानव की अपनी-अपनी कलाऐं है, अपने - अपने विचार, अपनी-अपनी सभ्यता और शैली है। पृथ्वी पर मानव सभ्यता का विकास कब, कहाँ और कैसे प्रारम्भ हुआ? इस विषय में साहित्यकार, इतिहासकार, मानवशास्त्री, खगोलशास्त्री और जीव वैज्ञानिक के अपने-अपने मत हैं, और इन मतों में बड़ी भिन्नता है,सभ्यता की बात करें तब मानव अपने आप को भगवान समझ बैठा है, युग इतना बदलता जा रहा है, कि भृष्टाचार की कोई सीमा नहीं है कुछ लोग है जो अपने कर्तव्यों /दायित्वों का निर्वहन करते हैं, कुछ ऐसे हैं जो दायित्वों का निर्वहन ही नहीं करते और कहते हैं कि मेरे बिना काम ही नहीं चल सकता। ये भी भ्रष्टाचार की संज्ञा में आता है। 60% लोग भ्रष्टाचार का खा रहे है। बेरोजगारी का सबसे बड़ा पहलू है आज डॉक्टर वेतन का कार्य नही करते, शिक्षक वेतन का कार्य नही करते, नेता-नेता का कार्य नही करते, लिपिक अपने दायित्व का निर्वहन नहीं करते। चतुर्थ श्रेणी से लेकर उच्चतम न्यायालय तक के न्यायाधीश तक अपने दायित्वों का पूर्णत: पालन नही करते । बहुत कम ही लोग है जो अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं।

वैदिक युग में सभ्यता एवं मानवता का जिक्र किया जाता है वहाँ पर वेदों की भाषा थी, संस्कृत का युग था वर्ण व्यवस्था के कारण असमानता पहले भी थी, आज इसका बाह्य रूप कम हुआ है परन्तु समानता अभी भी नही है। भारत का इतिहास संसार में सबसे पुराना है परन्तु विडम्बना यह है कि स: प्रमाण कुछ भी नही कहा जा सकता है। हाँ, यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि ज्ञान की सर्वप्रथम किरण भारत में ही प्रस्फुटित हुई थी। अंग्रेजी विद्वान एफ० डब्लू० थॉमस ने कहा कि 'ऐसा कोई देश नही है जहाँ ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय में प्रारम्भ हुआ हो, जितना भारत में या जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रमाण उत्पन्न किया हो। भारत ने, इस काल में शिक्षा शब्द का प्रयोग ज्ञान, विद्या, विनय और अनुशासन के प्रयोग के रूप में किया, सामान्यत: बच्चों का परिवारों में, विद्यारम्भ के लिए, जो श्री गणेश होने के बाद विषय दिये जाने वाले ज्ञान एवं कौशल में प्रशिक्षण को शिक्षा कहा जाता था। अल्तेकर ने कहा कि "ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना ,चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार, प्राचीन भारत में शिक्षा के मुख्य उद्देश्य अनुशासन एवं आदर्श था परन्तु आज शिक्षा का उद्देश्य ही बदल गया है। आज मानव शिक्षा ग्रहण करता है चरित्रहीनता, व्यक्तित्व को गिराने, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों से बचने के लिए, संस्कृति को उजाड़ने के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अपना मतलब सिद्ध करना एवं आदर्शो का मजाक बनाने के लिए हो रहा है।

आज हम सोचने के लिए मजबूर हैं कि व्यक्ति का मन व्याकुल क्यों है?शिक्षक, डाक्टर, लिपिक, प्रशासनिकाधिकारी एवं नेता सभी पेशेवर हैं, मन में असन्तुष्टता क्यों है? जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन में असंन्तोष भरा है, ऐसे अनेकों प्रश्न मन में आते है? जो लोग रोजगार प्राप्त हैं वह तथा जो लोग रोजगार प्राप्त नही हैं सभी लोग असन्तुष्ट हैं।

प्रसन्नचित कौन है ? इस प्रश्न का जवाव किसी के पास नही है, आज शिक्षार्थी के पास उच्च शिक्षा लेने का समय नही है क्योकि उसके पास सैकड़ों बहाने हैं जैसे घर में अकेला हूँ। जीवन चलाने का कोई साधन नही है। घर में कोई नही है, सारा कार्य करना पड़ता है, आर्थिक तंगी है, मैं सिविल की तैयारी कर रहा हूँ, मैं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूँ, मेरी मोबाईल की दुकान है आदि। जब शिक्षार्थियों के पास इतने रोजगार हैं, तब ऐसे विद्यार्थी कक्षा में बैठकर ज्ञान का अर्जन करना ही नही चाहते। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा की स्थिति क्या होगी ? कहा जाता है कि देश का निर्माण कक्षाओं में होता है परन्तु जब कक्षा में विद्यार्थी ही नही होगें तब एक अच्छें नागरिक, एक अच्छे देश का निर्माण कैसे होगा। इन परिस्थितियों में भी हम और शासन प्रशासन दोषी है, शिक्षा में एक अच्छे शिक्षकों का निर्माण नही हो रहा है इसीलिए शिक्षा का भविष्य अन्धकारमय होता जा रहा है।

अत: शिक्षक- शिक्षा विभाग, समाज, शासन प्रशासन एक अच्छा शिक्षक बनाने में अपने पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करने का प्रयास करता है जिससे सम्पूर्ण देश में प्रकाश की एक-एक किरण प्रत्येक स्थान पर पहुँचा सके और एक सभ्य समाज का निर्माण हो सके।

★★★★★

सैनिक गीत

वैष्णवी गुप्ता
बी.एस-सी.(द्वितीय वर्ष)

आँसू पीकर गम सहकर के दिल मजबूत बनाया है।
देश के खातिर ऐसी माँ ने सैनिक बेटा जाया है ।।
ऐसी माँ न होती तो सैनिक बेटा कैसे आता।
देश हमारा दुश्मन दल से सैनिक बिन बच कैसे पाता।।
नमन है इस सैनिक जननी को कर्म है इसका बहुत बड़ा।
इसके ही अस्तित्व से अपना देश सुरक्षित बचा पड़ा।।
इस माँ ने अपने खून को खून से ही नहलाया है।
देश के खातिर ऐसी माँ ने सैनिक बेटा जाया है।।
उर्मिला है वो पत्नी जो एक सैनिक से करती विवाह।
भेज कर सीमा पर लक्ष्मण को द्वार लगी है उसकी निगाह।।
उसने भी वर्षो तक अपना विरह वनवास उठाया है ।
देश के खातिर ऐसी माँ ने सैनिक बेटा जाया है।।
ऐसे पुत्र का क्या कहना जो पिता कथन अनुसार चले।
माँ का कहना मान ऐसे पुत्र ने ही इतिहास रचाया है।।
देश के खातिर ऐसी माँ ने सैनिक बेटा जाया है।।

★★★★★

एक समाज सुधारक के रूप में सावित्री बाई फुले का योगदान

डॉ० ललित कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र

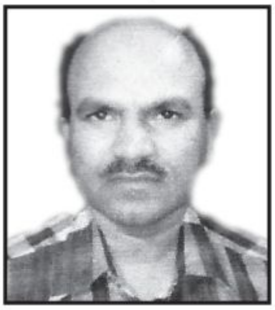

देश के समाज को सुधारने में प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने इस देश की महिलाओं के अधिकारों तथा स्त्री शिक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। वे देश की ऐसी समाज सुधारक रही हैं जिसने महिलाओं को शिक्षित करने, बालिका विद्यालय खोलने, दलित महिलाओं को शिक्षित करने के लिए, जीवन भर सघंर्ष किया। उन्होंने बालिकाओं के लिए ऐसे समय में स्कूल खोलने का प्रयास किया जब बालिका को शिक्षा देना समाज द्वारा अच्छा नहीं माना जाता है। वे देश की पहली महिला शिक्षिका रही हैं। इस दौरान उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होने कभी हिम्मत नहीं हारी और निरन्तर अपने पथ पर अग्रसर रही। इस देश की बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए आज से लगभग 170 वर्ष पूर्व वर्ष 1852 में एक बालिका विद्यालय की स्थापना आपने ही की और पहली शिक्षिका बनीं। लेकिन आज हमारे देश में अनेक स्कूल, कॉलेज, बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए स्थापित है। देश की संवैधानिक व्यवस्थानुसार उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

जैसा की हम जानते हैं कि हमारे देश में अनेक समाज सुधारक हुए हैं जिन्होंने लोगों को जागरूक करने और उनको नई दिशा देने तथा अधिकारो को मुहैया कराने के लिए प्रयास किये हैं। इन समाज सुधारकों में देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री वाई फुले के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे देश की ऐसी समाज सुधारक रही हैं जो जीवन भर महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ती रहीं। सावित्री बाई फुले का जन्म 03 जनवरी 1831 को हुआ था। उनका विवाह इस देश के समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले से सन 1840 में हुआ था। ज्योतिबा फुले ने महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए काफी संघर्ष किया और वे समाज के सभी वर्गों को शिक्षित करने के प्रबल समर्थक थे। ज्योतिबा फुले शोषित समाज के उत्थान के लिए आजीवन प्रयासरत रहे। उनके इस कार्य में उनकी धर्म पत्नी साबित्री बाई फुले ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । सावित्री बाई फुले को शिक्षित करने में उनके पति ने प्रयास किया और जब उनके पति द्वारा जो प्रथम बालिका विद्यालय खोला गया तो उस स्कूल की प्रथम महिला शिक्षिका तथा प्रिंसिपल बनीं।

19 वीं शताब्दी का यही वो दौर था जिसमें भारतीय महिलाओं की स्थिति शोचनीय थी। समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, रूढ़ियो के कारण महिलाओं पर अनेक पाबन्दियां लगी हुई थीं। जिसके कारण वह अनेक अधिकारों से वंचित थीं। अनेक कुप्रथाओं के कारण महिलाओं का शोषण होता था। जिसमें जाति-पाँति, अशिक्षा, छुआछूत, सतीप्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह जैसी कुरीतियां जिम्मेदार थी। इसके अलावा अंधविश्वास के कारण बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था।ऐसी स्थिति में भी सावित्री बाई फुले ने अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर बालिकाओं की शिक्षा हेतु अनेक विद्यालय खुलवाये और इसके अलावा समाज में व्याप्त सतीप्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह जैसी कुरीतियों रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष किया।

यद्यपि उस दौरान सावित्री बाई फुले के पति ज्योतिबा फुले दलित व महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, शोषण से मुक्ति दिलाने और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए संघर्ष कर रहे थे । उसके विकास के लिए उन्हें शिक्षित करने का प्रयास कर रहे थे। फिर भी समाज द्वारा विरोध करने के परिणामस्वरूप सावित्री बाई फुले ने अपना अध्ययन पूरा किया। अपनी शिक्षा का उपयोग बालिकाओं को शिक्षित करने में लगाया। जब समाज लड़कियों को पढ़ाने के खिलाफ था तब उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर सन् 1848 में पूणे में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की, जिसमें कुल 09 लड़कियों ने दाखिला लिया और सावित्री बाई फुले इस स्कूल की प्रधानाध्यापिका बनीं। उनके इस प्रयास से इस स्कूल में बालिकाओं की संख्या में वृद्धि होती गयी। सावित्री बाई फुले के प्रयास से सन् 1848 से 1852 तक बालिकाओं की शिक्षा हेतु 18 विद्यालय खोले, जिसमें समाज की हर वर्ग की बालिकाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके अलावा सावित्री बाई फुले ने 1853 में बाल-हत्या प्रतिबन्ध गृह की स्थापना की। 1855 में श्रमिक व मजदूर वर्ग को शिक्षित करने के लिए ' रात्रि-पाठशाला ' खोली। सावित्री बाई फुले तथा ज्योतिबा फुले ने 24 सितंबर 1873 की सत्ययोधक समाज की स्थापना की जिसके द्वारा 25 दिसम्बर 1873 की पहला विधवा पुन: विवाह सम्पन्न किया गया था। इस प्रकार उन्होंने अपना सारा जीवन समाज के कमजोर व अधिकारों से वंचित लोगों के उत्थान में लगा दिया।

★★★★★

जुनून

हवीबा फोज खान
बी.एस-सी.(द्वितीय वर्ष)

गर जुनून है सर पर तेरे और अन्तर में हो विश्वास,
फ़िर ठोकर और ठुकराने का होगा कहाँ तुम्हें एहसास।
मकसद में सच्चाई है तो सीना ठोक के यही कहो,
झुकना होगा दुनिया तुमको विश्वास पर अपने खड़े रहो,
अड़े रहो, अड़े रहो, अड़े रहो ....
दुनिया बदली है जिसने भी पहले उसको इनकार मिला।
अपमानों का हार मिला और तानों का उपहार मिला।।
हर श्वाँसो में विश्वास भरो लहरों के विपरीत बहो।
हाथों में विजय मशाल लिये, विश्वास पर अपने खड़े रहो,।।
अड़े रहो, अड़े रहो, अड़े रहो ..
अपने सपने तुम चुनो और बुन लो विश्वास की डोरी से।
तुम विजय गर्जना के नायक, तुम को क्या करना लोरी से।।
तुम स्वयं सिद्ध इस जीवन के, उन्मुक्त गगन में उड़े चलो।
आरंभ आज से नवयुग का विश्वास में अपने खड़े रहो,।।
अड़े रहो, अड़े रहो, अड़े रहो ....

NAAC
3rd Cycle
B Grade

शिक्षा में सुधार हेतु फ्लिप्ड लर्निंग और असाइनमेंट

डॉ० अमित कुमार अग्रवाल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, कॉमर्स

फ्लिप्ड लर्निंग क्या है ?

फ्लिप्ड लर्निंग एक शैक्षणिक दृष्टिकोण है जिसमें कक्षा आधारित सीखने की पारम्परिक धारणा उलटी है, जिससे छात्रों को कक्षा से पहले ही सीखने की सामग्री से परिचित कराया जाता है, फिर शिक्षकों द्वारा कक्षा के समय के साथ-साथ साथियों के साथ चर्चा के माध्यम से समझ को गहरा करने के लिए और समस्या को हल करने की गतिविधियों की सुविधा प्रदान की जाती है।

' फ्लप्ड लर्निंग ' वाक्यांश 2000 के दशक के प्रारंभ में सामान्य उपयोग में आया जब रसायन विज्ञान के शिक्षक जॉन बर्गमैन और आरोन सैम्स (बर्गमैन एंड सैम्स 2012) और खान अकादमी के संस्थापक सलमान खान (TED 2011) ने इसे लोकप्रिय बनाया। हालाँकि, फ्लप्ड लर्निंग की अवधारणा इससे बहुत आगे जाती है।

फ्लिप्ड लर्निंग कहाँ से आया?

ऑनलाइन सामग्री निर्माण, सहयोग और वितरण उपकरण के वर्तमान और नाटकीय विकास के लिए तेजी से फ्लिप्ड लर्निंग प्रदान करने के लिए एक सुलभ टूलकिट के साथ चिकित्सकों को प्रदान करते हैं। वीडियो निर्माण (जैसे स्क्रीनर और वेबिनारिया) और वितरण उपकरण आसानी से फ्लिप्प्डकी गई सामग्री बनाने का अवसर प्रदान करते हैं। वैकल्पिक रूप से, पुन: उपयोग के लिए पहले से मौजूद मीडिया का धन उपलब्ध है (जैसे आईटयून्सयू, खान अकादमी, और ओपन येलो पाठ्यक्रम)। जबकि तक़नीक एक पूर्वापेक्षा नहीं है (फ्लिप टेक्स्ट आधारित सामग्री जितनी ही मूल्यवान है), इसमें कोई संदेह नहीं है कि वेब 2.0 प्रौद्योगिकी और शिक्षण सिद्धांत के प्रतिच्छेदन ने मिश्रित सीखने के स्पेक्ट्रम के लिए एक मूल्यवान अतिरिक्त बनने के लिए सीखने को सक्षम किया है।

फ्लिप्ड सीखने के संभावित लाभ क्या हैं ?

छात्रों को कक्षा से पहले ज्ञान और समझ का एक बुनियादी स्तर हासिल करने के लिए सामग्री प्रदान करके, कक्षा के समय का उपयोग सीखने को गहरा करने और उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने के लिए किया जा सकता है। फ्लिप्ड लर्निंग का एक मुख्य उद्देश्य छात्रों को निष्क्रिय सीख से दूर करना और सक्रिय शिक्षण की ओर ले जाना है जहाँ छात्र सहयोगी गतिविधि, सहकर्मी सीखने और समस्या-आधारित सीखने में संलग्न होते हैं। इस संदर्भ में, शिक्षक की भूमिका छात्रों के सशक्तिकरण और प्रशिक्षण की ओर स्थानांतरित हो जाती है, ताकि वे स्वयं के सीखने पर नियंत्रण कर सकें। प्रौद्योगिकी का उपयोग फ्लिप सीखने की प्राक्रिया को और समृद्ध करता है और उन कौशलों को बढ़ावा देता है जो 21 वीं सदी के सीखने (जैसे डिजिटल साक्षरता) के लिए आवश्यक हैं।

फ्लिप्ड लर्निंग कक्षा छात्रों और शिक्षकों दोनों को कैसे लाभ पहुँचाती है ?

यह एक मजेदार तथ्य है कि हमारे वर्तमान दिनों में कुछ चीजें अतीत में फंस गई हैं। उदाहरण के लिए कक्षा लीजिए। वह स्थान जहाँ छात्र अपना अधिकांश समय हमारे पहले से जुड़े आधुनिक दुनिया में सफल नागरिक बनने की तैयारी में बिताते हैं, पूर्व-औद्योगिक युग के बाद से ज्यादा विकसित नहीं हुआ है। मार्कर और व्हाइटबोर्ड ने चाक और ब्लैकबोर्ड को बदल दिया है, फर्नीचर अच्छा है, और शायद प्रत्येक कक्षा में एक प्रोजेक्टर है। लेकिन सेटिंग हमेशा की तरह ही है।

शिक्षक के पास कक्षा के सामने एक परिभाषित स्थान होता है -जहाँ वह व्याख्यान देने के लिए मार्कर, व्हाइटबोर्ड, प्रोजेक्टर और अन्य उपकरणों का उपयोग करता है। सभी समय के दौरान, छात्र-जो कक्षा के अपने हिस्से में बैठते हैं, पंक्तियों में बड़े करीने से संरेखित होते हैं, उन दोनों के बीच समान दूरी के साथ-साथ उस व्याख्यान पर ध्यान देने वाले होते हैं, अपना होमवर्क करते हैं, और बाद में अधिकांश नई जानकारी को पुन: पेश करते हैं या मानकीकृत परीक्षण करते है।

यह सेटिंग संभवत: सभी के लिए महान शैक्षणिक परिणामों का पोषण नहीं कर सकती है। फिर भी इसका अविश्वसनीय रूप से लंबा कार्यकाल रहा है।

कक्षा में रहते हुए व्याख्यान पर ध्यान देने के बजाय और स्कूल के बाद अपने होमवर्क में नए ज्ञान को लागू करने के बाद, छात्र कक्षा शुरू होने से पहले, घर पर व्याख्यान को देखेंगे या सुनेंगे, और कक्षा में अपना होमवर्क करने के लिए समय का उपयोग करेंगे। छात्रों को यह बताने के बजाय कि क्या सीखना है, कैसे सीखना है, कब सीखना है और यह कैसे साबित करना है कि उन्होंने सीखा, शिक्षक उन्हें स्व-निर्देशित सीखने में मदद करते हैं।

हालांकि, सभी छात्रों को किसी भी समय व्याख्यान देने के लिए सुनिश्चित करने के लिए एक फ्लिप कक्षा की सफलता के बारे में बहुत सारी चिंताएं हैं, सबसे अच्छा व्याख्यान कैसे बनाएं, और यहां तक कि छात्रों को कक्षा के लिए तैयार होने के लिए, विश्वास करने के लिए- मैं चाह रहा हूँ केवल इस शैक्षिक मॉडल के उज्ज्वल पक्ष पर ध्यान दें। ऐसा क्यों है ? क्योंकि

1- मुझे लगता है कि मैं एक सकारात्मक व्यक्ति हूँ, और

2- मुझे वास्तव में विश्वास है कि फ्लिप किए गए कक्षा के लाभ इसकी कमियों से आगे निकल जाते हैं।

★★★★★

आज़ादी यानी जिम्मेदारी

गुलअफशा बी
बी. ए. (द्वितीय वर्ष)

अच्छा बनने और अच्छा होने में बहुत फर्क है जनाब ! कुछ लोगों की जिंदगी से खेल जाते हैं। और कुछ लोग हजार जिन्दगियों की जिदंगी बना जाते हैं।।

आजादी की चाह किसे नहीं होती ? नदी, वृक्ष, आकाश, पंछी अपने आजाद होने का उत्सव मनाते हैं। मुक्त प्रवाह में कल-कल के स्वर उत्पन्न गतिशीलता की आजादी को महसूस करती हैं। बीज के रूप में अंकुरित पौधा मिट्टी, खाद, पानी, वायु के संपर्क से वृक्ष बन हवा के वेग में झूमता हुआ आजादी का अनुभव प्राप्त करता है। पिंजरे की जालियों में से आसमान में कलरव करते पंछियों के झुंड को देख रहा पंछी जब स्वयं पिंजरे से मुक्त होता है। तब अपनी आजादी की एक लंबी उड़ान भर आसमान में अपनी आजादी के आनंद में खो जाता हैं। धरती हरी चादर ओढ़े सुंदर नजर आने लगती है। प्रकृति तो अपनी आजादी का उत्सव अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर मनाती है। किंतु हम मनुष्य अपनी आजादी को किस रूप में स्वीकार करते हैं ? आजादी सोशल मीडिया पर बधाई के संदेश डालने का नाम नहीं है, न ही देशभक्ति के गीतों को अपने फोन की धुन बनाने का प्रमाण है।आजादी वह है जो नागरिकों को कर्तव्यों का बोध करा सके। उनके मन में राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना का विकास कर सके। एक दूसरे के प्रति जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा की संकीर्णता जैसे मलिन भावों से मुक्त कर सके। जो मूक प्राणी मात्र के प्रति वेदना तथा व्यक्ति के प्रति सहयोग के भाव का संचरण कर सके वह आजादी है। यदि नागरिकों में राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध के भाव नहीं हैं तो ऐसी आजादी औचित्यहीन है। भारतीय संविधान अपने नागरिकों की आजादी को मौलिक अधिकारों के रूप में प्रमाणित करता है। किन्तु महात्मा गाँधी कहते थे कि कर्तव्यों की पूर्ति पर नागरिकों को अधिकार स्वत: प्राप्त हो जाते हैं। नागरिकों के लिए आवश्यक है कि वे प्रकृति की भाँति अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग हों अन्यथा इस आजादी का अनुभव उन्हें कैसे प्राप्त होगा ? माना हमारे राष्ट्र में अनेक कमियां हैं, किन्तु तमाम विषमताओं और कमियों के बावजूद उन पर विचार रखना एवं संविधान की गरिमा में बात करना आजादी है। आजादी वह संकल्पना है जो हमें विचार एवं व्यवहार से स्वायत्त बने रहने की प्रेरणा देती है। अपनी बुद्धि तथा विवेक के आधार पर विरोध की शक्ति प्रदान करती है।

पढ़ना है अभी थोड़ा पढ़ना है
एक बार ज़िन्दगी से लड़ना है।।
बस एक बार कुछ कर गुज़रना है।
वक्त से आगे बढ़ना है।।
एक बार ज़िन्दगी से लड़ना है।।

★★★★★

व्यक्तित्व विकास

सुनील कुमार
एम. ए. (उत्तरार्द्ध)

सफलता का पहला शब्द 'अ ' से अनुशासन - अनुशासन वह क्षमता है जो आपको किसी भी भावात्मक स्थिति के बावजूद निर्णय लेने के योग्य बनाती है। अनुशासन अव्यवस्था, अज्ञानवश उपजी उपेक्षा और विलम्ब को समाप्त कर सकता है यदि इसके साथ लक्ष्य को पाने की भावना, जुनून और योजनाबद्धता का समावेश कर दिया जाए तो अनुशासन एक सुदृढ़ टीम का गठन करने में सहायक होता है।

अनुशासन किसी व्यक्ति को इस योग्य बनाता है कि वह जीवन में सफलताओं को प्राप्त कर सके। अच्छी बात यह है कि अनुशासन एक कौशल है जिसे आसानी से सीखा जा सकता है।

अनुशासन सफलता का सबसे बड़ा कारक : अगर आप अनुशासन को दिनचर्या में शामिल नहीं करते हैं तो आप निश्चित तौर से सफलता के सबसे बड़े कारण की अनदेखी कर रहे हैं। अनुशासनहीन व्यक्ति अव्यवस्थित, पहल न करने वाले और औसत से नीचे प्रदर्शन क्षमता वाले होते हैं। अनुशासन व्यक्ति को कार्य करने पर केन्द्रित होने की क्षमता, इस पर नियन्त्रण तथा बेहतर ढंग से सीखने का अवसर प्रदान करता है।

उदाहरण के तौर पर : मान लीजिए जब आप कोई फिल्म देखते हैं, तो आप इसके पीछे लगे निर्माण के हजारों घंटों को नहीं देख पाते हैं। जब कि बॉक्स ऑफिस पर फिल्म की सफलता इसी मेहनत पर निर्भर करती है।

सभी चीजें हो जाती हैं संभव, आवश्यक है नियमित अभ्यास : अनुशासन से सभी चीजे सम्भव हो जाती हैं। अनुशासन ही वह चाभी हैं जो प्रेरणा को वास्तविकता प्रदान करती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति थिमोडोर रुजवेल्ट का कथन है - " वह एक गुण जो लोगों को दूसरों से अलग करता है - प्रतिभा, शिक्षा अथवा बौद्धिक क्षमता, नहीं बल्कि आत्म अनुशासन है। "

अनुशासन हमारे व्यक्तिगत और व्यवसायिक जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रमुख भूमिका निर्वहन करता हैं, लेकिन कभी-कभी इसका अभ्यास मुश्किल हो जाता है। कारण यह है कि यह प्रकृति प्रदत्त गुण ही है।

छोटे त्याग से मिलेगी बड़ी खुशी : कई लोग गलतफहमी में अनुशासन को दंड तथा अपनी इच्छाओं की कुर्बानी से जोड़ते हैं। वास्तविक तथ्य यह है कि अनुशासन पूर्ण होना किसी व्यक्ति के जीवन में आनन्द के अवसरों को बढ़ा देता है। हाँ इसके लिए कई बार अपनी छोटी-छोटी खुशियों को छोड़ना पड़ता है।

मुश्किलें बनती हैं सीढ़ियां मंजिल की - सफलता प्राप्ति के लिए मस्तिष्क में इस बात को बिठा लेना बहुत आवश्यक है कि प्रत्येक अवसर चुनौतियों के साथ ही आता है। अनुशासित व्यक्ति इस चुनौतियों को राह के रोड़ों की तरह नहीं मंजिल तक पहुँचाने वाली सीढ़ियों की तरह देखते हैं। वे चुनौतियों का सकारात्मक दृष्टिकोण से सामना करते हैं और अंततः सभी चुनौतियाँ उनके लिए सहज बन जाती है। इसलिए अनुशासन का अभ्यास आज से ही प्रारम्भ करें और चल पड़ें सफलता की राह पर।

अनुशासन का विकास : अच्छी बात यह है कि अनुशासन एक कौशल है जिसे आसानी से सीखा जा सकता है। एक बार इसे सही तरीके से समझ लिया जाए तो यह विकसित होने की प्रक्रिया में आ जाता है। इसके लिये इन बिन्दुओं का पालन कीजिए।

1- खुद को व्यवस्थित कीजिए। एक शेड्यूल बनाइए और उसका दृढ़ता से पालन कीजिए खुद को व्यवस्थित करने के लिए कोई भी ऐसा तरीका आजमा सकते हैं। इसके लिए डायरी लिखने से लेकर टाइम टेबल बनाने तक कई विकल्प हैं।

2- छोटी-छोटी चीजों से शुरूआत करें और प्रत्येक कार्य के लिए समय सुनिश्चित करें।

3- फुर्सत के समय केवल मनोरंजन मत तलाशिए। ऐसे समय में उस कार्य को वरीयता दीजिए, जिससे आप आगे बढ़ सकें।

4- समयबद्ध बनिए, यह गुण जीवन को व्यवस्थित बनाता है।

5- अपनी बात पर कायम रहिए यदि आप कोई वादा करते हैं तो उसे अवश्य पूरा कीजिए।

6- मुश्किल कामों को पहले समाप्त कीजिए।

7- जो भी काम हाथ में लीजिए, उसे पूरा करके उठिये। यह अनुशासन के विकल्प का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है।

8- अपनी आलोचना और टीका-टिप्पणी को सहज भाव से लेना सीखिए। यह आपको उन बातों से जागरूक करता है, जिनसे आपको बचना चाहिए था।

9- जिम्मेदारियों का स्वागत कीजिए। उन कार्यो को पूरा करने की कोशिश कीजिए, जिसकी उस समय जरूरत है।

10- दूसरों से अपनी तुलना मत कीजिए। हकीकत में इससे आपको सहायता नहीं मिलती है। बस यह देखिए कि आज आप कहाँ पर हैं और इससे अधिक बेहतर होने के लिए अपना लक्ष्य निर्धारित कीजिए। एक बार आप किसी स्तर को प्राप्त कर लें तो अगली बार उससे ऊँचे स्तर पर जाने का प्रयास कीजिए। इस ढंग से तब तक आगे बढ़ते रहिए। जब तक आप अपनी मंजिल पर न पहुँच जाएं। हर बार अपनी क्षमता को थोड़ा सा ऊँचा उठाने से आप आपनी योग्यताओं में वृद्धि करते हैं और समय के साथ अधिक निखरते जाते हैं।

★★★★★

पर्यावरण प्रदूषण

जोगेन्दर यादव
बी. ए. (द्वितीय वर्ष)

पर्यावरण का कुछ ऐसे अवांछित तत्त्वों से मिलना जो उसके सभी घटकों को किसी न किसी रूप में हानि पहुँचाते हुए उसकी गुणवत्ता को कम करते हैं, इसे पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। पर्यावरण के विभिन्न घटक जैसे जल, वायु एवं मिट्टी आदि सभी इससे प्रभावित होते हैं। प्रकृति के अनुसार इन सभी तत्त्वों की अपनी खास विशेषता होती है। जिसके कारण ये सभी इस धरती के जीवन का सुव्यवस्थित ढंग से पालन करते हैं। जब कभी भी कोई ऐसी चीजें जो इनके लिए हानिकारक हों और इनमें मिलकर इनके गुणों को कम कर दें, तो इससे पर्यावरण का नुकसान होता है। ये सभी तत्त्व दूषित होने लगते हैं, जिसको पर्यावरण प्रदूषण कहा जाता है। कारखानों से निकलने वाला कचरा और धुआं, लगातार तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, शहरों में हुए वाहनों की वृद्धि, कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा में हुई वृद्धि, पेड़ो की कटाई, शहरीकरण तथा खेतों में प्रयोग किए जाने वाले उर्वरक आदि कारक सभी पर्यावरण को दूषित करने में अपनी भूमिका निभाते हैं।

★★★★★

जल का महत्त्व

बोबी शर्मा
बी. ए. (द्वितीय वर्ष)

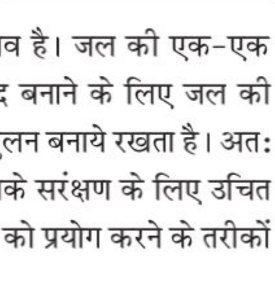

पेयजल प्रकृति की अमूल्य देन है। जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है। हमारी पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है। जिस पर जीवन सम्भव है क्योंकि यहाँ जीवन को सम्भव बनाने हेतु सभी जरूरी चीजें उपलब्ध हैं। हमारी पृथ्वी का 71% (प्रतिशत) भाग जल है। लेकिन इसमें पीने लायक जल बहुत अल्प मात्रा में है। समस्त प्राणी जगत चाहें वो मनुष्य हो, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, सभी का जीवन जल पर निर्भर है जल प्रत्येक जीवन की आवश्यकता है। मनुष्य को पीने, नहाने, सफाई करने व कपड़े धोने के लिए जल की आवश्यकता होती है।

अन्न के बिना तो हम जीवित रह सकते है, परन्तु जल के बिना जीवित रहना असम्भव है। जल की एक-एक बूँद कीमती है। अत: हमें इसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए। हमें बिजली व अन्य उत्पाद बनाने के लिए जल की आवश्यकता होती है। जल बहुत ही महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो पर्यावरण में संतुलन बनाये रखता है। अत: इसे दूषित होने से तथा व्यर्थ जाने से बचाना चाहिए, इसके महत्व को समझते हुए इसके सरंक्षण के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। जिनमें वर्षा जल संग्रहण प्रमुख है। इसके साथ ही हमें अपने जल को प्रयोग करने के तरीकों को भी सुधारना होगा तभी हमारा भविष्य भी सुरक्षित हो पाएगा।

★★★★★

NAAC
3rd Cycle
B Grade

नेटवर्क मार्केटिंग

नाजिया सहीद
एम.ए. (पूर्वार्द्ध)

नेटवर्क मार्केटिंग " इक्कीसवीं सदी का व्यापार "। आज यह मार्केटिंग लेविल बहुत ऊपर पहुँच चुका है। नेटवर्क मार्केटिंग अर्थात ' डायरेक्ट सैलिंग बिजनेस '। यह इक्कीसवीं सदी का इकलौता ऐसा व्यापार है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भगवान की एक अनमोल देन साबित होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह होगी जब आपका डायरेक्ट सैलिंग का व्यापार 'स्वास्थ्य विभाग में हो। क्योंकि कभी भी कोई ऐसी मशीन या चिप नहीं बनी जिसे इंसान के अदंर लगा देने से उसे भूख लगना बंद हो जाए या बुखार आना बंद हो जाए। इसलिए मेरी राय में डायरेक्ट सैलिंग का व्यापार स्वास्थ्य विभाग में ही होना चाहिए। क्योंकि इससे इंसान स्वस्थ भी रहेगा साथ ही धनवान भी बनेगा।

परन्तु मैंने देखा है कि बहुत से लोग इसमें असफल हो जाते हैं और कुछ ही ऐसे होते हैं जो सफल हो पाते हैं। असफल होने वाले कह देते हैं कि "इन कामों से कुछ नहीं होता, यह बेकार के काम हैं।" परन्तु मेरी राय में न करने वाले किसी काम को नहीं करने के हजार बहाने ढूँढ लेते हैं परन्तु करने वालों को सिर्फ अपना लक्ष्य दिखता है। असफल होने वाले असफल इसलिए होते हैं क्योंकि वह सिस्टम के साथ नहीं चलते परन्तु यदि वह पूरी ईमानदारी से सिस्टम के साथ चलें और अपने लक्ष्य को साथ रखने वाले हों तब वह अवश्य ही कामयाबी को पा लेंगे। तब वह इस बात को भी मान लेंगे कि "इस व्यापार को करने वाले लोग अवश्य ही कामयाब होते हैं।"

दूसरे प्रकार के वह लोग होते हैं जोकि हार मान लेते हैं क्योंकि नेटवर्किंग करना आसान नहीं है। वे बस एक बात बोलते हैं कि - "यह व्यापार व्यक्ति के सिर का पसीना पैरो में ला देता हैं।" बिल्कुल सही कहते है। यह व्यापार मेहनत और लगन माँगता है और कामयाबी भी उतनी ही बड़ी देता है। परन्तु लोग इसे नहीं कर पाते और हार जाते हैं। परन्तु इसके विपरीत कुछ काबिल लोग वह भी होते हैं जो कभी भी कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हार नही मानते हैं। अंततः निष्कर्ष यही निकलता है कि इस इक्कीसवीं सदी के व्यापार को पूरी मेहनत और सिस्टम के साथ करें ताकि कामयाबी खुद आपके पास चलकर आए।

अतः "नेटवर्किंग बहुत आसान नहीं होती, यह सबके बस की बात नहीं होती। कुछ लोगों के हौसलें और सपने बुलन्द होते हैं। "वरना पंखों के बिना तो यूँ ही उड़ान नहीं होती।"

कम्प्यूटर ने मनुष्य को नया जीवन प्रदान किया है। यूनिकोड एक अन्तर्राष्ट्रीय मानक कोड है, जिसमें हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व की लगभग 200 भाषाओं के लिए कोड निर्धारित किए गए हैं। हिन्दी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब हर कम्प्यूटर, लैपटॉप यहाँ तक कि स्मार्टफोन पर भी हिन्दी में काम करना व करवाना बड़ा ही सरल हो गया है।

★★★★★

बेटियाँ-बेटों से कम नहीं

दीक्षा सागर
बी.एस-सी.(द्वितीय वर्ष)

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

समाज रूपी गाड़ी को चलाने के लिए महिला एवं पुरुष रूपी दो पहियों की आवश्यकता होती है। स्त्री एवं पुरुष हमारे समाज के आधार स्तम्भ हैं। किन्तु समानता के विषय में दोनों के मध्य एक चौड़ी खाई है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे परस्पर नदी के दो किनारो पर खड़े हों। जिनमें एक शासक और दूसरा शासित है। यदि व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाये तो भारतीय नारी के पाँवो में बेड़ियाँ पहनाने का काम धर्म ने भी किया है। यह अपने आप में प्रबल प्रमाण हैं। महिलाएँ स्वभावत: धार्मिक होती हैं।

धार्मिक ग्रन्थों एवं पुस्तकों में नारी अधिकारों पर न केवल डाका डाला गया है बल्कि उसके दासत्व स्वीकार करने का षडयन्त्र भी रचा गया है। पुरुष प्रधान समाज ने शायद यह व्यवस्था अपनी सुविधा को ध्यान में रखकर निर्मित की है। जो पुरुष को असीमित अधिकार प्रदान करती हैं। परिवार में नारी की स्थिति अथवा स्थान के विषय में एक श्लोक है -

" पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति: यौवने, रक्षति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्रमर्हति "

अर्थात नारी बाल्यकाल में पिता द्वारा, यौवनकाल में पति द्वारा और वृद्धावस्था में पुत्र द्वारा रक्षित होगी। स्त्री को कभी इनसे अलग रहकर स्वतन्त्र रहने का विधान नहीं है। अत: वह अपने कर्तव्य के गुरूतर भार को सहर्ष वहन करती हुई मानव को विकास करने के लिए सक्षम बनाती है। कहा जाता है कि प्रत्येक सफल पुरूष की सफलता के पीछे एक नारी का हाथ होता है। देश के किसी भी क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रगति को जानने के लिए उस देश की बेटियों की स्थिति एवं स्तर का आँकलन आवश्यक है, जिसे शिक्षा के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। देश की महिला का शिक्षित होना उतना ही आवश्यक है जितना कि पुरुष का। स्त्री के शिक्षित होने से परिवार, समाज तथा देश विकास के मार्ग पर तीव्र गति से दौड़ेगा।

यूरोप एवं अमेरिका जैसे विकसित देशो में स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार मिल चुके हैं।यहाँ स्त्रियाँ पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं किन्तु भारत में शिक्षा के अभाव के कारण इनका कार्यक्षेत्र सीमित है।

नारी अपने परिवार एवं कार्यक्षेत्र दोनो में सामन्जस्य बैठाकर अपनी भूमिका का सफल निर्वहन करती है। इस दोहरी भूमिका में उसे अनेक चिन्ताओं, तनावों, प्रतिवलों से गुजरना पड़ता है। दुनिया में लगभग आधी जनसंख्या बेटियों के होने के बाबजूद पुरूषों द्वारा इनका शोषण किया जाता रहा है जिसे रोकने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कानून बनाये गये हैं, जिनमें महिलाओं को समानता, स्वतन्त्रता एवं सर्वांगीण विकास के समुचित अवसर प्रदान किये गये हैं।

प्राचीन काल से अब तक भारतीय नारी विभिन्न आयामों से गुजरी है। वह विकास की जिस दहलीज पर कदम रख रही है वहाँ से अनेक रास्ते जाते हैं। इन्ही मार्गो में वह अपने मुकाम की खोज कर रही है। आर्थिक आजादी पाने की चाह और अपनी पहचान बनाने के लिए उसने घूँघट का गला घोंट कर, घर की चार दीवारी लाँघकर विकास की मुख्य धारा में शामिल होने का प्रयत्न किया है। वह यह नहीं चाहती कि वह दूसरो पर आश्रित होकर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे। इस सम्बन्ध में सन्त रविदास ने कहा है-

पराधीन का दीन क्या, पराधीन वे दीन।
रविदास पराधीन को, सब कोई समझे हीन।।

मनुष्य को कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। देश की बेटिंया अनेक उत्तरदायित्वों के बोझ के तले दबी हैं। वैचारिक आजादी की चाह से परिवारों की समरसता व रिश्तो में दरार पड़ने लगी है। अभिभावकों द्वारा बेटी को बेटे की मानसिकता से पालना उस सोच का विकास कर रहा है जहाँ वह हाई प्रोफाईल होकर पैसा, शौहरत, कामयाबी को अपना लक्ष्य समझने लगी है। इस प्रकार नारियाँ सन्तानोत्पति, मनोरंजन का साधन, धनोपार्जन का उपकरण बनती जा रही हैं। दूसरी ओर महिलाएं देश की राजनीति में बढ़ चढ़ कर भाग ले रही हैं।

इसमें प्रथम नाम भारत की प्रथम (नागरिक) राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिला जी का है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती, कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमारी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

21 वीं सदी में महिलाओं की आर्थिक स्वावलम्बन की तरफ बढ़ते कदम उसे आर्थिक सम्बल दे रहे हैं। महिलाएँ सफलता के शिखर पर चढ़ रही हैं। कामयाबी के साथ उनकी सामाजिक एवं आर्थिक तस्वीर बदल रही है। समाज के सभी पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्रो में महिलाओं ने प्रवेश कर लिया है। विगत दो दशकों से वैश्विक परिदृश्य में इनका ग्राफ काफी ऊंचा उठा है। महिलाओं ने अपनी क्षमता एवं दक्षता से सबको आश्चर्यचकित कर दिया है।आज हमारे देश में विश्व की सर्वाधिक व्यावसायिक प्रशिक्षित महिलाएँ हैं। भारत में सभी विकासशील देशों की अपेक्षा अधिकतर महिलाएँ डॉक्टर, सर्जन, वैज्ञानिक, पत्रकार, प्रोफेसर, तकनीकी विशेषज्ञ हैं। अपनी मेहनत और लगनशीलता के बल पर महिलाएँ आज अनेक कम्पनियों और प्रतिष्ठित संस्थाओं की मैनेजिंग डायरेक्टर जैसे महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं। किसी भी राष्ट्र का विकास तभी सम्भव है जब वहाँ की महिलाएँ विकसित हों। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 64 वर्ष गुजर जाने के महिलाओं के समाजिक एवं आर्थिक स्तर में सुधार लाने के लिए नियोजित विकास की रणनीति के अन्तर्गत विकास के कार्यक्रमों में महिलाओं की अधिकतम सहभागिता बढ़ाने के अनेक प्रयास किये गये हैं। इनके शैक्षणिक स्तर में सुधार होने से महिलाओं के अधिकारों के साथ सामाजिक एवं आर्थिक स्त्तर के प्रति जागरूकता में वृद्धि होगी, जिससे महिलाओं का विभिन्न रोजगार की श्रेणी में वर्चस्व कायम रहेगा।

आर्थिक विकास के साथ-साथ महिलाओं की व्यावसायिक प्रकृति में भी वृद्धि हुई हैं। सभी क्षेत्रों में महिलाएँ सक्रिय होती दिखाई दे रही हैं। देश की आजादी के बाद अनेक महिलाएँ विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। लगभग 200 महिलाएँ जिला पंचायत अध्यक्ष चुनी गयीं हैं। 25% महिलाएँ भारत के सोफ्ट वेयर उद्योग में कार्यरत है। बेटियां आर्थिक रूप से सशक्त होने के साथ-साथ निर्णायक भूमिका भी निभाने लगी हैं। धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रो में महिलाओं ने अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। पिछले एक दशक से - कार, मोबाइल फोन, व महंगे बिजली के उपकरण खरीदने वाली महिलाओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। वे व्यवसाय के साथ-साथ संघ भी बना रही

हैं। वृंदाकरात, कंचन सी भटटाचार्य, आशा नारायण लावां, वन्दना लूथरा, किरण मजूमदार, जया राव, शोभना भरतरिया, प्रीती रेड्डी वसुन्धरा राजे आदि महिलाओं ने तरक्की के द्वार खोल दिये हैं।

आज बेटिया-बेटों के साथ बराबरी के पायदान पर खड़ी हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनियों के बड़े-बड़े पदो पर महिलाएं भी हैं। भारतीय महिलाएँ शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी अपनी रूचि दर्ज करा रही हैं। महिलाएं घर और बाहर की दुनिया में सन्तुलन बनाते हुए अपने अस्तित्व के साथ जीने की कोशिश कर रही हैं। बेटियां देश के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हो रही हैं। महिला साक्षरता में वृद्धि होने से उद्यमिता और रोजगार के अवसरो में वृद्धि हुई है। सेवा क्षेत्र, सूचना प्रौद्यागिकी, रिटेल, व्यावसायिक और वित्तीय सेवाएं ट्रेवल, मनोरंजन, होटल, मीडिया, कैटरिंग, काल सेन्टर और बी0 पी0 ओ0 में महिलाओं को काम में अवसर प्राप्त हो रहे हैं।

★★★★★

संघर्ष ही जीवन है

बन्टी सिंह
बी.ए.(प्रथम वर्ष/एन.सी.सी.)

कहते हैं कि जब ईश्वर ने आदमी को स्वर्ग से निकाला था तो उससे कहा था कि तुम पसीना बहाकर ही जी सकोगे। ऐसा कौन सा मनुष्य है जो हाथ पे हाथ धरे बैठा रहे, तिनका न तोड़े और सुखी जीवन व्यतीत करे। सफलता आत्मविश्वास की कुँजी नही है, पर परिश्रम करने की प्रेरणा जरूर देता है। जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष अनिवार्य है। संसार में कुछ ही व्यक्ति जी सकते है जो पूरी तरह से दूसरो पर आश्रित रहकर पशुओं के समान जीते रहते हैं लेकिन क्या उनका जीवन भी कोई जीवन है।

" सांस एक अनुभूति है, जीवन एक अभिलाषा।
संवर गई तो दुल्हन है, बिखर गई तो तमाशा।। "

आश्रित व्यक्ति न तो अपनी किसी आशा, आकांक्षा की पूर्ति कर सकते हैं और न ही अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। केवल भर पेट खाकर अपनी साँसों श्वासों को पूरा करना जीवन नहीं है। अगर मनुष्य को जीवन जीना है तो संघर्ष करना ही पड़ेगा अर्थात्'संघर्ष ही जीवन है'।

★★★★★

" परीक्षा में तनाव से कैसे रहें दूर "

डॉ० प्रदीप कुमार
असि० प्रो० बी०एड० विभाग

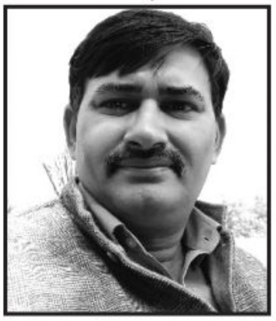

जीवन एक संघर्ष है जिसमें प्रत्येक मोड़ पर चुनौती और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अक्सर देखने में आता है कि युवा विभिन्न बोर्डो/प्रतियोगी परिक्षाओं में तनाव ग्रस्त हो जाते हैं। जिससे कि परीक्षाफल सकारात्मक नहीं आ पाता है। प्राय: देखने मे आता है कि अभिभावक भी मानसिक दबाव युवाओं पर बनाकर रखते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि युवाओं का व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है।

संतोष कुमार पाण्डेय
बी०एड० प्रथम वर्ष

आज प्रतिस्पर्धा के दौर में युवाओं को अपने आप को तनाव से दूर रखने के लिये कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए, जिससे कि वह प्रतियोगिताओं में सफलता पा सकें। सर्वप्रथम प्रतियोगियों को अपनी परीक्षा पर फोकस करते हुये समयबद्ध कार्ययोजना एवं बेहतर रणनीति के साथ एवं गंभीर दृष्टिकोण से तैयारी करनी चाहिए। तनाव का मुख्य कारण भय होता है, अत: यह जरूरी है कि युवाओं को असफलता के भय को अपने मन से निकाल देना चाहिए, एवं पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परीक्षा कार्ययोजना को क्रियान्वित करने पर फोकस करना चाहिए। परीक्षा की तनाव रहित तैयारी के लिये सम्बंधित विषय वस्तु (सिलेवस) की तैयारी परीक्षा समय सारणी के हिसाब से करें। उपलब्ध अच्छे अध्ययन सामग्री भी तनाव रहित परीक्षा के लिये उपयोगी हैं। परीक्षार्थियों को परीक्षा केन्द्र का भ्रमण भी परीक्षा से पूर्व कर लेना चाहिए। परीक्षा दिनांक में छात्र एक घण्टा पूर्व परीक्षा केन्द्र पहुँचना सुनिश्चित करें, जिससे देरी होने के अनावश्यक दवाब से मुक्त रहा जा सके । परीक्षार्थियों को यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि परीक्षा केन्द्र पर प्रतिबंधित सामग्री जैसे मोबाइल फोन, कैलकुलेटर, किताब या अन्य मुद्रित सामग्री आदि नहीं लाना चाहिए। परीक्षा में सर्वप्रथम उत्तरपुस्तिका में भरी जाने वाली डिटेल ध्यान से भरें, कोई शंका हो तो कक्ष निरीक्षक से भी सहायता लें, न की दूसरे परीक्षार्थियों से। प्रश्नपत्र को ध्यान पूर्वक पढ़कर सबसे पहले सरल एवं अन्त में जटिल प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए हड़बड़ाहट एवं जल्दबाजी से लेखन शैली प्रभावशाली नहीं रहती है। अत: परीक्षर्थियों को सहज एवं शांतभाव से लिखना चाहिए। उत्तर में चित्र डाइग्राम बनाने से भी अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। दिये गये उत्तरो में महत्वपूर्ण बिन्दुओं एवं कोटेशन को हाइलाइट करना भी अच्छे अंक दिलाने में सहायक होते हैं। इस प्रकार स्पष्ट, स्वच्छ एवं सुंदर लेखन शैली अच्छे परीक्षा परीणाम में फलित होते हैं।

★★★★★

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन क्रांन्ति की मशाल

दाऊद खां
बी.ए.(प्रथम वर्ष)

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन ब्रिटिश भारतीय मुठभेड़ का परिणाम था। किसी भी गुलाम देश में राष्ट्रीय चेतना नवजागरण के विकास का अगला चरण हुआ करती है। भारत में स्वतंत्रता संघर्ष की भावना अंग्रेजी साम्राज्यवाद के दबाव से ही पनपी थी। अंग्रेजी शोषण के अखिल भारतीय स्वरूप के खिलाफ अखिल भारतीय प्रतिक्रिया के रूप में राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई थी। बढ़ती नसली तनाव धर्मान्तरण के डर और बेंथमवादी प्रशासकों के सुधारवादी उत्साह ने पढ़े-लिखे भारतवासियों को मजबूर कर दिया कि वे ठहरकर अपनी संस्कृति पर नज़र डालें। भारतीय सभ्यता किसी भी तरह पश्चिमी सभ्यता से हीन नहीं है बल्कि अपनी आध्यात्मिक सिद्धियों से उससे भी श्रेष्ठ है। इसी क्रम में भारतेन्दु हरिचन्द्र ने हिन्दी साहित्य को नवजागरण के आधार के रूप में प्रस्तुत किया।

देश में जब 1857 की क्रान्ति का बिगुल बजा, उस समय भारतेन्दु जी मात्र सात वर्ष के थे। परन्तु इसके दस-पन्द्रह वर्षों बाद शुरू हुये उनके लेखन (विशेष तौर से नाटकों) को देखें तो लगता है उन्होनें वहीं से शुरू किया जहाँ से इस आन्दोलन को दबा दिया गया था। अगर मैं यह कहूँ कि यह क्रान्ति दबी नहीं बल्कि स्थानान्तरित हो गई तो इसमें कोई शंका नहीं होनी चाहिए। झांसी की रानी, नाना फणनवासी, तांत्या टोपे आदि की हाथों की तलवारें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनके मंडल के हाथों में कलम बनकर आ गई। उसका प्रमाण उनकी साफगोई है, जो सीधे-सीधे कह सकी।

भारतेन्दु जी का मूल उददेश्य था समाज के सत्य को कहना न कि कलात्मक उत्कर्ष। भारतेन्दु जी ने अंग्रेज़ राज्य को सीधे-सीधे 'अंधेरनगरी' कहा। यह भारतेन्दु का ही दंभ था, जो 'टका सेर भाजी, टका सेर खाजा' वाली व्यवस्था को दो टूक ढंग से बेनकाब कर सके। 'भारत दुर्दशा' का कारण सत्ता की नाकामी है।

यह बात सत्य है कि लड़ाई व टकराहट तथा आत्मावलोकन व आत्मालोचन एवं अंग्रेजी सत्ता पर, खुले व्यंग्य व प्रहार के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु जी के नाटक 1857 की क्रांन्ति की मशाल साबित हुए।

★★★★★

राष्ट्रीय कैडेट कोर

कैडेट - विजेन्द्र कुमार
UD/18/SDA/287617

भारत सरकार ने 1946 में पं0 हृदयनाथ कुंजरू की अध्यक्षता में "राष्ट्रीय कैडिट कोर समिति" की स्थापना की। इस समिति ने संसार के विकसित देशों द्वारा युवकों को सैन्य प्रशिक्षण का गहराई से अध्ययन करने के पश्चात मार्च 1917 में विस्तृत रिपोर्ट सरकार को सौंपी। 16 जुलाई 1948 को, 1948 के एन० सी०सी० अधिनियम के द्वारा रक्षा मन्त्रालय के अधीन "राष्ट्रीय कैडिट कोर" की स्थापना की गई और एन० सी० सी० कैडिट को सैनिक दृष्टि से प्रशिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया। राष्ट्रीय कैडिट कोर सफल संचालन के लिए रक्षा मन्त्रालय में " राष्ट्रीय कैडिट कोर" निदेशालय की अप्रैल 1948 में स्थापना की गयी और कर्नल जी० जी० बैबूर सैनिक अधिकारी को उसका प्रथम निदेशक नियुक्त किया गया।

सन् 1949 में स्कूल व कॉलेज की छात्राओं को छात्रों के समान अवसर देने के लिए छात्रा प्रभाग आरम्भ किया गया था। 1950 में राष्ट्रीय कैडिट कोर में वायुसेना स्कंध तथा 1952 में नौसेना स्कंध के जुड़ जाने पर इसे अंतर सेवा का स्वरूप दिया गया । सन् 1960 तक देश के स्कूलों व कॉलेजों में एन०सी०सी० के लिए माँग बहुत बढ़ गई। बढ़ती हुई माँग पूरी करने के लिए एक संगठन एन० सी०सी०राइफल्स की स्थापना की गई। चीनी आक्रमण के बाद राष्ट्र की आवश्यकता पूरी करने के लिए 1963 एन०सी०सी० प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया और 1964 में एन० सी०सी० राइफल्स को एन० सी० सी०में मिला दिया गया, तथापि अनिवार्य एन० सी० सी० प्रशिक्षण के विरूद्ध छात्रों के विरोध तथा कुछ विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के सुझाव पर 1968 में एन० सी० सी० को फिर से स्वैच्छिक बना दिया गया। वर्ष 1997 में इसके पाठयक्रम में खेलकूद को शामिल कर दिया गया वर्ष 2006 में एन०सी० सी० के पाठयक्रम में फील्ड इंजीनियरिंग, कम्न्यूकेशन, ऑब्सटिकल ट्रेनिंग तथा पाश्वर प्रशिक्षण को शामिल कर लिया गया है।

आज एन० सी० सी० की कुल नफरी 13 लाख से अधिक है। इसको प्रशिक्षण करने हेतु देश में 96 ग्रुप हेडक्वाटर्स 667 आर्मी विंग यूनिट्स, 60 नेवल विंग यूनिट्स तथा 61 एयर स्क्वाड्रन कार्यरत हैं। राष्ट्रीय कैडिट कोर का नेटवर्क केन्द्रशासित अण्डमान निकोबार तथा लक्षद्वीप, ऊँचाई में लेह, पश्चिम में कच्छ तथा पूर्व में कोहिमा तक फैला हुआ है। एन०सी० सी० से देश के लगभग 4560 कॉलेजों और 7106 स्कूलों के छात्र-छात्राएँ लाभान्वित हो रहे हैं।

★★★★★

नारी संवेदना

ज्योति कुमारी
बी०एड० (द्वितीय वर्ष)

ये कहानी मेरे लिए कोई अनुभव नहीं, बल्कि ये मेरी आँखों देखी घटना है। जब मैं स्कूल की छुट्टी मनाने अपने गाँव गई। मैं अपने गाँव पहली बार गई थी। तब मैंने अपने गाँव में महिला पर उसके पुरूष द्वारा अत्याचार का ऐसा दृश्य देखा। जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी। मैं उस दृश्य को देख कर भयभीत हो गई। वहाँ पुरुषों द्वारा महिलाओं पर इतना अत्याचार व उत्पीड़न किया जाता था, पर वहाँ महिलायें सब कुछ सह कर भी बंदिश भरी जिदंगी गुजार रही थीं। वहाँ गाँव में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को देखकर मैंने यह सारी बात अपने घरवालों को बताई, तो उन्होंने मुझसे कहा-तुम चुप रहो और चुपचाप अपने कमरे में जाओ क्योंकि जो बात मैं अपने घरवालों को बताना चाहती थी, वह पहले से ही सारी घटना जानते थे। कोई भी उसके पक्ष में कुछ कहने को तैयार ही नहीं होते थे। एकबार मैंने अपने घर के आस-पास अजीबो- गरीब आवाज सुनी। मैं चुपचाप बिना किसी को बताए वहाँ चली गई। मैंने वहाँ देखा की वहाँ पर पुरुष खुद अपनी ही पत्नी को बुरी तरह पीट रहा था। लेकिन मैं खुद मज़बूर थी। उस समय मैं कुछ कर भी नहीं सकती थी, और फिर मुझे निराश होकर घर वापस आना पड़ा। अगली सुबह मैंने उस महिला को बाजार की ओर जाते हुए देखा। तभी मैंने अपने मन में निश्चय किया की आज मैं इस महिला पर हो रहे अत्याचारों के बारे में जरूर पूछूँगी। जैसे ही वह महिला अपने घर से नज़दीक आई तो मैंने उससे पूछा की आपके पति आपके साथ इतना अत्याचार क्यों करते हैं। वो आपको क्यों मारते-पीटते हैं। आप मुझे अपनी सारी घटना बताओ - मैं आपकी मदद जरूर करूँगीं! जैसे ही वह मुझे अपनी बातें बताती है तो अचानक उसने अपने पति की आवाज सुनी तो बिना कुछ बताए वह महिला अपने घर की ओर चली गई। मुझे निराश होकर अपने घर वापस आना पड़ा। मैं बैठे- बैठे सोचा करती थी। आखिरकार हमारा देश आजाद है, तो क्या आजादी का हक केवल पुरूषों को ही है। हम महिलाओं को नहीं । यह कथन बार-बार मेरे कानों में गूँजता रहता था। तभी फिर हिम्मत जताते हुए मैंने अपनी माँ से कहा- अगर आज आप इस महिला की मदद नहीं करेगी तो माँ मैं भी एक महिला हूँ। अगर यह अत्याचार दुर्व्यवहार मेरे साथ होता तो क्या आप भी इस तरह मुझे चुप होकर सब कुछ सहने

करूणा भरे स्वर में माँ ने मुझसे कहा- बेटी हम कर भी क्या सकते हैं। तुम ही बताओ तभी मैंने अपनी माँ को सुझाव देते हुए कहा कि माँ सबसे पहले हम उस महिला से उसके साथ हो रहे दुर्व्यवहार का कारण पूछेंगे। और उस महिला की हर सभंव मदद करेंगे। तभी अगले दिन मैं और मेरी माँ खुद उस महिला के घर गये जिस समय उसका पति घर में मौजूद नहीं था। तभी मेरी माँ ने उस महिला से कहा- बहन आखिर क्या कारण है जो तुम्हारा पति तुम्हारे साथ इतना अत्याचार करता है। तभी उस महिला ने करूण स्वर में अपनी सारी घटना मेरी माँ को बताई और कहा- बहन मेरी भी सिर्फ बेटियाँ हैं और उसे बेटियों से नफरत है। वह सिर्फ बेटा ही चाहता है। और इसी बात के कारण वह मुझे प्रताड़ित करता रहता है। वह कहता है कि "बेटा ही तो बुढ़ापे में माँ-बाप का सहारा बनता है न की ये बेटियाँ" परन्तु फिर भी मैं चुपचाप सहती रहती हूँ क्योंकि मुझे यकीन है मैं नहीं तो मेरी बेटियाँ ही कामयाब हो कर बेटों की कमी को पूरा करेंगी। परन्तु फिर भी मैंने मजदूरी कर अपनी बेटियों को पढ़ाया। माँ ने कहा-बहन आज से तुम्हे किसी भी तरह की मार व अत्याचार को नहीं सहना पड़ेगा! उसी रात माँ ने घर आकर सारी घटना घरवालों को बताई तो उनकी रूह भी काँप गई हम सबने यह योजना बनाई और हम सब उस महिला के घर पहले से ही मौजूद हो

गए। जैसे ही उस महिला का पति लड़खड़ाता और शराब पीते हुए घर में आया और अपनी पत्नी को पुकारा, वह उसे मारता तभी उस महिला ने उसका हाथ पकड़ लिया। हम सब भी वहाँ उपस्थित हो गए। मेरे दादाजी ने उस आदमी को बहुत समझाया और कहा जब आज समाज बेटा/बेटी में भेदभाव नहीं करता तो फिर तुम क्यों भेदभाव करते हो " मेरे दादाजी ने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई। मेरी माँ ने कहा जब अगर आज समाज में देखा जाए तो हर क्षेत्र में बेटी आगे है, चाहे वो शिक्षा का हो या खेल का। बेटियाँ हर क्षेत्र में उन्नति की ओर अग्रसर हैं। क्योंकि महिला वो शक्ति है, संवेदना है वो। भारत की नारी है, न ज्यादा में न कम में, वो सबमे बरावर की अधिकारी है।

उस आदमी को अपने किये पर पश्चाताप हुआ और उसने सभी से माफी माँगते हुए कहा- कि मैं भी बेटा/ बेटी में भेदभाव नही करूँगा और अपनी बेटियों को पढ़ा-लिखा कर उन्हे अफसर बनाऊँगा। तभी मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य अपने घर की ओर आ गये । वह महिला व उसका परिवार भी अब खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा है। क्योंकि

"महिला शक्ति है, संवेदना है, वह भारत की नारी है।
ज्यादा में न, कम में, वह बराबर की अधिकारी है।"

★★★★★

विनम्रता

कु० माला
एम०ए० (प्रथम वर्ष)

नमन्ति सफला: वृक्षा नमन्ति सज्जना: जन:।
शुष्कं काष्ठं च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन:।।

फलों से लदे पेड़ झुके रहते हैं। उसी प्रकार सज्जन पुरूष अत्यन्त विन्रम होते हैं। परन्तु सूखा काष्ठ और मूर्ख - ये दोनों कभी नहीं झुकते, अकड़े ही रहते हैं। कहने का आशय यह है कि महानता सदा विनम्र बनाती है। तुच्छता अपने आप को श्रेष्ठ मानकर सदा गर्दन उँचा किए रहती है।

प्राचीन युग सें भारत एक आध्यात्मिकता प्रधान देश रहा है। परन्तु वर्तमान में नैतिक मान्यताएँ धीरे-धीरे विलुप्त होती चली जा रही हैं। इसके चलते मनुष्यों में विनम्रता की भावना एवं विनम्रता के गुणों का ह्रास हो रहा है। आज के युग में जब देखो तब किसी न किसी क्षेत्र में आन्दोलन या क्रान्ति लाने के लिए आह्वान किया जाता है। लेकिन यदि सच पूछें तो वर्तमान युग में अगर किसी क्रान्ति की जरूरत है, तो वह है नैतिक क्रान्ति की। देश के उत्थान के लिए जरूरी है कि नागरिकों का नैतिक चरित्र मजबूत बनाया जाए।

"अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाए।
आग बहती हैं यहाँ गंगा में, झेलम में भी कोई बतलाए कहाँ जाके नहाया जाए।
ये बाग सबका है या सिर्फ चन्द लोगों का, ये फैसला तो बहुत जल्द होने वाला है।
जिसे हवाओं के रुख़ का नहीं हो अन्दाजा वो शख्स जान लो कश्ती डुबोने वाला है।। "

★★★★★

अविस्मरणीय यात्रा

किशन सैनी
बी०एड० (प्रथम वर्ष)

अपने जीवन काल में मनुष्य को अनेक यात्राओं का अनुभव होता है। कुछ यात्राएँ लोग सुख व मनोरंजन के लिए करते हैं तो कुछ आवश्यकता-परक होती हैं। मेरी यात्रा मनोरंजन एवं आवश्यकता का मिश्रित रूप थी। जब मुझे रेलवे ग्रुप डी की लिखित परीक्षा के लिए देहरादून जाना पड़ा था। मेरी परीक्षा 26 सितंबर 2018 को थी, इसलिये मैंने 25 सितंबर की रात को गंतव्य स्थान देहरादून के लिए ट्रेन पकड़ी। मेरे साथ मेरा भाई भी था। ट्रेन में अत्यधिक भीड़ हाने के कारण सीट नहीं मिल पाई और फिर पूरा सफर खड़े होकर ही तय करना पड़ा। इसलिए हम काफी थक गए थे। देहरादून पहुँचकर हमने प्लेटफार्म पर आराम किया उसके बाद फ्रेश नाश्ता किया और परीक्षा केंद्र के लिए ऑटो पकड़ा। परीक्षा समाप्त होने के बाद हम दोनों भाई स्टेशन पर आ गए। वहीं हमने दोपहर का खाना भी खाया। मैं स्टेशन पर पूछताछ के लिए गया तो पता चला कि मुरादाबाद के लिए ट्रेन रात 9:00 है। तब हमने सोचा क्यों न कहीं घूमा आयें-

" सैर कर दुनिया की गाफिल, जिंदगानी फिर कहां ? जिंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहां ? "

हम दोनों भाई ने मसूरी जाने का निर्णय लिया और बस पकड़कर 'पर्वतों की रानी कहीं जाने वाली मसूरी के लिए निकल पड़े।' मैंने सहयात्रियों से पता किया तो मालूम हुआ कि मेरा गंतव्य स्थान देहरादून बस स्टैड से 35 किलोमीटर दूर है। अभी हम लगभग 10-15 किलोमीटर ही चले होंगे कि ताजगी से भरी हवाएं महसूस होने लगीं। हमारी बस घुमावदार रास्तों से ऊपर की और बढ़ती चली जा रही थी। थकान के बावजूद मुझे यह पर्वतीय यात्रा बहुत सुखद लग रही थी। शहर की भीड़भाड़ व कृत्रिमता से दूर प्रकृति का वास्तविक आनंद मुझे पुलकित कर रहा था। दूर -दूर तक हरियाली ही हरियाली नजर आ रही थी। बस से नीचे की ओर फैली गहरी घाटियों को देख कर मन सिहर उठता था। घुमावदार रास्तों पर इधर -उधर लुढ़कते हुए मसूरी पहुँचे।

पहाड़ों पर बड़े-बड़े होटल, दुकानें, भवन, बसें देखकर मैं तो हैरान रह गया। वहाँ का नज़ारा आज भी मुझे याद आता है। नीचे की ओर देखने पर घाटियों में बादल इस प्रकार नजर आ रहे थे कि मानो हम आसमान से भी ऊपर आ गए हों। एक सहयात्री ने बताया कि आगे 15 किलोमीटर ऊपर झरना है जिसका नाम केंपटी फॉल था। वहाँ जाकर देखा कि वह एक विशाल घाटी में गिर रहा है। घाटी में उतरने के लिए सीढ़ियां थी। सीढ़ियों से उतर कर हम झरने के पास पहुँचे। झरने के पास जल प्रवाह के साथ ठंडी हवा और फुहार चारों तरफ फैल रही थीं और गिरते पानी की आवाज़ मन को मोह रही थी। वहाँ झरने में नहाने की व्यवस्था भी थी। हमने कपड़े उतारे और नहाने लगे। हमे पहली बार किसी झरने में नहाने का अवसर प्राप्त हुआ था। झरने का पानी अत्यधिक ठंडा था जिस कारण हम झरने में ज्यादा देर तक नही नहा पाए। नीचे की ओर झरने के पास कई छोटे-छोटे रिसॉर्ट्स और तालाब बनाए गए थे जिनमें नौका-विहार की व्यवस्था थी। वहाँ का दृश्य अत्यंत मनमोहक था। पहाड़ी की ढलान हरे-भरे वनों से ढकी हुई थी। वहाँ हमने कुछ फोटो खींचे और कुछ समय तक हमने उन घाटियों का आनंद लिया तभी किसी दुकानदार ने बताया कि वहाँ से देहरादून के लिए आखिरी बस का समय हो गया है। इसलिए हम जल्दी से सीढ़ियों के द्वारा

से ऊपर आ गये। अभी हमे आए हुए 10 मिनट ही हुए होगें कि बस आ गई और हम बस में बैठ गए और फिर हम घुमावदार रास्तों पर इधर उधर लुढकते हुए देहरादून पहुँचे और वहाँ से ट्रेन पकड़ कर घर आ गए। यह पर्वतीय यात्रा मेरे लिये अविस्मरणीय है।

★★★★★

मंज़िल

हिना जहूर
बी० ए० (प्रथम वर्ष)

ये कौन सी राह है,
अन्जान सी डगर है,
न कोई साथी न हमसफ़र है,
भटकने का डर है,
कदम रूकते हैं,
फिर चलते हैं।।

मंजिल को ढूँढते हैं,
शायद मंजिल पाना ही नियति है,
पर मेरी राह तो दुश्कर है,
अनन्त है, असीम है, इसमें चलकर
ही पाना है, न हारना है, न घबराना है,
मन की व्यथा को दूर भगाना है।

जब राह ही मंजिल बन जाए,
तब न पाने का सुख और न खोने का दु:ख हो,
जीवन के इस,
कठोर पथ पर सच्चा पथिक बनना है,
फल जैसा भी हो,
मुझे तो कर्म निरन्तर करना है।।

★★★★★

सीखे गए को भूल जाने पर जो कुछ बच रहता है, वही शिक्षा है। - स्किनर

NAAC
3rd Cycle
B Grade

जहाँ चाह वहाँ राह

संजय प्रसाद
बी.एड.(प्रथम वर्ष)

इस संसार में मनुष्य नित नये-नये कार्य आरम्भ करता है। उसके हृदय में नये-नये स्वप्न जन्म लेते हैं, नयी-नयी इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती। वास्तव में किसी भी कार्य में सफलता के लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति का होना आवश्यक है। केवल इच्छा उत्पन्न होना पर्याप्त नहीं है। किसी की दृढ़ इच्छा ही उसे कार्य करने की प्रेरणा देती है। प्रबल इच्छा ही अथक परिश्रम के लिए उत्सहित करती है और मनुष्य नयी-नयी राह की खोज करता रहता है। इसलिए कहा गया है- जहाँ चाह वहाँ राह।

किसी भी कार्य को करने के लिए सर्वप्रथम उस कार्य के प्रति हृदय में चाह उत्पन्न होना आवश्यक है। बिना इच्छा के किसी कार्य को हाथ में लेना व्यर्थ है। इसी पृथ्वी पर मनुष्य अनेक कार्यों के प्रति आकर्षित होता है। सर्वप्रथम उसकी जो इच्छा होती है वह सुख-समृद्धि प्राप्ति की होती है। ज्यादातर लोग अभावों में जीवन व्यतीत करते है। ऐसे लोग सुख-समृद्धि की कामना तो करते हैं, परन्तु अधिक परिश्रम नहीं करते। सत्य यह है कि इस संसार में अपनी इच्छा अनुसार सुख प्राप्त करना सरल नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की मनचाहे कार्य-क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना उसकी दृढ़ इच्छा-शक्ति एवं परिश्रम पर निर्भर करता है। दृढ़ इच्छा के साथ निरन्तर परिश्रम से ही नये-नये द्वार खुलते हैं।

इस संसार में सफलता की चाह सभी को होती है। कुछ लोग सफलता के लिए प्रयत्न भी करते हैं। परन्तु दृढ़ इच्छा शक्ति न होने के कारण वे परिश्रम से शीघ्र ही घबरा जाते हैं और अपना कार्य अधूरा छोड़ देते हैं। ऐसे लोग जीवन को सरल मानकर प्रयत्न करते हैं और जीवन में आने वाली कठिनाईयों का मुकाबला नहीं कर पाते। जीवन की कठिनाईयों के सामने उनकी चाह दम तोड़ने लगती है। ऐसे लोगों को जीवन में कदम-कदम पर असफलता का मुँह देखना पड़ता है। वास्तव में उनकी चाह प्रबल नहीं होती है। वे स्वयं मान लेते हैं कि एक कार्य में सफलता नहीं मिली, तो कोई दूसरा कार्य कर लेंगे।

वास्तव में प्रबल इच्छा ही सफलता के द्वार खोलने का कार्य करती है। प्रबल इच्छा व्यक्ति को कभी सन्तुष्ट होकर नहीं बैठने देती। ऐसे व्यक्ति के लिए उसकी चाह उसके जीवन का लक्ष्य होती है, जिसे प्राप्त करने के लिए वह अथक परिश्रम से भी नहीं घबराता। विषम परिस्थितियाँ अथवा सफलताएँ भी ऐसे व्यक्ति को विचलित नहीं कर पातीं। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ऐसा व्यक्ति एक द्वार बन्द होने पर तत्काल दूसरे द्वार की खोज करने लगता है। वह जीवन के अनुभव से सीखता है और अधिक उत्साह से पुन: प्रयत्न करता है। ऐसे ही व्यक्तियों के लिए कहा गया है कि "जहाँ चाह वहाँ राह"। प्रबल इच्छा व्यक्ति को निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा देती है और अंतत: ऐसे ही व्यक्ति जीवन में मनचाहे क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं।

डॉक्टर हो या इंजीनियर, कलाकार हो या शिक्षक, किसी भी कार्य क्षेत्र में निरन्तर अभ्यास अथवा प्रशिक्षण के उपरान्त ही व्यक्ति योग्यता प्राप्त कर पाता है। योग्यता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अनेक कठिनाईयों का भी सामना करना पड़ता है। उसे दिन-रात परिश्रम करने के उपरान्त ही योग्यता प्राप्त हो पाती है। परन्तु दिन-रात

परिश्रम करने की प्रेरणा उसे प्रबल चाह से ही मिलती है। यह चाह ही अन्तत: व्यक्ति को सफलता के द्वार पर ले जाती है।

वास्तव में परिश्रमी व्यक्ति को सभी सहयोग देते हैं। उसकी योग्यता एवं चाहत लोगो को प्रभावित करती है। ऐसे व्यक्ति की सफलता की कामना सगे-सम्बन्धी ही नहीं, बल्कि अन्य लोग भी करते हैं। सफलता की चाह में व्यक्ति स्वयं ही अपरिचित लोगों को भी अपना बना लेता है। उसकी चाह उसे प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग लेने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार निरन्तर परिश्रम करने और अन्य लोगों के सहयोग से व्यक्ति अपनी चाह पूर्ण करने में सफल होता है।

आँखों में मंज़िलें हों,
गिरें और संभलते रहें।
हवाओं में क्या दम है,
चिराग आँधियों में भी जलते रहें।

★★★★★

ज़िदंगी काँटों की सेज है

बृजेश कुमार
बी. ए. (प्रथम वर्ष)

ज़िदंगी काँटों की सेज है।
फिर भी सोना पड़ता है।।
राहो में हैं बिखरे काँटे।
फिर भी चलना पड़ता है।
इस दौर में मिलेगी कठिनाईयाँ।
फिर भी उनसे लड़ना पड़ता है।
जिदंगी काँटों की सेज है।
फिर भी सोना पड़ता है।।
गम ही गम है जिदंगी में।
फिर भी हँसना पड़ता है।
अपनों से मिलते है गम।
फिर भी अपनाना पड़ता है।
ज़िदंगी काँटों की सेज है।
फिर भी सोना पड़ता है।।

★★★★★

मेरा यादगार राष्ट्रीय पर्व

अंकित पाठक
बी.एड.(प्रथम)

आज अपने घर की सफाई के क्रम में मैंने अपनी अलमारी के निचले खाने में बदहाल से पड़े उस प्रमाण पत्र को देखा-तो मेरे मस्तिष्क में विचारों का बवण्डर सा उठने लगा। यह प्रमाण पत्र मुझे एक ऐसे राष्ट्रीय पर्व पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुये प्रथम पुरस्कार के साथ मिला था।

इस सबसे अलग बात यह थी कि पुरस्कार के साथ पुरस्कार देने वाले मंत्री जी के मुख से अचानक निकले हुये आशीर्वचन के बोल आज भी उसी तरह मन को गुदगुदाते हुये स्मृति पटल पर छा रहे हैं। बात उन दिनों की है जब मैं बी.ए. अन्तिम वर्ष का छात्र था। वैसे तो पढ़ने में मैं मध्यम श्रेणी का ही था किन्तु सांस्कृतिक कार्यों एवं खेल आदि में मैं सदैव प्रथम स्थान पर रहा। मेरी रूचि विशेषकर वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं नाटकों में प्रतिभाग करने में थी। वैसे कबड्डी के खेल में पूरे महाविद्यालय में कोई मेरा सानी नहीं था। रचना जो मेरे विद्यालय में उसी वर्ष बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा के रूप में आयी थी। वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में वह हमसे कम न थी उस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर मेरे महाविद्यालय में एक पूर्व मन्त्री जी को मुख्य अतिथि के रूप में हमारे प्राचार्य डॉ. पी.के. राय जी ने बड़े ही आग्रह पूर्वक बुलाया था। मन्त्री जी भी आगामी चुनावों के लिये अपनी तैयारी में लगे थे और उन्हें भी ऐसे कार्यक्रमों का इन्तेज़ार रहता था कि जहाँ वे जनसमूह को संबोधित कर भावी मतदान अपने पक्ष में कराने के लिये आकर्षित कर सकें। अत: वे भी सहर्ष वहाँ आने के लिये स्वीकृति प्रदान कर दिये थे।

इस कारण उस वर्ष का राष्ट्रीय पर्व (26 जनवरी 2014) गणतंत्र दिवस उस महाविद्यालय के लिये और भी महत्त्वपूर्ण हो गया था। हम लोग व्यायाम शिक्षक डॉ. अविनाश दूबे जी के निर्देशन में खेल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारी में जी जान से जुटे थे। बालिकाओं की भी तैयारियाँ अपने चरम पर थीं। उन्हें वाद-विवाद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का निर्देशन हमारे महाविद्यालय की महिला शिक्षिका श्रीमती डॉ. मन्जुला जी के द्वारा दिया जा रहा था। अन्तत: वह दिन आ ही गया 26 जनवरी 2017 और हम सभी प्रतिभागियों ने बड़े ही उत्साह के साथ खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभागिता किया। निर्णायक मण्डल में हमारे महाविद्यालय के प्राध्यापक गण के साथ साथ कुछ बाहर से आये हुये आधिकारी गण भी थे। निर्णायक मण्डल ने मूल्यांकन किया और बालक वर्ग में से मुझे खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रथम पुरस्कार विजेता घोषित किया गया तथा बालिका वर्ग में से सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिये प्रथम विजेता रचना के नाम की घोषणा की गयी। पुरस्कार वितरण के समय हम दोनों लगभग एक ही साथ मंच पर पहुँचे। मंत्री जी ने पहले रचना को तथा हमें पुरस्कार दिया और हम दोनों ने एक ही साथ मंत्री जी का चरण स्पर्श किया।

हर्षातिरेक में मंत्री जी के मुख से यह बात निकल गयी कि तुम दोनों की जोड़ी सदा बनी रहे। हम दोनों एक दूसरे को देखकर मुस्कुरा उठे और मन में कहीं न कही प्रेम का अंकुर भी प्रस्फुटित हो गया। जिसने दो वर्ष बाद ही हम दोनों को विवाह के बन्धन में बाँध दिया। आज रचना मेरी सह-धर्मिणी है। इस प्रकार वह राष्ट्रीय पर्व हमारे लिये यादगार बन गया।

★★★★★

बेटी - बचाओ बेटी - पढ़ाओ

फिज़ा बी
बी0 ए0 (तृतीय वर्ष)

भारत देश पौराणिक संस्कृति के साथ-साथ महिलाओं के सम्मान और इज्ज़त के लिए जाना जाता था। लेकिन बदलते समय के अनुसार हमारे देश के लोगों की सोच में भी बदलाव आ गया है। जिसके कारण हम बेटियों और महिलाओं के साथ एक समान व्यवहार नहीं किया जाता है। लोगों की सोच किस कदर बदल गई है कि आये दिन देश में कन्या, भ्रूण हत्या और बलात्कार जैसे मामले देखने को मिलते रहते हैं। जिसके कारण हमारे देश की स्थिति इतनी खराब हो गई है कि दूसरे देश के लोग हमारे देश में आने से झिझकते हैं हमारे देश के लोगों ने मिलकर हमारे देश में पुरुष प्रधान नीति को अपना लिया है जिसके कारण देश की बेटियों की हालत गंम्भीर रूप से खराब हो गयी, उनके साथ लैगिंग भेदभाव किया जा रहा है और उन्हें उच्च शिक्षा भी नहीं दी जा रही है जिसके कारण वह हर क्षेत्र में पिछड़ रही हैं उनकी आवाज़ को इस कदर दबा दिया गया है कि उन्हें घर से बाहर निकलने की आज़ादी तक नहीं दी जाती है।

इस गंम्भीर मुददे को लेकर हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक नई योजना का प्रारम्भ 22 जनवरी 2015, गुरूवार को किया जिसका नाम " बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ " रखा गया। इस योजना के अनुसार बेटियों की शिक्षा के लिए उचित व्यवस्था की गई है और लोगों की सोच को बदलने के लिए जगह-जगह इसका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है जिससे लोग बेटा और बेटियों में किसी प्रकार का भेदभाव नही करें। " बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ " का मूल उद्देश्य समाज में पनपते लिंग असंतुलन को नियन्त्रित करना है। इस अभियान के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध आवाज उठाई गई है। यह अभियान हमारे घर की बहु बेटियों पर होने वाले अत्याचार के विरूद्ध एक संघर्ष है। इस अभियान के द्वारा समाज में लड़कियों को समान अधिकार दिलाये जा सकते हैं।

तत्पश्चात भारत के प्रत्येक नागरिक को कन्या - शिशु बचाओ के साथ-साथ इनका समाज में स्तर सुधारने के लिए प्रयास करना चाहिए। लड़कियों को उनके माता-पिता द्वारा लड़कों के समान समझा जाना चाहिए और उन्हें सभी कार्य क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करने चाहिए।

हर लड़ाई जीतकर दिखाऊंगी,
मैं अग्नि में जल कर भी जी जाऊंगी।
चन्द्र लोगों की पुकार सुनली,
मैं बोझ नही भविष्य हूँ
बेटी नही पर बेटा हूँ।।
यद्यपि बेटा नहीं पर बेटी हूँ।

★★★★★

NAAC 3rd Cycle B Grade

विज्ञान वरदान या अभिशाप

ज़मज़म इकबाल
बी. ए. (प्रथम वर्ष)

वर्तमान युग में विज्ञान ने जो चमत्कार किए हैं उनको शब्दों में लिखना कठिन है। विज्ञान ने हमारे जीवन को अत्यन्त सरल और सुन्दर बना दिया है। प्राचीन काल में मनुष्य का जीवन अत्यन्त दुखदायी था। उस समय मनुष्य का जीवन बिताने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में महीनों और सालों का समय लग जाता था किन्तु पहिये के अविष्कार से यातायात में सुधार आया और देखते ही देखते हम बैलगाड़ी से हवाई जहाज पर पहुँच गए। संचार के क्षेत्र में भी विज्ञान ने अद्भूत खोज की है । रेडियो ने जहाँ आवाज का जादू जगाया, वही दूरदर्शन ने विश्व के दर्शन कराए। जो बात हम पत्रों द्वारा अपने सगे-सम्बन्धी को लिखकर भेजते थे वह काम इंटरनेट और मोबाइल ने सरल बना दिया है! आज सारा संसार सिमटकर हमारी जेब में आ गया है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान ने क्रान्ति मचा दी है। जो रोग अत्यन्त गम्भीर जाने जाते थे, जिनका उपचार असम्भव था, उसे भी विज्ञान ने सम्भव कर दिया है। विज्ञान ने संसार से अन्धकार को दूर कर दिया है, क्योंकि बिजली के अविष्कार से सारा संसार जगमगा गया है। कहा जाता था कि धरती सूरज के प्रकाश से चमकती है, लेकिन विज्ञान ने इसको असत्य कर दिया है, अब हमारी धरती मनुष्य द्वारा बनाई बिजली से चमकती है जहाँ विज्ञान ने हमको इतने सुख दिये हैं वही इसने कहीं-कहीं दुख भी दिये हैं, मनुष्य ने विज्ञान के द्वारा ऐसे घातक हथियारों का निर्माण किया है जिससे कुछ ही मिनटो में लाखों लोग मर सकते हैं। जिसका उदाहरण जापान के दो बड़े शहर हिरोशिमा और नागासाकी हैं, जिन पर 1945 में परमाणु बम गिराकर लाखों लोगों का जीवन समाप्त कर दिया गया। आज संसार के कई देश परमाणु हथियारों से लेस हैं, जो सारे विश्व की शान्ति के लिए बड़ा खतरा है। हमें परमाणु ऊर्जा का उपयोग शान्ति पूर्वक कार्यों के लिए करना चाहिए। मुझे आशा है कि हमारे देश और विश्व के अन्य देश मिलकर विश्व में शान्ति स्थापित करेंगे और मानवता को विज्ञान के सदुपयोग पर चलने का रास्ता दिखायेंगे और ये विश्व फूलों की तरह सुन्दर और आकर्षक बनेगा और हमारे वैज्ञानिक मनुष्य की भलाई के लिए अविष्कार करेंगे न कि उनकी बर्बादी के लिए!

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दुस्ताँ हमारा।
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा।।

★★★★★

भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान

दीपक सिंह
एम.ए.(पूर्वार्द्ध), अर्थशास्त्र

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो मंजिल हासिल करने तथा समाज में सम्मान दिलाने में सहायक सिद्ध होती है। इसके सम्बन्ध में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने कहा कि शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जो हमें अज्ञानता की बेड़ियों से मुक्त करा सकेगा और एक खुशहाल समाज का निर्माणकर शोषण, कालाबाजारी एवं भष्टाचार जैसी बुराईयों से मुक्ति दिलायेगा। किसी भी अभियान की शुरूआत ग्रामीण क्षेत्र से की जानी चाहिए क्योंकि हमारा हिन्दुस्तान गांव में बसता है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास से ही देश का विकास सम्भव है।

शिक्षा हमारी अनुभूति और संवेदनशीलता को विकसित करती है यह हमारी शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास का प्रमुख साधन है। वैज्ञानिक प्रवृति का विकास, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता पर आधारित भावनाओं का विकास करने की दृष्टि से भी शिक्षा की प्रक्रिया सर्वोतम है। शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास को बल मिलता है। इसलिए शिक्षा वर्तमान और भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है। भारत में साक्षरता का स्तर दूसरे देशों की तुलना में काफी कम है।

ब्रिटेन, रूस तथा जापान की जनसंख्या लगभग शत-प्रतिशत साक्षर है। यूरोप एवं अमेरिका में साक्षरता का प्रतिशत 90-100 के बीच है। जबकि भारत में साक्षरता मात्र 65 प्रतिशत है। इस समय हमारा देश एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जिसमे परम्परागत आदर्श, समाप्त होते नजर आ रहे हैं। समाजवाद, धर्मनिपेक्षता, लोकतन्त्र तथा कार्यशीलता के लक्ष्यों की प्राप्ति में निरन्तर गिरावट आ रही है। जनसंख्या सन्तुलन हेतु महिला शिक्षा नितांत आवश्यक है। देश की साक्षरता में वृद्धि लाने के उद्देश्य से 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा 1992 की कार्ययोजना 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को सन्तोषजनक गुणवत्ता के साथ नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराना है। न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकार की वचनवद्धता के अनुसार सकल घरेलू उत्पाद का 6 प्रतिशत शिक्षा क्षेत्र पर खर्च करने की योजना है। सम्पूर्ण भारत में एक ही प्रकार की शैक्षिक संरचना के ढाँचे को स्वीकार कर लिया गया है, जिसमे 5 वर्ष का प्राथमिक स्तर, 3 वर्ष का उच्च प्राथमिक स्तर तथा 2 वर्ष का हाईस्कूल स्तर है 2 वर्ष का इण्टरमीडिएट स्तर, 3 वर्ष का स्नातक तथा 2 वर्ष का परास्नातक स्तर निर्धारित किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार से फसल बोने, और उर्वरक और कीटनाशकों का उपयोग करने, कृषि का यन्त्रीकरण, ग्रामीण क्षेत्रों में बैंको की स्थापना, किसानों, की साख में वृद्धि और ग्रामीण बचतों को प्रोत्साहन मिला है। लघु एवं सीमान्त कृषकों, कारीगरों, शिल्पकारों, बुनकरों, एवं सेवा से जुड़े सभी लोगों को सरल और सस्ती ब्याजदर पर ऋण उपलब्ध कराकर बैकों ने सराहनीय कार्य किया है। इससे ग्रामीण के जीवन स्तर में वृद्धि, साक्षरता दर में वृद्धि, शिक्षण संस्थाओ में वृद्धि, विद्यार्थियों और अध्यापकों की संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। विश्व के जिन देशो में शैक्षणिक और आर्थिक विकास में सहसम्बन्ध है वहाँ शिक्षण की जड़ें काफी मजबूत है।

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रसार और ग्रामीण विकास एक दूसरे के पूरक हैं। वर्तमान समय में देश की करोडों जनसंख्या निरक्षर है। इन निरक्षरों को साक्षर करने हेतु साक्षर भारत मिशन प्रारम्भ किया गया है। देश की महिलाओं की आधी आबादी अनपढ़ है। अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर हमारे प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने साक्षर भारत मिशन का शुभारम्भ करते हुए कहा था कि भारत में विश्व के अन्य देशों की तुलना में निरक्षरों की

संख्या सर्वाधिक है। यहाँ महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अल्पसंख्यकों तथा निम्न वर्गों के लोगों का इतनी बड़ी मात्रा में अनपढ़ होना सरकार के लिए बड़ी चुनौती है।

शिक्षा महिलाओं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और छोटे तबकों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन लाने वाली प्रथम कारक है। इस प्रकार कहा जा सकता कि शिक्षा ही हमारे जीवन का आधार और समृद्धि की कुँजी है। शिक्षा के प्रसार के लिए क्रान्ति की आवश्यकता है। रोजगारोन्मुख, शिक्षा के लिए एक वृहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण आवश्यक है। शिक्षा की गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार की आवश्यकता है। शिक्षा को सामाजिक और नैतिक मूल्यों से जोड़ना भी परम आवश्यक है। अध्यापकों एवं प्राध्यापकों के पद पर सुयोग्य और समर्पित व्यक्तियों को नियुक्त किया जाना चाहिए।

★★★★★

फॉरवर्डेड

नमिता गौतम
एम.एस-सी.(फाइनल वर्ष)

मोबाइल फोन में सुबह से ही फॉरवर्डेड संदेशो की भरमार थी। अचानक से उसकी नजर एक वीडियो पर पड़ी, जिसमें एक इमारत से धुँआ निकलता नजर आ रहा था। उसने पूरा वीडियो देखा, उफ्फ! कैसा दर्दनाक दृश्य है यह, इमारत धू-धूकर जल रही हैं। फायर ब्रिगेड की कतारे हैं, जो पानी से आग बुझाने का प्रयास कर रही हैं और विल्डिंग के नीचे खड़े लोगों में अफरा-तफरी मच गई है। चीख-पुकार और भगदड़ का माहौल है। लेकिन, कुछ लोग बड़ी हिम्मत से वहां डटे हुये हैं और अपने मोबाइल से वीडियो बना रहे हैं। तभी अचानक से इमारत की कूदते दिखाई पड़ते हैं। उससे यह मार्मिक दृश्य देखा न गया, तो वहां से चलते बना। रास्ते में एक गाय बीमार सी दिखाई दे रही थी, जो शायद चलने में असमर्थ थी। आस-पास के कुत्ते उसे शिकार बनाने की ताक में थे, कुछ इंसान सड़क पर खड़े मोबाइल से इस दृश्य का वीडियो बना रहे थे। अगले दिन यह दोनों वीडियो मोबाइल पर तेजी से फॉरवर्ड किये जा रहे थे। वह मन ही मन बुदबुदाया कि यह मैसेज फॉरवर्ड करने वाले की ही नहीं, तमाशबीनों की भी फितरत है, जो सभी के फोन पर फॉरवर्ड हो रही हैं।

★★★★★

आदर्श-शिक्षक

कु0 लवली
बी. एस-सी. द्वितीय (बायोलॉजी)

इक्कीसवीं सदी में एक बहुत बड़ा क्रान्तिकारी बदलाव- आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में आया। इन सभी क्षेत्रों के विकास में शिक्षा एवं शिक्षक की महत्व पूर्ण भूमिका रही है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय 700 कॉलेज थे जो कि अब बढ़कर 20700 हो गये हैं।विश्वविद्यालय की संख्या 25 से बढ़कर 435, विद्यार्थियों की संख्या 1.00 लाख से बढ़कर 1 करोड़ 60 लाख हो गयी है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षकों का उत्तरदायित्व और बढ़ जाता है। किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहाँ के भौतिक संसाधनों में न होकर योग्य शिक्षक में होता है। अब प्रश्न उठता है कि योग्य शिक्षक किसे कहा जाये अर्थात आदर्श शिक्षक में क्या गुण पाये जाते हैं।

वैदिक काल से शिक्षक को गुरू कहकर पुकार जाता है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- अन्धकार से प्रकाश की ओर। जो व्यक्ति समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है, वही आदर्श शिक्षक होता है इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा में शिक्षक को Teacher के नाम से जाना जाता है। यह टीचर शब्द भी एक आदर्श शिक्षक के गुणों की व्याख्या करता है-

जैसै:-

T	Trained	प्रशिक्षित
E	Eligible	योग्य
A	Artist	कलाकार
C	Characteristic	चरित्रवान
H	Honesty	ईमानदारी
E	Emperor	बादशाह
R	Regularity	नियमितता

जिस अध्यापक में उपरोक्त गुण पाये जाते हैं वही आदर्श शिक्षक कहलाने का अधिकारी है। उसे शिक्षापद्धति की आधारशिला, राष्ट्र निर्माता, समाज रूपी नाव के कुशल नाविक की संज्ञा दी गयी। एक आदर्श अध्यापक ' शिक्षा पद्धति' का 'हृदय' होता है। कबीरदास जी ने गुरू को भगवान से बढ़कर बताया है।

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, कॉके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो बताय।।

एक आदर्श शिक्षक के गुणों की व्याख्या इस प्रकार भी की जा सकती है।

1.सम्प्रेषण की दक्षता- एक आदर्श अध्यापक कुशल वक्ता होता है । उसका सम्प्रेषण इतना प्रभावशाली

होता है कि पूरी कक्षा के विद्यार्थी उसके दिये गये वक्तव्य को सरलता पूर्वक समझ लेते हैं।

2. कर्तव्य के प्रति निष्ठावान- आदर्श शिक्षक वही होता है। जो अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान होता है। लापरवाही उदासीनता, टाल मटोल उसके निकट नही झांक सकते।

3. विश्वसनीयता का गुण- एक आदर्श शिक्षक समाज के प्रति और समाज उसके प्रति विश्वसनीय होता है उसमें धोखा, छल कपट जैसी कोई बुराई नही होती है।

4. सादा जीवन उच्च विचार की भावना- एक आदर्श शिक्षक का जीवन तो बहुत साधारण होगा। लेकिन उसके विचार बहुत उँचे होते है। यही भारतीय संस्कृति की पहचान है।

5. नेतृत्व क्षमता का गुण- एक आदर्श शिक्षक में नेतृत्व की अदम्य क्षमता होती है। उदाहरण स्वरूप भारत के उप राष्ट्रपति डॉ० मो० हामिद अंसारी, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में शिक्षक थे। वे अपनी कुशल नेतृत्व क्षमता के कारण उप राष्ट्रपति जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन हुए।

6. साहसी - एक आदर्श अध्यापक विपरीत परिस्थिति में भी साहस का परिचय देता है।

7. देश भक्ति की भावना:- शिक्षक समाज का आदर्श होता है। उसमे यदि देश भक्ति की भावना कूट कूट कर भरी है तो हमारी भावी पीढ़ी में देश भक्ति की भावना का स्वत: ही विकास होने लगेगा। देश भक्ति के सम्बन्ध में कहा गया है।

" जो भरा नही है भावों से, बहती जिसमे रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नही।। "

8. प्रजातान्त्रिक प्रणाली में विश्वास:- एक आदर्श शिक्षक की सम्पूर्ण क्रिया कलाप प्रजातान्त्रिक प्रणाली पर आधारित होता है। वह कालेजों में प्रजातान्त्रिक वातावरण का प्रतिपादन करता है। जिससे विद्यार्थी प्रभावित होकर समाज और राष्ट्र में इसका प्रचार-प्रसार करते हैं।

9. राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव - साम्प्रदायिक, जातीय, वंशीय, धार्मिक क्षेत्रीय दगों को एक आदर्श अध्यापक सम्बन्धित क्षेत्र के काम करने वाले व्यक्तियों और संगठनों के साथ समन्वय स्थापित कर साम्प्रदायिक सद्भाव सहिष्णुता की भावना का विकास करता है।

10. परिश्रमी - एक आदर्श शिक्षक परिश्रमपूर्वक अपने कार्यो का सम्पादन करता है। परिश्रम की भावना उसके विद्यार्थियों में कूट-कूट कर भरी होती है।

11. धैर्यवान - एक आदर्श शिक्षक अपने व्यवसाय में धैर्य का परिचय देता है।

12. संघर्षशील - एक आदर्श अध्यापक शिक्षा के विकास के प्रति संघर्षशील रहता है। वह मानव कल्याण और सामाजिक विकास के लिए हमेशा तत्पर रहता है।

13. अनुशासन प्रिय - अनुशासन कॉलेज के प्रशासन का आभूषण होता है। एक शिक्षक समाज और देश की प्रेरणा का स्रोत होता है। अनुशासित अध्यापक ही अनुशासन प्रिय छात्रों का निर्माण करता है।

14. समय प्रबन्धन - एक आदर्श शिक्षक की दिनचर्या में समय प्रबन्धन का महत्पूर्ण स्थान है। वह उठने, बैठने, कॉलेज जाने अध्यापन कार्य करने, अध्ययन आदि सभी कार्यो का समय प्रबन्धन करता है। उसी से

प्रेरित होकर विद्यार्थी समय प्रबन्धन का पालन करते है। इसी के द्वारा वे सफलता की अनन्त ऊचाँईयो पर पहुँचते हैं।

15. आज्ञाकारी प्रवृत्ति – एक आदर्श शिक्षक में आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति का होना नितान्त आवश्यक है। एक आज्ञाकारी शिक्षक के आज्ञाकारी शिष्य होते हैं। शिक्षण कार्य के अतिरिक्त शिक्षक को शिक्षण संस्थाओं में – प्रवेश प्रक्रिया, छात्रवृत्ति, अनुशासन, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन.सी.सी., खेल कूद परीक्षाओं के संचालन में योगदान करता है। उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त एक आदर्श, धर्मनिरपेक्ष, स्वच्छ छवि, समय पालक, स्वहित सचेत सम्मानित सेवा – भाव संसाधन युक्त वफादार, न्यायप्रिय, टीम भावना, शान्ति प्रिय, विचारों में शुद्धता, स्वनियन्त्रण, एकाग्रचित, प्रेम – जागरूकता, सामाजिक न्याय, असमानता का विरोध आदि ।

अन्त में कहा जा सकता है।

नृदेह माध्यमः सुलम्यम सुदर्लभयमः मयानुकूले न गुरू कर्णधारणं
पुमाम भवादि न तरेतः – सः आत्मः

अर्थात इस संसार रूपी भवसागर में जिस पर गुरू की करूणा नहीं होगी, वह भवसागर को पार नहीं कर सकता है।

★★★★★

माँ

दानिश अली
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

हर कदम रखती हैं, जमाने से महफूज़।
ज़िंदगी के हर मोड़ पे, साथ निभाती है माँ.।।
कह न पाती जुबां जो शब्द समझ लेती है माँ।
पल में कर दूर हर मुश्किल, मुस्कुराती है माँ।।
ममता के आंचल में, छिपा लेती है माँ।
बिन कुछ कहे हर पल दुआएँ बरसाती है माँ।।
ज़िन्दगी के सफ़र में गर्दिशों की धूप में।
जब कोई साया नहीं मिलता तब बहुत याद आती है माँ।।
प्यार कहते हैं किसे और ममता क्या चीज है?
कोई उन ब्च्चों से पूछे जिनकी मर जाती है माँ।।
सभी का एक अरमान होता है।
हर बच्चे की जान होती है माँ।।
हर किसी को प्यार मिले अपनी माँ से।
कभी कोई न बिछड़े अपनी माँ से।
यही है मेरी एक दुआ उस खुदा से।।

सैनिक का पथ

कु०हिना
बी.एस-सी(द्वितीय वर्ष)

दुर्गम, दुर्लभ गिरिकन्दराएँ,
जिन पर चढ़ते हैं ये सैनिक।
जहाँ पल-पल संकट है छाया,
उस पथ पर बढ़ते हैं सैनिक।।

मौसम कितना भी बदला हा,
आँधी हो, तूफान या पानी।
सब एक बराबर जिनके लिए,
सरहद पर खड़े वे सेनानी।।

निज मातृभूमि के हित हेतु,
अपना सर्वस्व लगा देते।
निस्वार्थ आहूति दे अपनी,
रिपू का वर्चस्व डगा देते।।

सांसारिक सुख के भोग की,
क्यों नहीं उन्हें अभिलाषा।
धरती के शोक मिटाने की,
क्यों लगी उन्हें है आशा।।

राष्ट्रप्रेम करूणा से भरी,
वह शील, साहसी है नारी।।
वह वीर जवान की जननी,
जिसने ममता देशहित वारी।।

अपने दिल पर पत्थर रख,
ममता को जिसने तज डाला।।
अपने वीर पुत्र पर जिसने,
मातृभूमि का रज डाला।।

हिन्द देश की धरा सदा,
गाएगी उनकी गाथा।
इनके आगे नमन है उसका,
और झुका है माथा।।

★★★★★

मातृभाषा हिन्दी

कु० स्वीटी
बी.ए.(द्वितीय वर्ष)

हिन्दी हमारी भाषा है, अभिमान हमारा।
हिन्दी से ही हिन्द देश का उत्थान दुबारा।।
शब्दावली अखण्ड जिसकी प्राणरूप है।
उन शब्दों से होता रहा सम्मान हमारा।।

शब्दों में गुँथ देती जज्वाते हमारे।
रोते हुए, हँसते हुए दिन रात हमारे।।
चमके सदा जो भाल ऐसी बिन्दी है हिन्दी ।।
हर क्षण रहे, हर पल रहे जो साथ हमारे।।

इस हिन्द का नाम हिन्दुस्तान हिन्दी है।
यह सिन्ध का परिवर्तित एकनाम सिन्धी है।।
बेटी माँ संस्कृत की अलंकृत है उन गुणों से।
जो भी मिला इस देश को प्रणाम हिन्दी है।।

सागर सरीखा हृदय विशाल हिन्दी माँ का।
सब कुछ समाए हँसकर वो छाल हिन्दी माँ का।।
हिन्दी के पूज्य प्रेमी प्रबल पूर्वजों के बल से।
ऊँचा उठा दुनिया में है भाल हिन्दी माँ का।।

माँ हो रही घायल वो घाव ठीक कर दो।
मरहम लगा संक्रमण का प्रभाव ठीक कर दो।।
माँ हिन्दी हैं वैचेन विनती कर रही ईश्वर से।
मेरी सन्तान का मेरे प्रति स्वभाव ठीक कर दो।।

★★★★★

NAAC
3rd Cycle
B Grade

मतलब से है जिंदगी

इकरा अमीर
बी.ए.(प्रथम वर्ष)

भीड़-भाड़ की दुनिया है
खो गई है जिंदगी।
न नमस्ते है, न सलाम है
मतलब से है जिंदगी।।

जहाँ पैसा है,
वहाँ हम नही हमारा है।
जहाँ पैसा नही,
वहाँ हम नही तुम्हारा है।।
जिंदगी खो गई है,
पैसों के बाजार में,
कोई किसी का नहीं है,
इस दुनिया में,
मतलब की है दुनिया,
हम लुट गए है पैसों की आड़ में,
मतलब से हैं जिंदगी।।

जिंदगी तो जानी है,
किसी की अमीरी में , किसी की गरीबी में,
कुछ कर के जाओ ऐसा कि,
नाम यही रह जाना है,
पैसा यही रह जाना है,
सब कुछ यही रह जाना है क्योंकि
मतलब से हैं जिंदगी!..

★★★★★

।। हम एन.सी.सी. कैडेट हिन्दुस्तान के ।।

कैडेट विजेन्द्र कुमार
UP/18/SDA/287617

आज़ादी की खुली हवा में, निकले सीना तान के।
कैडेट हिन्दुस्तान के, हम कैडेट हिन्दुस्तान के।।

हम जिस मिट्टी के अंकुर हैं, उसकी शान निराली है।
उसके खेतों में सोना है, और बागों में हरियाली है।।

धन दौलत से ज्यादा ऊँचें, रिश्ते हैं इन्सान के।
कैडेट हिन्दुस्तान के, हम कैडेट हिन्दुस्तान के।।

हम भी हँसना सीख रहे हैं, खिलते हुए गुलाब से।
पाठ पढ़ेंगे हम हमेशा, जीवन की खुली किताब से।।

हम भी झेलेंगे सब हमले, आँधी के तूफान के।
कैडेट हिन्दुस्तान के, हम कैडेट हिन्दुस्तान के।।

★★★★★

माँ

मौ. फैसल
बी.एड.(प्रथम वर्ष)

तू मिल कहीं मुझको, मैं बताऊँ फिर तुझको।
कितना नादान है यह दिल मेरा,
देखता नहीं यह जब तक तुझको।।
मिल नहीं सुकूँ इसको,
तू मिल कहीं मुझको, मैं बताऊँ फिर तुझको।।
तू ही है आसरा मेरा,
तू ही है मेरा जुनून,
तू ही है गुमान मेरा,
तू ही है फरियाद मेरी,
तू ही है आवाज़ मेरी।
तू मिल कहीं मुझको, मैं बताऊँ फिर तुझको।।

★★★★★

हिन्दुस्तान हमारी जान

शुभम् सैनी
बी.एड.(द्वितीय)

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तिरंगा लहराकर ये हमारी शान बना है।।
माताओं के माथे की छूट गयी थी बिंदियाँ,
बहनों के हाथों की टूट गयी थी चूड़ियाँ,
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।

मंगल पांडे, रानी लक्ष्मी बाई, अशफाक उल्ला खाँ
न जाने ऐसे कितने क्रांतिकारियों ने दी हैं
अपने-अपने प्राणों की आहूतियाँ,
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।

भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू, ऐसे महान देशभक्तों ने
रस्सी के फँदे को चूमकर लगा ली थी फांसियाँ,
तब जाकर हमारा देश आजाद बना है।
और उसने मस्तक में मार ली थी गोलियाँ
तब जाकर चंद्रशेखर आजाद बना है।।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।

उसकी चोटियों से धाराएँ निकलकर यहाँ जलाशय बना है।
उसके एक श्रेणी कैलाश पर्वत पर यहाँ शिवालय बना है। ।
उसने वर्षो तक झेली हैं तमाम कठिनाईयाँ,
तब जाकर ये पर्वत हिमालय बना है।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।

एक-एक करके सभी धुसपैठियों को मौत की नींद सुला देंगे।
जरा सब्र तो कर ऐ-मेरे-वतन,
अभी तो वो हमारा मेहमान बना है।

★★★★★

जान देकर ये हमारी जना बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।।

ए-मेरे बेटे, अपने बाप से डरकर रह ले
हिन्दुस्तान से ही तू पाकिस्तान बना है।
इसलिए हमारा भारत शान्त बना है।।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।।

हमारे तिंरगे के तीन या चार नहीं, होते हैं पाँच रंग
पहला केसरिया, दूसरा सफेद, तीसरा है हरा।
चौथा नीला जो बीच में है, अशोक चक्र में भरा।।
और पॉचवा रंग वो है जो किसी शहीद के शव पर,
लिपटे तिरंगे पर उसके लाल खून का छपा धब्बा बना है
वही छपा लाल रंग का धब्बा तिरंगे का पॉचवा रंग बना है। ।
तब जाकर ये तिरंगा हमारी पहचान बना है।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।।

मैने भी अपना एक चिराग प्रज्ज्वलित किया है।
उसको जलाकर अँधेरे को प्रकाशित किया है।।
उसके परिवार की भी तुम रक्षा कर लो,
मैंने भी अपना बेटा आपके परिवार की सुरक्षा में शहीद किया है।

जान देकर ये हमारी जान बना है।
तब जाकर ये हमारा हिन्दुस्तान बना है।।

★★★★★

मेहनत

असमा हसन
एम.एस-सी.(फाइनल वर्ष)

जो तेरे अंदर के साहस को पहचान लेता है,

कोई है जो तेरे हौसलों को उड़ान देता है .....

कोई नहीं रह सकता किसी फनकार के अंदर,

हर फन परिश्रमी को, मैदान देता है .....

सिर्फ वही बदल सकता है सपनों को हकीकत में,

जो शख्स जिंदादिल रहकर अपनी जान देता है .....

किस्मत भी काँप उठती है उसकी कोशिशों से,

जो शख्स ज़िन्दगी को कर्मों का तूफान देता है .....

कहने को तो इन्सान है सिर्फ मिटटी का पुतला,

हीरा है, जो तराशने वाले को शान देता है .....

यूं तो कितने इन्सान हैं यहाँ एक ही नाम के, अमर है,

जो मेहनत करे, समय उसके नाम को पहचान देता है ....

.

★★★★★

माँ

करीना पतरस
बी.ए. (प्रथम वर्ष)

वह पहली बार जब माँ तुझे देखा है।
लगता है कि न जाने कब से देखा है।।
तुझको जब भी हसांया है गुदागुदाया है,
आँखों में अपनी हर खुशी को देखा है।।
पता नही क्या बात है इस जिन्दगी में,
में तुझको देखा है तो जिन्दगी को देखा है।।
साथ घुमी हूँ जितनी दफा तेरी उगुंली पकड़।
साथ चलते हुए एक रहनुमर।
आँखों में तेरे प्यार का ही असर देखा है ।।
मुझे जरूरत है तेरे उस प्यार की आज भी ।
हर पल हर घड़ी तेरा इतना असर देखा है ।।
जब भी थामा है मेरा हाथ माँ तुमने कही।
तुमसे लगकर हर असर बेअसर देखा है।।
तेरे बिना कोई जगह दुनिया में है नहीं।
हर जगह तुझको हर नजर देख है ।।
तुमसे है मेरी जिन्दगी तुमसे है वज़ह।
तेरी दुआओं से ही कुछ कर गुजर देखा है!

★★★★★

ज़िन्दगी

सुनील कुमार
एम. ए. (उत्तरार्द्ध)

ज़िन्दगी को समझने में,
हम वक्त गवाँ बैठे।
जिन्दगी को पढ़ने में,
हम जिन्दगी गवाँ बैठे।।

गवाँ बैठे अपनी चाहत को,
प्यार को समझने में।
गवाँ बैठे अपनी जवानी को,
त्याग को समझने में।।

पर समझ में आया न कुछ भी,
और हम समझ ही गवाँ बैठे।
मुहल्ले, गलियों सड़कों में,
चर्चा ये आम होने लगी,
कि शायर सुनील कुमार शायरी गवाँ बैठे।।
हम ज़िन्दगी को समझने में,
जिन्दगी गवाँ बैठे।।

ज़िन्दगी एक दर्द है सुख भी,
मौत एक वहम है हक़ीकत भी,
कहने पर एक पहेली है,
सच पूँछो तो यह एक सहेली है।

ज़िन्दगी पतझड़ है वसंत भी,
यह एक महकता हुआ चमन है।
यूँ तो कहने का यह एक दिखावा है,
सच पूँछो तो यह छलावा है।।

ज़िन्दगी खुशी है, उदासी भी,
यह तो सुख-दु:ख का मिलाप भी,
यूँ तो कहने को यह एक समस्या है,
सच पूँछे तो यह एक तपस्या है।।

जिन्दगी चुनौती है विश्वास भी,
यह संघर्ष है ठहराव भी,
यूँ तो कहने को यह एक दिखावा है,
सच पूँछो तो यह समझौता है।।

★★★★★

भारतीय सभ्यता - विश्व सम्पदा

वैष्णवी गुप्ता
बी.एस-सी (द्वितीय वर्ष)

अपने भारत की सभ्यता, इस जग में बड़ी महान है।
सभ्य आचरण के कारण, जग इसकी पहचान है।।
यह कभी नहीं है नष्ट हुई, यह कभी नहीं है भ्रष्ट हुई।
चली आ रही है कब से, यह बात नहीं स्पष्ट हुई।।
असंख्य आक्रान्ताओं ने, इस सभ्यता पर प्रहार किया।
क्रूर कूटनीतियों द्वारा कितना था, इस पर वार किया।।
दुनिया के कितने देश यहाँ, निज उद्देश्यों से आते थे।
कुछ ज्ञान प्राप्त करने की यहाँ, आशा लेकर आते थे।।
कुछ धन प्राप्त करने की यहाँ, अभिलाषा लेकर आते थे।
पर देख ऐसी महासभ्यता उनके मन ललचा जाते थे।।
इस विश्व ने न जाने कितना हमारे, इस देश से प्राप्त किया।
छीन यहाँ की अतुल सम्पदा अपने को पर्याप्त किया।।
कितने वर्षों, युगों पुरानी इसकी रही कहानी है।
कोई कालखण्ड बता न पाया, यह कितनी रही पुरानी है।।
मानव को मानव का मतलब सदा सिखाती आयी है।
जीवन जीने की उचित राह वह सदा दिखाती आयी है।
दुनिया ने जिसको खोज लिया वह परमतत्त्व विज्ञान है।
वह परमतत्व इस देश के उपजे वेदों का ही ज्ञान है।।

★★★★★

वतन से इश्क़

फौजिया
(बी. ए. द्वितीय वर्ष)

हाँ मुझे इश्क है तिरंगे से वो तीन रगों की कहानी मेरी है,

इसी मिट्‌टी से बना हूँ मैं

ये मिट्‌टी भी मेरी है,

मिट्‌टी की खुशबू भी मेरी हैं।

हाँ मुझे इश्क है तिरंगे से वो तीन रगों की कहानी मेरी है,

देश के लिए कुछ भी कर जाऊगाँ मैं,

ये जान भी कुर्बान कर जाऊगाँ मैं,

तिरंगे में लिपटकर आऊंगाँ मैं

जो शहीद जंग में हो जाऊगाँ मैं।

मेरे दोस्तों मेरा इतना सा मान रखना तुम,

मेरे बाद मेरे वतन का ख्याल रखना तुम।

मैं छोड़ गया जो एक जिस्म तो कोई बात नहीं यारों,

दूजी कोई देह लेकर फिर से जन्म पाऊंगा मैं,

जो आए मेरे वतन पर आँच तो कहर बनकर बरस जाऊंगा मैं।

फिर, बनूंगा सैनिक और फिर,

से वतन पर लुट जाऊंगा मैं ।।

★★★★★

NAAC
3rd Cycle
B Grade

ईश्वर

सुनीता
बी. ए. (तृतीय वर्ष)

जब सभी चुप होते हैं, तो वो बोलता है।
ईश्वर सभी को एक तराजू में तौलता है।।
जब नन्हा सा बच्चा रो रहा हो।
और कोई उसे माँ की तरह सहला रहा है।।
तब ये ही उसके जीवन की पूर्णता है।
ईश्वर सभी को एक तराजू में तौलता है।।
जब सूने पथ पर न कोई अनुगामी हो,
और सूखे गले के लिए न कहीं भी पानी हो,
तो वह ही प्रकाश के पथ खोलता है।
ईश्वर सभी को एक तराजू में तौलता है।।
जब कभी अन्याय बढ़ता है किसी संसार में
किसी की गर्दन हो किसी के हाथ में,
तब अवतार लेकर ये ही उन्हें रोकता है।
ईश्वर सभी को एक तराजू में तौलता है।।
कर्म अच्छे हों या फिर बुरे फल तो अवश्य मिलता है।
समय स्वर्ग हो या नर्क आदमी यहीं भोगता है।।
ईश्वर सभी को एक तराजू में तौलता है।।
जब जिन्दगी मौत की कगार पर खड़ी हो।।
और कोई इच्छा शेष न रही हो।
तब यही आदमी के जीवन की मौनता है।
ईश्वर सभी को एक तराजू में तौलता है।

★★★★★

लक्ष्य

कु० बबिता
बी. ए. (तृतीय वर्ष)

जीवन में जीने के लिए,
हर कोई अपना लक्ष्य है बनाता,
किसी को मिल जाती है मंजिल,
तो कोई पीछे है रह जाता।
हताश मत हो ऐ इन्साँ,
तेरा लक्ष्य तुझे है बुलाता।।
जीवन में जीने के ....
मुश्किलों से भरा होगा,
खुशियाँ दे रही होंगी तेरे दर पर दस्तक,
पर, तुझे कुछ न पता होगा,
ऐसे में क्या सही है, क्या गलत है।
कोई नहीं बताता।।
जीवन में जीने के ....
तू इस काबिल बना खुद को कि,
खुद मुकाम पर पहुँच जाए,
ये कुदरत भी तुझ पर कोई पलट वार न कर पाये।
छोड़ इस दुनिया को,
उस ईश्वर से जोड़ अपना नाता।।
जीवन में जीने के ....
मत हो तू निर्भर किसी पर,
अपने आप पर भरोसा कर,
मत डर,
मेहनत के बलबूते पर, तू आगे और आगे बढ़,
जो पा लेता है अपनी मंजिल दुनिया में है नाम कमाता।।
जीवन में जीने के ....

आज के नेता

जीनत स्वालेहीन
एम.एस-सी.(प्रथम वर्ष)

आओ लोगों तुम्हें बताएँ शैतानी शैतान की।
नेताओं से बहुत दुखी है जनता हिन्दुस्तान की।।
बड़े-बड़े नेता शामिल हैं घोटालों की थाली में।
सूटकेस भर चलते हैं, अपने यहाँ हलाली में।।
देश धर्म की नही है चिंता, चिन्ता है सन्तान की।
नेताओं से बहुत दुखी है जनता हिन्दुस्तान की।।
आओ लोगों ....
नेताओं से ....
चोर लुटरे भी अब सांसद और विधायक हैं।
सुरा सुन्दरी के प्रेमी ये सचमुच के खलनायक हैं।।
स्वार्थ लोलुप इन मुठ्ठीभर लन ने,
छवि बिगाड़ी भारत देश महान की
आओ लोगों ....
नेताओं से ....
जनता के आवंटिन धन को आधा मंत्री खाते हैं ।
बाकी के अफसर ठेकेदार मिलकर मौज उड़ाते हैं।।
लूट खसौट मचा रखी है सरकारी अनुदान की।
नेताओं से ....
आओ लोगों ....
थर्ड क्लास अफसर बन जाता, फर्स्ट क्लास चपरासी है।
ईमानदार लोगों के मन में छाई बड़ी उदासी है।।
कैसे होगी पार नाव अब, अपने हिन्दुस्तान की।
आओ लोगों ....
नेताओं से ....

★★★★★

NAAC
3rd Cycle
B Grade

संस्कृत भाषाया: महत्वम्

कु० बबीता
बी० ए० (तृतीय वर्ष)

अस्या: पुण्याया: भाषायास्तु नाम्नैव ज्ञायते यदिमं परिष्कृतं परिमार्जितम प्राञ्जलम् च भविष्यति। वस्तुतोडपि इंद नासत्पम। संस्कृमभाषा न केवल लेखने पठने च, अपितु परस्परसंभाषणे अपि माधुर्य प्रसाद गौरवं च जनयति। गौरवं कस्मात अस्य उत्तरम् तु अत्यन्तमेव ऋजु यत: इयम् देवानाम् अमरपुत्राणां गीर्वाणानां च भाषा बर्तते। निश्चितम् एवेदम् महत्वस्य गौरवस्य च विषयम्। अस्या: महत्वस्य अनेकानि कारिणनि सन्ति, तेषामेव प्रस्तुतीकरण अस्माकम् लक्ष्यम्। सर्वप्रथम तु इयम न केवल भारतभूमे: अपितु निखिलविश्वस्य प्राचीनतमा भाषा वर्तते। स्वभाषां प्रति नेदम् अस्माकं पक्षपातमयं दृष्टिकोणम् यत: संसारस्य सर्वेविद्वान: अस्या: प्राचीनतमताम् अंगीकुर्वन्ति। अस्य तथ्यस्य प्रमाणमपि अतिनिपुणं स्वकीये रूपे। सकलसंसारस्य आधग्रन्था: बेदा: संस्कृतभाषायामेव निबद्वा: नान्यस्याम्। यधपि इयम उक्तिरपि विख्याता यत् वेदोडखिलोधर्ममूलम् किन्तु एतवतिरिक्तं तेषु अखण्डस्य नि: सीमास्यं ज्ञानस्य चानन्ता राशिरपि वर्तते। साख्य न्याययोगविज्ञानदर्शन कलादीनां महती परम्परा अस्ति तत्र।

द्वितीयम तु सकलजगत: अखिलासु भाषासु भाषाया: साहित्यं विपुलतमं अस्ति। यदा अन्यभाषायायी जना: स्वीकीयानां भाषणाम् रूपनिर्धारणकार्य कुर्वन्ति स्म तदा संस्कृतभाषायाम् वाल्मीकिपाणिनिभासकालिदास सैमिल्लकविपुत्रादी नां कवीनां कृतय: विराजन्ते स्य साहित्य रंगमंच। अपि नेदम् अस्माकम् संस्कृत भाषाया: महत्वस्य परिचायक: तथ्य: संस्कृत ईदृशा: कवय: सभागतानि कालक्रमेण येषां न कोडपि तुलना विश्वकविषु कालिदाससमं कवि: नारित लोकेडस्मिन्। संस्कृतभाषाया नियतमेव माधुर्यपूजा लोकप्रिया च वर्तते। पुराकाले इयम् समग्र भारतवासिनां राजभाषा आसित् तदा विचारप्रकाशनस्य माध्यमपि संस्कृत एवं आसीत। तादृशो न कोडपि शब्दो वर्तते यस्यानुवादो न विधते संस्कृते। अधुना विरलविस्तारे जातेड्रपि न कोडपि ईदृश: भारतीय: य: संस्कृतस्य द्वित्तान श्लोकन् न जानाति ग्रामवासिन: जना: अपि प्राग्ग्रन्थानां उद्धारणरनि कथ्यन्ते परस्परं वार्तासु यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारतम, ओउम भू भुव: स्व तत्अवितु: कर्मण्येवाध्किारस्ते मा फलेषु कदाचनादीन् वाक्यावशेषान् साम्प्रतं यदा वयं प्रात:काले एवं संस्कृत भाषायाम् वार्ता: श्रप्वन्ति आकाशवाण्या तदा उत्तमकोटिक: माधुर्यरस: सच्चरति, हृदयेषु अस्माकम्। संस्कृतस्य श्लोकगायनं श्रुत्वा तु संगीतप्रियता उत्पद्यते स्वयंमेव।

एतद व्यातिरिक्तं यदा कदा भारतस्य सीम्न: प्रश्नम् समुत्पधते संषर्धप्रिये अस्मिन् लोके तदा संस्कृत साहित्य निवेशितं सीमाकंनमेव प्रमाणिकं भवति अपथगामिन: जनानपि संस्कृत काव्याना आदर्श चरित्राणि एवं प्रेरयन्ति। तान् तेषा पूर्वजानां कृतित्वं व्यक्तित्वं च दर्शयित्वा स्वाभिमान् जनयन्ति तेषु। इदमपि संस्कृत भाषाया: महत्वस्य एक: सदृढ़ स्तभ्य अस्ति।

शिक्षाविज्ञानियो: क्षेत्रे अनेकेषु विज्ञानेषु भाषाय: तुलनात्तकं विज्ञानमपि श्रुयते अधुना। अस्य श्रेय: संस्कृतभाषा-गच्छति। यत: संसारस्य सर्वेसाम् भाषाविदां च कृते संस्कृतस्य सर्वश्रेष्ठं महत्वं वर्तते। मोक्षमूलर कीथविल्सन प्रभृतय: विदेशिन: विद्धान्स: संस्कृताध्ययने जीवनस्य प्रतिपलं प्रदातुम् उत्सुका: भवन्ति। एभि: तथ्थै: सस्कृत महत्वं स्पष्टेव ज्ञातम केनापि कविता सत्यमुक्तम् यत् भाषसु मथुरा मुख्या गीर्वाणभारती।

संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियाँ हैं, शिक्षा सब से बढ़कर है। - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

अर्थ मूर्ख पद्धति

डॉ० कुसुम लता
एसो० प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)

1- अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रहमाडपि तं नरं न रञ्जयति।।

अर्थ- मूर्ख व्यक्ति को सरलतापूर्वक मनाया जा सकता है किन्तु जो अल्पज्ञानी है वह गर्व से भरा है,उसे तो स्वयं ब्रह्मा भी नही समझा सकते, और न ही उसे प्रसन्न कर सकते हैं।

2- साहित्य संगीतकला विहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छ विषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमान
स्वद् भागधेयं परमं पशूनाम्।।

अर्थ- साहित्य संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात पूँछ और सींग से रहित पशु है। घास न खाता हुआ भी वह जीवित है,यह पशुओं का परम सौभाग्य है अन्यथा पशु भूखे मर जाते । केवल साहित्य संगीत व कलाएं ही ऐसी हैं जिससे मनुष्य पशुता की श्रेणी से हटकर मनुष्यता की श्रेणी में आता है।

3- येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।

अर्थ- जो मनुष्य, विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण, और धर्म से विहीन है, ऐसे मनुष्य पृथ्वी पर भारभूत होते हुये भी पशु समान हैं।

4- वरं पर्वत दुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह।

अर्थ- वनचरों के साथ दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर भी घूमना श्रेष्ठ हैं किन्तु मूर्खो के साथ इन्द्र के भवन में भी घूमना ठीक नही है।

5- शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक छत्रेण सूर्यातपो
नागेन्द्रो निशितांकुशेन समदो दण्डेन गोवार्द भौ।
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्र प्रयोगैर्विषं,
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।।

अर्थ- अग्नि जल से शान्त की जाती है, सूर्य की धूप छाते से, मस्त हाथी को अंकुश से, सांड और गधे को डण्डे से, रोग को औषाधयों से और विष को अनेक मन्त्रों द्वारा खत्म किया जा सकता है किन्तु मूर्ख की कोई औषधि नहीं है।

★★★★★

कालिदासः

सुनीता
बी.ए. (तृतीया वर्ष)

कवि सृष्टिषु कवि - कुलगुरोः कालिदासस्य उपम्मालडार वर्णने सर्वातिशायि बैशिष्ट्र्य वर्तते। कालिदास वर्णितासु उपमासु संस्पर्शिनी रसपेशलता कामपि अनिर्बचनीयतसु भावयति इति सहृदय हृदयानुभवः। प्रसडौचित्यः सदृशः शब्दार्थयोः समून्भावः सर्वत्र दरीदृश्यते। यथा कुमारसंभवे तपश्चर्या समाचरितुकामा संर्वाण्याभूषणानि परित्यक्तमाना पार्वतो प्रदोष काले यथा अरूणोदयः न शोभते तथैव न शोभते इति ब्रह्मचारी वेशधारी स्वयं शिवः कथयति चन्द्रतारकादिभिरूप- शोभमाना रजनी अरूणोदये किं शोभते ? सति शोभाधायकैः चन्द्रतारकादिभिः विहीन रजनी यथा न शोभते तथैव यौवनकाले वार्धकशोभिवल्कल धारणं अरूणोदयवत् न शोभते। अन्यच्चायियौवन शोभा प्रवर्धकेन स्तनभारेण किञ्चन्नेमिता पार्वतीया न आतपसयन्निभ रक्तवल्कल धारिणी सा पुष्प स्तवक भारेणावन तान वारक्त पल्लव मण्डितलतेव शोभ मानना परिलषिता।

आवर्जिता किञ्चन्नेमिता स्तनाभ्यां
वासो वसाना तरूणर्करागम।
पर्याप्त पुष्पस्तबकावनम्रा
संचारिणी पल्लविनी लतेव।।

रजुवंशाख्ये महाकाव्येडपि महाकवेः उपमा वर्णनं पाटवं सहृदयानां चतेसि अलौकिकाल्हादं जनयत्येव। द्वितीय सर्गे सुदिक्षिणा दिलीपयोर्मध्यगता नन्दिनी स्वपाटल वर्णतया कथं शुशुभे इति वर्णनं तु कवि प्रयुक्त शब्देनैवानु भवन्तु श्री मन्तः यथा- 'तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपा मध्य गतेव सन्धय।'

गतिशीलायाः नन्दिन्या अनुगमन करिण्याः सुदक्षिणायाः गमनमपि स्वाभिाविक योगमया सुवर्णितमस्ति-

' मार्ग मनुष्येश्वर धर्मपत्नि
श्रूतेरिवार्य स्मृतिरन्वगच्छत्। '

इन्दुमत्याः स्वयेंवरावसरम्रड् वर्णने इन्दुमति समुपस्थितानु अन्यान्यभूपालान्

विलंध्य अग्रे - अग्रे गम्यामाना की दृग्परिलक्षिता? एवं जिज्ञासा सहदयानं। चेतसि जागर्त्येव तस्याः समाधानमपि कविकुलगुरूणा तत्रैव कृतं तदपि तस्यं चातुर्थ भाषा प्रभुत्वं च व्यक्ति यथा-

सञ्चारिणी दीपिशिखेव रात्रौ यं
यं व्यतायिय पतिवंरा सा
नरेन्दृमार्गाट्ट इव प्रपेद
विवर्णभावं स स भूमिपालः।।

अस्मिन् प्रसडे मनोविकाराणां मुख मण्डले कीदृक्रप्रभावः परिलक्षितुं शक्यते इत्यते सूक्ष्मेक्षिकाया कविमूर्धन्येन दृष्टे तच्च वर्णितं वर्णने च भाषाण भाषा प्रभुत्व स्वं पाटवं च साह जिकया अपमया प्रदर्शितं तेन संतुष्टैः काव्यालेना दीपिशिखा ' कालिदासस्य उपाधिः विनिर्मिता।

Candida as a Problem Play

Dr. Vineeta Singh
Asso. Professor - English

Sydney Grundy was the first person to coin the word 'Problem Play' to describe the intellectual drama of the period between 1890 and 1920. In a problem play, it is neither the fate nor the flow in character that causes tragedy but society, its institutions and organisation. These plays are too much realistic and too much preoccupied with the sordid and grim realities of life, individual is crushed under social machinery. Problem play and propaganda play are against the lofty ideals of art and literature and mostly project the dramatist's beliefs and attitudes.

Candida by George Bernard shaw is a problem play in the sense that it either challenges a posture or unveils an issue that is latent but persistent in society. In this case, the issue is the presentation of the role of women in a way that greatly differs from the rigid expectations bestowed upon them by society. In Shaw's generation, around 1890, women had to follow strict rules of prudence and decorum that would show the world that they were virtuous.

Candida is totally a modern lady, she is not typical woman, she is not portrayed as helpless or clueless or in need of a man's guidance. In her married life, she is obviously the stronger character when compared to her husband, when MarchBanks fell in love with her, deciding she is a divine angel, she accepts his love only to guide him like an angel, when her husband suspects him she openly offers herself to the weaker of the two Morell offers to protect candida and Marchbanks offers love and romance to candida. But she knows it well that her husband is physically strong and is emotionally weak and also he is the father of her two children. So she lets her love go anywhere from her life as now she only belongs to Morell.

. She is powerful in her own right and in a rupture with Victorian conventions about love and gender chooses not the stronger man but the weaker, Morell to be her life partner.

. In sum, this is a problem play because Shaw shows that conventional victorian ideas about women are wrong and should be challenged.

★★★★★

Hamlet's Problem of Delay

Dr. Renu
Asst. Prof. - English

The problem of Hamlet's delay or procrastination is as important as that of his madness and his melancholy. The problem has received considerable attention from critics and most divergent views have been expressed. The German critics Werder says that there is no delay at all. Other critics like Stoll says that if there is any delay, it is on the part of the dramatist himself. Such critics would make hamlet merely a revenge play. Prof. Bradley would call them lunatics.

Most critics agree that there is delay, but they do not agree regarding the cause of this delay. The causes can be easily classified into two groups : external causes and internal causes. The critics regarding the first cause point out that the king was always guarded by his swiss bodyguard and the approach to him was difficult. This theory is not tenable as the prince finds the king alone at prayer and could have easily killed him then. Moreover Hamlet does not refer even once to any such difficulty. On the contrary, he says that he has the means and the strength to do it. According to Bradley the reason for delay are subjective ones, not objective. The difficulties are not external and physical but internal and spiritual. Ulrici and Hudson trace his irresolution to his sensitive conscience. They say : "In Hamlet behold the christian struggling with the natural man." This is to say, Hamlet does not want to kill the person, but that he wants to destroy the evil only in that person. This is the christian view of regeneration, of destroying the sin without hating the sinner. There is only one passage in Hamlet about conscience where he asks Horatio, after revealing to him the plot of Claudius against his own life :

" .... is it not perfest conscience
To quiet him with the arm?

Apart from it, Hamlet nowhere refers to his conscience and expresses no remorse at the deaths of polonius or those of Rosenerantz and Guildenstern. The motives for which he does not kill the king at prayer show a most revengeful spirit. The passage about the perfect conscience can not be taken to mean that the cause of his delay is the scruples and doubts about his uncle's crime and trachery.

Coleridge and Schlegel say that Hamlet's delay is due to irresolution, which is itself due to his reflective temperament, over thinking loses his action as well reflected in the following lines :

And thus the native hue of resolution
Is sicklied over with the pale cast of thought.

However, what is wrong with hamlet is not that he thinks too much but that he thinks uselessly. It is like tossing on a sickbed. Prof. Dowden also follows the same line of thinking, through he stresses upon the emotional rather than upon the intellectual

All these critics have been admirably answered by Dr. Bradley in his famous ' Shakespearean Tragedy.' The sum of his arguments is that coleridge and his company are partially right in so far as they stress upon the mental and emotional sensibilities of Hamlet's character. But this is not the whole explanation of the delay. There is in Hamlet a terrible energy for action which is not at all weakened by his thoughts or feelings. If we believe that Hamlet's intellectual strength weakens his will to act, then it follows that hamlet would be incapable of action at any time and under all circumstances. In other words Hamlet could not become a hero of a tragedy at all. Drama is action and even in action can be presented as action and this what happens in Hamlet. It is the peculiar situation in hamlet which render Hamlet unwilling to act. Before receiving the terrible duty from the ghost, Hamlet was not so. For example he said :

" Unhand me gentleman, or will make a ghost of him who slays me."

These are not the words of a weak willed, procrasting Hamlet. Bradley modifies Coleridge's theory and accounts for his delay by pointing out that the prince has received a paralying shock from his mother's hasty marriage and consequently he suffers form melancholia, a pathological state only a step removed from madness. The result is a world-weary cynicism, a disgust with life, a wish not to have been born at all. When the ghost commands him to take the revenge, he has to change his outlook of life. He must also give up his passions and pleasures. Hamlet is diseased and this disease melancholy, apathy, disgust with life etc. account for his irresolution and delay.

★★★★★

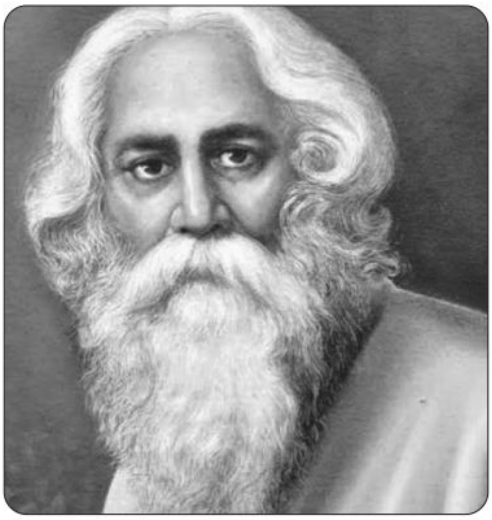

Ravindernath Tagore (7 May 1861 - 7 August 1941)

“Failure is the condiment that gives success its flavor.”-Truman Capote

Thomas Gray as a Transitional Poet

Dr. Reshma Perveen
Asst. Prof. - English

The transitional Poetry Refers to the precursors of Romanticism. The new poetry marks the beginning of a reaction against the rational intellect, formal, artificial and unromantic poetry of the age of Pope, It is a shift or transition from old new- classical ideals and practice in the field of poetry towards the new romantic ideals. The poetry of this period wavers between the two extremes and sometimes contains in it a blend of the traits of both types of poetry. The important poets are Thomas Gray, James Thomson, William collins, William Cowper etc.

Thomas Gray is called a transitional poet or a precursor of romantic movement.

1. He was a lover of wild nature,
2. His nature treatment is lifeless and mechanical.
3. He mostly uses nature as
4. A background for human activity or as a peg to hang moral reflection upon

The first four stanza of the famous churchyard Elegy create melancholy atmosphere for the poet:

- The Curfew tolls the knell of parting day.
- The lowing herd wind slowing over the lea.
- The Plowman homeward plods his weary way.
- Leaves the world to darkness and to me.

The poem ' Elegy written in a Country Churchyard' has universal appeal as it mourns the nameless and neglected dead buried in a country churchyard. A man who knows about Milton's paradise lost and Shakespeare's Hamlet must be knowing Gray's Elegy. Latin inversions, anti- thesis and balance, piling up of epithets are all used by Gray to denote classicism. A fine use of transferred epithet is given below:

"The plowman homeward plods his weary way", The way is not weary but plowman is weary. The poem ends with a personal note given in the epitaph. The universal appeal and perfection of its style has made it one of the most quoted poems in the English language.

In short, Gray is a transitional poet because many of his poetic characteristic belong to classical school, but in its breaking away from heroic couplet, using four lined ballad stanza, universal and humanistic theme, he came forward to the romantics. He wrote little bit whatever he wrote made him one of the chief glories of English poetry.

Role of Chemistry in Pharmaceutical Industry

Dr. Mohd Kamil Hussain
Asst. Prof. - Chemistry

Nature has provided us with a variety of materials in plants and trees and these have been traditionally used as medicines. Chemists like all of us and you are aware that chemists are working in the field of natural product. Chemists have been trying to separate and identify the active chemical components in these medicinal parts by extracting them from the various parts like leaves, roots, barks etc, and all extraction is done by chemical processes such as solute-solvent extraction and using techniques like chromatography and so on. The extracted materials are mixtures of many chemical compounds which are separated using various separation techniques out of which column chromatography is the most prominent one. The pure chemical compounds so obtained are tested for their property as drug and their structure elucidation is done using various techniques like mass spectroscopy, UV spectroscopy, IR spectroscopy etc.

Now, these chemical compounds extracted from the plants which have medicinal values are often obtained only in very small amounts. Many a times, only one gram of active medicine may be obtained from a full tree. To serve masses, many plants cannot be destroyed and here comes the role of pharmaceutical industries which prepare these medicines in large scale.

Synthetic Chemistry try to evolve a Synthetic procedure to synthesize the chemical compounds which are of medicinal importance using the retro Synthetic approach. The focus is also on the optimum development having minimum number of steps and maximum yield because that's how it is going to be cost effective for large scale production of these medicinal compounds and this work is done in research labortories of pharmacaceutical industries. Once the route to prepare this particular chemical compound which has particular medicinal value is found, process also gets patented. Research is also done on synthesizing similar chemical compounds by doing slight variation in some part or the other in the chemical structure and then these are tested whether the variant particular structure is having any medicinal property or not and whichever clicks is worth patenting and commercializing. As the technology is progressing further, there are various softwares in which also the R&D is taking place where in-silico reactions are done and these molecules are tested for their medicinal activity.

The most important and vital part of pharmaceutical industry is actually designing a new and safer drug to fight the respective disease. So, proper knowledge about chemical bonds in a molecule and how they are interlinked with life processes is of utmost importance for the chemistry background, students aspiring to join these pharmaceutical industries. In 1826, Marked the first commercial natural product

Morphine which was used for therapeutic use and it was approved drug by USFDA. Later on, Vior in 1899 synthesized pure drug Aspirin, etc.

Drug Discovery and Chemistry

The drug discovery involves various stages to get a normal drug having no toxicity or minimum toxicity, effective pharma-eco-kinetics and pharma-eco-dynamics properties. A chemist leverages his knowledge of chemistry to best in all aspects of synthetic medicinal and biological principles. The entire broad spectrum of drug development requires chemistry as its base. Chemistry has crucial role in the pharmaceutical industry and it acts as the backbone in process of drug discovery and its exhibition. After the drug is discovered a knowledge of physical and physiochemical properties of drug is required for formulation development where dosage form of drug is designed according to the therapeutic needs. But this is not all before a drug is marketed. It goes into various stages of testing and approval by regulatory bodies.

Stage of Drug Discovery

1- **Target Discovery :** Research for a new drug is done.
2- **Pre-clinical Research :** Screening of drugs on animals for accessing the safety is done.
3- When it passes this test it goes to clinic.
4- **Development :** Testing of drugs on human volunteers for checking its effectiveness and safety.
5- **Review :** A review team examines all the submitted data to take a decision whether to approve a drug for human use or not.
6- **Drug to the Market (on approval) :** In this stage monitory of all the drug's safety is done once they are all available for use by the public.

In India the regulator body is Central Drug Standard Control Organization (CDSCO); in USA, it is Food and Drug Adminstration (FDA) and in Europe, it is European Medicine Agency (EMA).

Pharmaceutical Industry in India

India accounts for almost 20% of global report in generics making it largest provider of generic medicines and exporting vaccines to around 150 countries. Currently, India ranks third in the terms of volume and 14 in the terms of value in pharmaceutical industries. At the same time, Indian pharmaceutical market is expected to grow manifold in the next decade. There are over 10,500 manufacturing units and almost 3000 pharmaceutical companies in India and that is a big number where our students can find placements.

CSIR - Central Drug Research Institute (CSIR-CDRI)

CSIR - Central Drug Research Institute, a premier drug research institute of India was inaugurated on 17th Feb 1951 by the then Prime Minister of India Pt. Jawaharlal Nehru with a vision to strengthen and advance the field of drug research and development in the country. The institute has made significant accomplishments in the pursuit of its mission to New Drugs & Technologies for affordable healthcare for all, generation of knowledge base and nurturing future leaders for healthcare sector. Today, it has become a unique model for modernized drug

research in India-having everything under one roof, from synthesis, screening, development studies, process up-scaling to clinical studies. Unique achievements of the Institute includes discovery and development of 12 new drugs, of which, Arteether (Brand Name: E-mal), BESEB (Brand Name: Memory Sure), Centchroman (Brand Name: Saheli) are currently in market; transferred more then 130 indigenous technologies to the pharmaceutical companies, a significant contribution in the metamorphosis of the Indian Pharma Industry.

Career Opportunities for Chemistry in Pharmaceutical Industries

Pharmaceutical industry offers career opportunities to aspiring genuine motivated undergraduates, postgraduates as well as doctorate students from the pharmaceutical sciences applied science with chemistry as one of the main subjects or chemistry as the main subjects till doctorate level. It provides a broad spectrum of employment with demand of new drugs, their designing, development, analysis, testing etc. A pharma industry has various departments in accordance to the international standard guidelines like ISO 9000 WHO prescribed good manufacturing practice GNP, good laboratory GLP to get standard quality products fit for use. The production or the manufacturing department is associated with production of batches and quality control which is abbreviated as QC so the QC department checks the quality and standards of the product while th QA which is quality assurance department examines the step by step process of manufacturing and assures that the product needs the specific quality, efficacy and safety requirement as per their intended use or not. In the QC the quality analysts focus on testing a substance for acquaintance to standard and requirements. A chemistry graduate can get employed in QC department and is expected to have skills on handling instruments on titration, spectroscopy, chromatography pH metre, conductometry, chemical kinetics etc. and you see all these experiments you do at UG, PG level and we can really train our students in handling this equipment properly.

★★★★★

J.J. Thomson (18 December 1856 - 30 August 1940)

Self Improvement

Dr. Monika Khanna
Asst. Prof. - Economics

THE KEY TO HAPPINESS
IS REALLY PROGRESS AND GROWTH
AND CONSTANTLY WORKING ON
YOURSELF AND DEVELOPING SOMETHING

Improvement is a journey. Anyone who wants to excel in life must take his journey. For improving your skill, you must improve your knowledge. So, now we know that, for improving ourselves we must improve our knowledge.

Man's mind, once stretched by a new idea, never regains its original dimensions - Oliver Wendell Holmes rightly said, a mind is that we must stretch to let new ideas come in and to broaden our capabilities. Without an open mind self-improvement is impossible. Not all ideas are correct, some might be wrong and dangerous as well . Thus to fulfil great responsibility, guidance and proper knowledge are needed.

One must be aware of one's weaknesses and strengths and all aspects where one needs to work upon in order to improve oneself. Once all this is known, it will be very easy to improve and become a better person.

★★★★★

Rude Teacher: Hidden Criminals

Mateen Ur Rehman Khan
M.A. Ist Year

Teachers are a special blessing from God to us. They are the one who build a good society and nation and make the world a better place. A teacher teaches us the importance of a pen over that of a sword. They are much esteemed in society as they elevate the living standard of people. They are like building blocks of society who educate people and make them better human beings. But on the contrary, it has tremendous side effects.

Some teaches or professors forget the difference between discipline and rudeness. They treat students in such a way as they are some kind of criminals. If the behaviour and attitude of a teacher/professor is worse towards his/her students, then they are more dangerous than terrorist. A terrorist can kill many flawless human being but teacher's bad behaviour and attitude can adversely effect countless human being. We believe that some students are also rude, they don't know how to deal with but this doesn't mean that everyone is same.

Government should take the most strict step against such teachers. They should be sent to jail for the crime of ruining society and nation.

Hope - a way to success
HOLD ON PAINS ENDS

Aman Moin Khan
M.Sc. Final (Zoology)

Challenge - We all want to find inner peace & perform at our best - how can we do it ?
Science - Hope is a little known secret in getting ahead & improving well being.
Solution - Implementing a hopeful mindset in life gives you the best result.

Psychologists have proposed lots of different mediums to success over the years. They are courage, carefullness, self-belief, optimism, passion, inventiveness etc. They are all important, but one medium which is mostly undervalued and underappreciated in pschyology & society is hope.

Why is it Important ?

Hope gives you determination : Hope allows people to approach problems with a mindset & strategy suitable for success. Hence increasing the probabilities actually accomplish their goals.

Makes you a better Apprentice : Hope leads to learning goals, which are conducive to growth & improvement.

Improve Achievement : The state of having hope predicted outcomes beyond training, self-esteem, confidence of mood.

Improve Imagination : It Involves coming up with a number of different strategies for obtaining a goal.

Powerful mindset for success & well being : A clear mindset comes only with a positive hope.

As it is said by Dr. Synder : " When you compare students of equivalent intellectual aptitude of past academic achievements, what sets them apart is hope."

" He who has health, has hope & he who has hope, has everything."

- Thomas Carlyle

★★★★★

Ethics of a Teacher

Rohit Singh Tomar
B.Ed. (First Year)

Teacher who is light bearer for our society symbolise the path of enlighten, on whom the responsibility of the society depends. It is a teacher who prepares the future of the country by inculcating the quality of honesty, self-discipline, tolerance, compassion, truthfulness, empathy in their students. Hence, we can say that the role of teacher in the society is very important and significant in context of development of our society on whom the responsibility of transferring the heritage, custom, tradition, and culture of any society depends.

Hence, teaching is a very dynamic service. So, it became important for us to follow a strict path of recruitment so that only the dynamic, laborious, compassionate and innovative mind come in this profession and mold the young mind of our society in the path of development. In present era, it is seen that due to quantities increase in the number of private college, the quality of teaching move towards downward slope. These college ostensibly address the problem of shortage of number of government colleges, but instead they merely work as a shop owner by selling degree to their customer. There is also some loopholes in recruitment, training, transfer, unwillingness to serve in rural areas, lack of knowledge of vernacular language by teachers are some obstacles which hamper and degrade the quality of education.

So, it became imperative for our education system to bring urgent modification in present method of imparting education. Also, there should be need for development of professional ethics in domain of teacher so that he smoothly and without hindrance deliver his service. Professional ethics is important for teacher as teaching require hard work, dedication, innovative method of teaching, motivate student, understand and cope up the difference in their student level, so development of professional ethics in teacher became a pre-requisite of our current scenario. Hence, by imparting and developing professional ethics in our teacher, we should raise the standard of our society. As our young mind nurture by professionally trained teacher, then they became the component of our society which are ethically strong, believe in democratic ideas, having rationalizing power which ultimately take our Indian society on the path of sustainable development whose dream our constitutional maker envisages.

★★★★★

The Diversity and Unity of India

Mohd Naved
M.A (Second Year) English

India is a vast country with a total land area of about 33 million sq km and population exceeding over 100 crores.

Because of its area and population India is generally referred to as sub continent geographically it is a land of contracts in numerous ways. It provides almost every type of climate from extreme heat to extreme cold all the year round the year.

Indian civilization provides the most distinctive feature in the coexistence of unity in diversity. India has diverse social and cultural elements which has made India a unique mosaic of culture. India is infact a panorama of its own types without a parallel in other continents. Hinduism, Jainism, Buddhism, Islam, Sikhism, and Christianity are the major religious besides this twenty two constitutionally recognized languages. There is a diversity not only in regard to racial compositions, religious and linguistics distinctions but also in patterns of living life style, occupational pursuits in heritene and succession of law and practices and rights related to birth, marriage, death etc. The unity of India is inherent in all its historical and social cultural facts as well as in its cultural heritage. India has one constitution that provides guarnetees for people belonging to diverse religions, cultures and languages. It covers people belonging to all providing socio economic geographical conditions in India. There is unity in apparent diversities of race, religious, languages, custom etc. The distinctive feature of India in its unity and diversity is also reflected in social ethos the concept of unity in diversity signifies unity among diversity. These differences can be on the basis of culture, languages ideology religion class, ethnicity etc. Truth is more the existence of this concept has been since time in memorials. The concept has certainly resulted in the ethical and moral evolution of humanity. First of all following unity in diversity implies an interaction between many types of individuals and this would occur also in workplaces, school, public places etc. This polite interaction would build up a tolerance in people hence people would respect the opinion of others.

Unity in diversity certainly enhances the quality of teamwork, this is because of the development of trust and bonding among people as such the coordination and cooperation become very efficient. This concept of unity in diversity is effective in solving various social problems. This is possible diverse people tend to know each other which increases mutual respect among the people. Unity in diversity is very useful for a diverse country, above all the concept allows people of different religions, cultures, castes to live together peacefully. The belief of unity in diversity certainly reduces the chances of riots and disturbances.

★★★★★

Worldly Wisdom

Naseem Jahan
M.A. First Year (English)

Bacon's essays are full of worldly wisdom, worldly wisdom means that kind of wisdom that is necessary for achieving worldly success. Worldly success does not imply any deep philosophy or any ideal morality. It simply means the art or the techniques that a man should employ to achieve success in his life. Bacon's essays are replete with wisdom of this kind. He teaches us the art how to get on in the world, how to wax rich and prosperous, how to rise high in positions, how to exercise one's authority and power so as to attain good results, how to gain influence etc. It is true that Bacon is a philosopher and a moralist, but it has rightly been pointed out by critics that in his essays as in her own career, he treated philosophy and morality as being subordinate to worldly success. It is for this reason that the wisdom of his essays is of somewhat cynical kind. His essays are counsels, civil and moral.

In ' of expense', he writes that money should be spent quite liberally on extraordinary occasion but on ordinary occasion men should spend wisely. He points out the rules for regulating expenses. He writes :" If he be plentiful in the hall to be saving in apparel, if he be plentiful in the hall to be saving in the stable, and the like."

The eassy of 'Of Friendship' is the work of pure utilitarian, Bacon does not speak of the emotional or moral aspect of friendship at all. He gives us the uses of friendship. A friend clarifies our understanding. The advice given by our friend is more reliable.

'Of marriage and single life' deals with the advantages and disadvantages of both the married and single life. Bacon says that a man should not be married otherwise he will not be able to support the society.

The essay 'of studies' is extremely interesting Bacon not only indicates the uses of studies but also tells us how and why we shall study.

1. "Some books are to be tasted, others to be swallowed and some few to be chewed and digested."
2. "Studies serve for delight, for ornament and for ability."
3. "Reading maketh a full man, conference a ready man and writing an exact man."

Bacon was a selfish utilitarian. He appreciates truth but not without a mixture of lie. He defends this mixture on grounds of propriety, He writes : " Truth may perhaps come to the price of pearl that sheweth best by day but it will not rise to the price of a diamond or carbuncle that sheweth best in varied light. A mixture of lie doth ever, add pleasure."

Thus we see that Bacon had taken all knowledge to be his province of worldly wisdom.

Salient Features of Victorian Age

Nida
M.A. (First Year)

The period of romantic revival in the history of English literature was followed by an equally great and productive period which is known as the victorian age of Tennyson. Dickens calls it the best as well as the worst period, the spring as well as the winter season of England. It was an area of material affluence, political consciousness, democratic and social reform, educational progress and reform, industrial and mechanical progress, scientific advancement and social unrest. It produced a galaxy of great men in all walks of life.

1. An era of peace and prosperity : The Victorian age was essentially an era of peace and progress. It was an era when the war drum throbbed no longer and the people felt safe and secure in their island homes. The victorian age was essentially a period of peace and prosperity. The few colonial war that broke out during this period exercised little adverse effect on the national life.

2. Social unrest : With peace and prosperity there was a kind of suppressed social unrest in the hearts of the people. Pessimism and gloom swept away a large majority of thinkers and the writers of the age. It may be due to social unrest. The industrial revolution which created the privileged class of capitalists and mill owners, rolling in wealth and riches also brought in its wake the semi-starved and ill-clad class of labourer and factory workers who were thoroughly dissatisfied with their miserable condition.

3. Mechanical Age : Caryle wrote of this age "were we required to characterize this age of ours by any single epithet, we should be tempted to call it not an heriocal, devotional, philosophical or moral age, but above all others the mechanical age."

4. Condition of women and children : In the domestic field the victorians upheld the authority of the parents over children and husband over wives. Women were relegated to a lower place. Education was closed book for most of the women and the idea of establishing women colleges was ridiculed by the national poets. Tennyson believed in the victorian idea of separate duties assigned to men and women.

5. Religious and moral conditions : From some points of view in contrast especially with the eighteenth century, the victorian age might the regarded religious vocabulary in their speeches and novels yet it might be regarded as an age of religious decay and uncontrolled sectariasim.

The Victorians were moralists at heart and the religion was the only anchor of their lives. To talk of duty honour, the obligations of being a gentleman the responsibilities of matrimony and sacredness of religious belief was to be Victorian.

Importance of Time

Iqra Bi
M.A Ist Year

Time and tide wait for none, which means that just like tide even time does not wait for anyone. Time is one of the most valuable things we have and it should be used wisely.

Money lost can be recovered but once the time is gone it cannot be brought back.

Time is important for everyone, be it students, service persons, businessmen or housewives. We have a lot of tasks to be accomplished and we all fell the shortage of time.

It is really necessary that we all manage time and utilize it properly. We need to accomplish all our tasks in time and be punctual. We should use every minute and every second wisely.

Time never shows pity to poor and never salutes the rich. It gives one chance to all of us and we have to use it in the best possible way. We have to take it as an opportunity and make best out of it. The greatest gift we can give someone is our time because that particular time is not going to come back.

Time is very precious to all of us. We should realize the value of time and respect the importance of time. We should not waste time at all till the end moment of our life. Time is very strong and powerful than everything in this world. It may destroy a lazy person as well as strengthen a hard working person.

It can give lots of happiness, joy and prosperity to one However it may drop everything one by one. We should learn the regularity, continuity and commitment from every single moment. It runs continuously without any disturbance. Time is very important in our lives and plays a significant role. Our whole life revolves around time. We should respect the time and also understand the value of time because the time gone is never going to come back. It's better to follow and respect time instead of regretting afterwards.

Time is management key to success. It allows you to take control of our life rather than following the path of others. As you accomplish more each day, make more sound decisions that people notice.

Value of Time Quotes

- "Time is free, but it is priceless."
- " When you understand the value of time, the resource and the wealth of time, you will be running away from the crowd."
- " The wealth of time is only wealth that is more valuable than human resources." " Lots of people wait around "for the right time."

"Life teaches us to make good use of Time while, Time teaches us the Value of Life."

NAAC
3rd Cycle
B Grade

Importance of Chemistry in our Education System

Arhan Ali Khan
B.Sc III Year

We have shown a cold war between physics, biology & maths, where chemistry was highlighted and different students were playing roles being physics, chemistry, biology & maths with a funny debate.

These subjects were showing their importance as how life depends on them how they are superior from one another while chemistry was sitting silently in corner.

When the conflict was at its peak then chemistry stood up & told how every subject depends on chemistry for their development.

A practical example was set & we asked our audience to assume that if chemistry was not a part of their education system, they won't be able to distinguish between ice & water.

Naina played the role of water & acted to be the most precious thing on planet earth this lead to a conflict with Prathna, who was playing role of ice. Each of them trying to be superior to one another unknowingly of the fact that both of them were of the same composition. The hosts came up with the solution addressing everyone the importance of chemistry in everyday life.

The programme was ended beautifully by giving some amazing facts on chemistry & natural phenomenon were discussed without which life is impossible, followed by group dance.

★★★★★

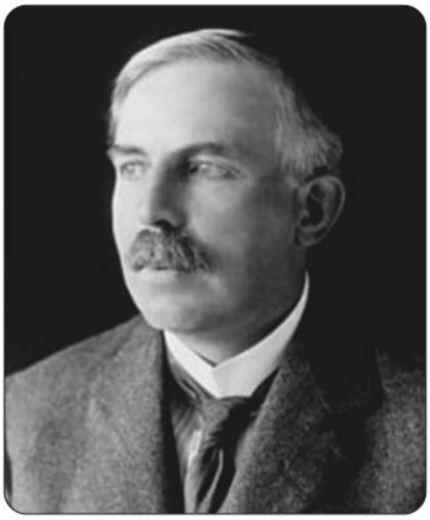

Ernest Ruthford (30 August 1871 - 31 October 1937)

A Mother "And Father's Heart

Iqra Arif
M.A. (First Year)

A Mother's Heart is the key.
The key to success
A Mother's Heart is a ribbon.
That ties your future together
A Mother's Heart is a Meal,
That satisfies your hunger.
A Mother's Heart is a crayon
That colors your life like a Rainbow.
A Mother's Heart is a song
That puts rhythm in your soul.
A Mother's Heart is a bracelet
That accessorizes your dreams.
A Mother's Heart is a book
That entertains your mind.
A Mother's Heart is an ocean
That waves as you go by.

A Father's Heart is a pillow
That you can rest on.
A Father's Heart is a pill
That cures your illness
A Father's Heart is a tissue
That wipes your tears.
A Father's Heart is a muscle
Thats picks you up.
A Father's Heart is clothes
That you wear to cover.
A Father's Heart is money
That brings food to the table.
A Father's Heart is a pencil
That writes down your pains.
A Father's Heart is love
That you fall in love with.

★★★★★

Beauty of Nature

Nazda Bi
M.A Ist English

If you truly love nature
you will find beauty everywhere
Nature does not hurry yet
Everthing is accomplished
Just living is not enough
One must have sunshine freedom
And like a little flower
Study nature, love nature
Stay close to nature
It will never fail you

★★★★★

Our Future Builder

Shivangi Saxena
M.A. (First Year)

When she enters the class,
There is absolute silence.
She helps us with our problems.
And solves them with patience.
She knows each one of us,
And helps us to grow.
Loving and encouraging,
For her no one is slow
She laughs and chats with us,
Like a near and dear friend.
Sometimes she is strict but never rude
I think she is always good,
She is our teacher,
She is always nice and kind
Love and care in her we find,
She is our teacher.
She is beautiful and very cute
She is soft like the music of a flute,
She is our teacher,
Our future builder.

★★★★★

شاہین بی
ایم اے، سال اوّل

موبائل فون: زحمت یا رحمت؟؟

ٹیلیفون کی ایجاد کے بعد بھی انسان کی نئی نئی چیزیں ایجاد کرنے کی پیاس ختم نہیں ہوئی۔ اس جستجو نے ایک ایسے آلہ کو جنم دیا جس نے پوری دنیا کو ایک چھوٹے سے گاؤں میں بدل دیا۔ اسی جادوئی ڈبے کا نام موبائل فون ہے۔

موبائل کے معنیٰ ہیں، کہیں لے جانے لائق ۔یعنی موبائل فون میں ٹیلی فون کی طرح تاروں کی بندش نہیں ہوتی ، ٹیکنالوجی کی یہ سوغات ہر گھر بندش نہیں ،ٹیکنالوجی کی یہ سوغات ہر گھر بلکہ ہر ہاتھ میں نظر آتی ہے اس کے ذریعہ انسان پوری دنیا سے جڑا رہتا ہے ۔ یقینا SMS ہو یا MMS یا پھر سستے کالریٹس ہر کوئی آپکو مصروف نظر آئیگا۔ یہی وجہ ہے کہ تمام مواصلاتی ذرائع پر انسان موبائل فون کو ہی ترجیح دیتا ہے۔ ایک چھوٹا سا آلہ جو چھوٹی سی جیب میں بھی سما جاتا ہے، چاہے بائیک ہو یا کار ہر ہاتھ میں یہ سوغات نظر آئیگی اب تو اس سوغات کے ساتھ کان کو Bluetooth نام کا تحفہ بھی مل گیا ہے۔ یہ ان گنت فوائد سے فیضیاب ہے۔ انسان جب چاہے، جہاں چاہے، اس جہان فانی کے کسی بھی شخص سے ہم کلام ہوسکتا ہے کیلنڈر، کیمرہ، ٹیلیویژن، ڈائری، غرض وہ کون سی چیز ہے جو اس چھوٹے سے آلہ میں نہیں ہے اس لئے موبائل فون کو ہم چھوٹا کمپیوٹر بھی کہہ سکتے ہیں۔ موبائل فون کے اس حسین چہرے کے ساتھ ایک سیاہ چہرہ بھی ہے۔ موبائل فون کی ایجاد اس لئے کی گئی ہے کہ لوگ اس سے فائدہ اٹھا سکیں۔ لمبی ٹرینگ کالس سے ہر جگہ اپنوں سے رابطہ ممکن تھا نہیں اس لئے سیل فون کی ایجاد ہوئی۔ اس کا سب سے بڑا نقصان یہ ہے کہ یہ انسان کی صحت پر برا اثر ڈالتا ہے۔ موبائل کچھ ایسی شعائیں چھوڑتا ہے جسے الیکٹرومیگنیٹک ویز، کہتے ہیں، جو انسانی صحت پر تیر و نشتر کی طرح وار کرتی ہیں۔ ان برق رفتار شعاؤں سے برین ٹیومر اور کینسر جیسی مہلک بیماریوں نے اپنا سر اٹھایا ہے۔ اور یہ آلہ نونہال طبقہ کے ہاتھ میں آجائے تو اس کا ذہن بگڑ سکتا ہے وہ ایک سیدھی راہ پر چلنے کے بجائے بری اور بدترین راہ پر لگ سکتا ہے۔ موبائل فون کا اگر غلط استعمال کیا جائے تو اس کے ذریع معاشرے میں بہت سی خرافات اور فواحشات پھیلنے کا خطرہ ہے۔

موبائل کا اگر صحیح استعمال کیا جائے تو یہ ایک رحمت ہے اور انسانیت کی خوب خدمت کرسکتا ہے۔ لیکن اگر اس کا غلط استعمال ہوجائے تو یہ انسان کی تباہی کے لئے کافی ہے۔ ہمیں اس بیماری میں ڈالا گیا اور اب یہ بیماری جوڑوں کے درد کی طرح انسان کے ساتھ چپک گئی ہے اس سے نجات ممکن نہیں اور ہم نے اسے رحمت کے بجائے زحمت بنا دیا ہے۔

۲

شاہین بی
ایم اے، سال اوّل

زندگی ایک امتحان ھے

زندگی ایک ایسا سفر ہے جس کے ہر موڑ پر انسان کو کسی نہ کسی امتحان سے گزرنا پڑتا ہے چاہے وہ امیر انسان ہو یہ غریب، جس میں انسان کو کبھی کامیابی ملتی ہے اور کبھی ناکامی کا سامنا کرنا پڑتا ہے کامیابی ملتی ہے تو انسان کو زندگی کا ہر لمحہ بہت حسین اور خوش گوار نظر آتا ہے اور اگر ناکامی کا سامنا کرنا پڑا تو زندگی کے ہر کام کا ہر رنگ پھیکا پڑ جاتا ہے، زندگی ویران اور اداس ہو جاتی ہے اور انسان مایوسی کی چادر اوڑھ لیتا ہے بعض دفعہ تو انسان بے حد ٹوٹ جاتا ہے جب اسے لگتا ہے کہ اللہ نے اسے وہ شخص، وہ شے نہیں دی جس کا وہ طلب گار تھا، اور اسی وقت میں انسان کو زندگی سے نفرت ہو جاتی ہے، اور اپنے میں انسان ہمت ہار جاتا ہے جو کہ محض بزدلوں کا کام ہے جو انسان کی کمزوری کا احساس دلاتا ہے۔ اگر ایک بار ہمت ٹوٹ کر بکھر جائے تو اسے سمیٹنا بہت مشکل ہو جاتا ہے۔

مشکلوں سے دور بھاگ جانا آسان ہوتا ہے
ہر قدم پر زندگی کے ایک نیا امتحان ہوتا ہے
ہار مان لینے والوں کو کچھ نہیں ملتا زندگی میں
لڑنے والوں کے قدم میں جہان ہوتا ہے

اس بات کو ہمیشہ یاد رکھنا چاہئے۔ کہ ہماری زندگی میں صرف ہمارا حق نہیں ہے۔ بلکہ ان لوگوں کا بھی حق ہے جس کی وجہ سے ہمیں یہ زندگی ملی ہے اس لیے ہمیں صرف اپنے لئے نہیں بلکہ دوسروں کے لیے بھی سوچنا چاہئے۔ زندگی کے ہر قدم پر احتیاط سے کام لینا چاہیے۔ کیونکہ زندگی ایسی پہیلی ہے جسے آج تک کوئی نہیں سلجھا پایا ہے۔ زندگی کبھی نہ رکنے والا سفر ہے۔

ہر انسان اپنی زندگی ہنسی خوشی گزارتا ہے مگر یہ نہیں سمجھ پاتا کہ ہم یہ زندگی کیوں جی رہے ہیں؟ کیا مقصد ہے ہماری زندگی کا؟ اللہ تعالیٰ نے ہمیں زندگی دی ہے عبادت کرنے کے لئے، اور ہم عبادت کے نام پر دو رکعت نماز پڑھ لیتے ہیں کیا یہی ہماری عبادت ہے؟ کیا یہی ہماری زندگی کا مقصد ہے؟ زندگی تو ہر انسان اپنی اپنی سطح پر اچھی طرح سے گزارتا ہے مگر کیا کبھی کسی نے گہرائی سے اس بارے میں سوچا ہے؟ نہیں! کیونکہ آج کل کے انسان کے آس پاس زندگی کے بارے میں سوچنے کے لئے وقت ہی نہیں ملتا، زندگی کی پہیلی کوئی آج تک نہیں سلجھا سکا۔ لیکن اگر کوئی اس پہلی کے بارے میں گہرائی اور دلچسپی سے سوچے تو ہر اس سوچنے والے کی سمجھ میں آجائے گا کہ زندگی کا اصل مقصد کیا؟ اس لئے زندگی میں جو بھی پریشانی

۳

آئے اس سے گھبرانے کی بجائے اس کا سامنا کرنا چاہئے زندگی صرف ایک بار ملتی ہے جس میں ناکامی بھی ہوتی اور کامیابی بھی زندگی کی مشکلوں کا سامنا کرتے ہوئے ہمیں اپنی منزل تک کا سفر طے کرنا ہے ہماری لگن اور محنت ہی ہمارے مستقبل کو خوبصورت بنا سکتی ہے۔

نہیں تیرا نشیمن قصر سلطانی کے گنبد پر!
تو شاہیں ہے بسیرا کر پہاڑوں کی چٹانوں میں

۴

شبنور (M.Sc. 1st)

محنت

اے نونہال بچو محنت سے کام کرنا
محنت کے بل پہ ساری دنیا کو رام کرنا

محنت سے چل رہے ہیں دنیا کے کارخانے
محنت سے مل رہے ہیں ہر قوم کو خزانے

سب دست کاریوں میں ڈالی ہے جان اس نے
مزدور کو دکھادی دولت کی کان اس نے

محنت کرے گا جو بھی دولت اسے ملے گی
راحت اُسے ملے گی، عزت اُسے ملے گی

جو قوم چاہتی ہے دنیا میں نام کرنا
وہ جانتی ہے لازم محنت سے کام کرنا

۵

محمد محفوظ

ایم اے اردو (سال دوم)

تعلیم کی ضرورت واہمیت

تعلیم ہر انسان چاہے وہ امیر ہو یا غریب، مرد ہو یا عورت سب کی بنیادی ضرورت میں شامل ہے۔ تعلیم انسان کا ایک ایسا حق ہے جو اس سے کوئی چھین نہیں سکتا اور اگر دیکھا جائے تو انسان اور حیوان میں فرق تعلیم ہی کی بدولت ہوتا ہے۔ اور تعلیم حاصل کرنے کیلئے ہر مذہب میں زور دیا گیا اور اللہ نے فرمایا کہ بینا اور نابینا برابر نہیں ہو سکتے، اور اسی طرح سایہ اور دھوپ برابر نہیں ہو سکتے۔

اللہ کے اس فرمان سے معلوم ہوا کہ اسی طرح ایک پڑھا لکھا انسان اور ایک انپڑھ انسان برابر نہیں ہوسکتا۔ جس طرح بینا نابینا سے بڑا ہوتا ہے، اُجالا اندھیرے سے بڑا ہوتا ہے، اور سایہ دھوپ سے بڑا ہوتا ہے اسی طرح ایک پڑھا لکھا انسان انپڑھ انسان سے بڑا ہوتا ہے۔ اور اسی طرح تعلیم کی اہمیت وضرورت پر نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے زور دیتے ہوئے فرمایا کہ علم حاصل کرو چاہے چین ہی جانا کیوں نہ پڑے۔ تعلیم کی ضرورت واہمیت پر ہر مذہب کے اندر زور دیا گیا ہے اور تعلیم حاصل کرنے کو انسان کی بنیادی ضرورت قرار دیا ہے۔ تعلیم کسی بھی قوم یا معاشرے کیلئے ترقی کی ضامن ہوتی ہے اور تعلیم کا ہونا اور نہ ہونا ہی قوموں کی ترقی اور زوال کی وجہ بنتی ہے۔ اور تعلیم حاصل کرنے کا مطلب صرف یہ نہیں ہے کہ کسی اسکول، کالج، یونیورسٹی سے ڈگری لے لی جائے بلکہ تعلیم کے ساتھ ساتھ تعمیر اور تہذیب سیکھنا بھی ضروری ہے تاکہ انسان اپنی معاشرتی روایات اور اقدار کا خیال رکھ سکے۔ تعلیم وہ زیور ہے کہ جو انسان کے کردار کو سنوارتی ہے اور انسان کو اٹھنے بیٹھنے، چلنے پھرنے، کھانے پینے، اور آپس میں ایک دوسرے سے ملاقات کے طور طریقے سکھاتی ہے۔ اخوت اور بھائی چارگی اور ایک دوسرے سے ہمدردی کا درس بھی تعلیم سے حاصل ہوتا ہے۔ اور تعلیم کے ذریعہ ہی معاشرے میں پھیلی ہوئی برائیوں کو دور کیا جاسکتا ہے۔ اور تعلیم کی قدر ومنزلت کا تقاضا اس بات سے بھی لگایا جاسکتا ہے کہ دنیا کی ہر چیز بانٹنے سے گھٹتی ہے مگر تعلیم ایک ایسی دولت ہے کہ جس کو جتنا بانٹو اتنا ہی تمہارے علم میں اضافہ ہوگا۔ اور آج کے اس پر آشوب اور تیز ترین دور میں تعلیم کی ضرورت نہایت ہی اہمیت کی حامل ہے چاہے زمانہ کتنی ہی ترقی کر لے۔ حالانکہ آج کا دور کمپیوٹر کا دور ہے ایٹمی ترقی اور سائنس اور جدید ٹکنالوجی کا

٦

دور ہے۔مگر اسکولوں میں بنیادی عصری تعلیم ،ٹیکنیکل تعلیم ،انجینئرنگ ،وکالت ،ڈاکٹری اور مختلف جدید علوم حاصل کرنا آج کے دور کا لازمی تقاضہ ہے۔اور اسی کے ساتھ انسان کو انسانیت سے دلچسپی کیلئے اخلاقی تعلیم بے حد ضروری ہے۔اسی تعلیم سے عبادت، محبت وخلوص، ایثار، خدمت خلق، وفاداری اور ہمدردی کے جذبات پیدا ہوتے ہیں۔اخلاقی تعلیم کی وجہ سے ایک اچھے معاشرے کی تشکیل ہوتی ہے۔تعلیم کا سب سے پہلا مقصد انسان کی ذہنی جسمانی وروحانی نشونما کرنا ہے۔تعلیم حاصل کرنے کیلئے قابل اساتذہ کا ہونا بھی بے حد ضروری ہے جو طلباء کو اعلیٰ تعلیم کے حصول میں مدد فراہم کریں۔استاد وہ نہیں جو محض چار یا پانچ کتابیں پڑھا کر اور کچھ کلاسز لیکر اپنے فرائض سے مبرہ ہو جائیں۔ بلکہ استاد وہ ہے جو طلباء وطالبات کی پوشیدہ صلاحیتوں کو بیدار کرتا ہے اور انہیں شعور وادراک ،علم وآگہی نیز فکر ونظر کی دولت سے مالا مال کرتا ہے جو اساتذہ اپنی اس ذمہداری کو بہتر طریقے سے پورا کرتے ہیں ان کے شاگرد آخری سانس تک ان کے احسان مند رہتے ہیں۔

ملک میں امن وترقی کیلئے ہمیں اپنے بچوں کو تعلیم کے زیور سے آراستہ کرنا ہوگا۔اس کیلئے صرف نعرے لگانے ،اونچے ہوٹلوں میں تقریبات کرنے سے علم کی ترقی ممکن نہیں ہے۔

یعنی کہ امن وامان قائم نہیں رہ سکتا ملک کے ہر فرد کو ملکر تعلیم کے فروغ کیلئے اپنا کردار ادا کرنا ہوگا۔

اسی تعلیم کے ذریعہ ہم وطن عزیز کو مایہ ناز خطیب ،قلمکار ،صحافی ،ادیب ،مؤرخ اور انسانیت کا علمبردار اور نسل نو کا معمار دے سکتے ہیں۔

۷

ثنا انجم

اُستاد کا حق

ہے ماں باپ کا پہلے رتبہ بڑا
جو بعد اُن کے حق ہے تو استاد کا
وہ تم کو سکھاتا ہے علم و شعور
جہالت طبیعت سے کرتا ہے دور
جہاں تک بنے اُن کی عزت کرو
دل و جان سے اُن کی خدمت کرو
نہ ٹالو کوئی حُکم اُن کا کبھی
ہمیشہ رکھو اُن کو راضی خوشی
نہ ہو اس کی خدمت سے ہرگز ملول
کہتا علم و دولت تمہیں ہو حصول
جو تم اس کی خدمت بجالاؤ گے
تو خادم سے مخدوم بن جاؤ گے

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Government Raza Post Graduate College
Khushro Bagh Road, Rampur,
affiliated to Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Uttar Pradesh as
Accredited
with CGPA of 2.44 on seven point scale
at B grade
valid up to February 07, 2024

Date : February 08, 2019

S. C. Sharma
Director

EC(SC)/35/RAR/UPCOGN12046

समाचार दर्पण

मतदान को लेकर विद्यार्थियों ने किया जागरूक

दैनिक जागरण 16.10.19

रजा डिग्री कालेज में हुई मेहंदी प्रतियोगिता में रही छात्राओं को प्रमाण पत्र देते प्राचार्य पीके वार्ष्णेय और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में छात्राओं द्वारा बनाई गई रंगोली।

पहल

- राजकीय रजा कॉलेज एवं महिला कॉलेज में कार्यक्रम
- मेहंदी एवं रंगोली के माध्यम से मतदान का दिया संदेश

जागरण संवाददाता, रामपुर : मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजकीय रजा डिग्री कॉलेज एवं महिला डिग्री कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें मेहंदी एवं रंगोली प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों ने मतदान को प्रेरित करती [illegible]

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में हुए कार्यक्रम में [illegible]

किया। कहा कि लोगों के बीच जाकर उन्हें इस विषय में अधिक से अधिक जागरूक करें। इस अवसर पर कल्पना सिंह, प्रेमपाल कुमार, शहबेज लतीफ, श्याम रस्तोगी, राजेश कुमार, भुजवीर सिंह यादव, प्रणय कुमार एवं अफसर [illegible] आदि उपस्थित रहे।

राजकीय रजा डिग्री कॉलेज में पूर्वाह्न 11 बजे सेमिनार हॉल में प्रतियोगिताएं प्रारंभ हुईं। दोनों ही प्रतियोगिताओं में छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़ कर एक डिजाइन बना कर मतदान को लेकर संदेश दिए। रंगोली में टोली संख्या एक प्रथम रही। दूसरा स्थान टोली संख्या दो को मिला तथा तीसरे स्थान पर टोली संख्या तीन रही। वहीं मेहंदी प्रतियोगिता में अमरीन [illegible] प्रथम रहीं। दूसरे स्थान पर अफसाह आफरीन रहीं। वहीं तीसरा स्थान [illegible] दानिश को मिला। रंगोली में निर्णायक की भूमिका डॉ. [illegible], डॉ. रेनू व डॉ. जेबी नाज ने निभाई।

वहीं मेहंदी में डॉ. जागृति मदान, डॉ. दीपा अग्रवाल व डॉ. मीनाक्षी गुप्ता निर्णायक रहीं। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. पीके वार्ष्णेय ने कहा कि मतदान हमारा महत्वपूर्ण अधिकार है, आज हम सब इस बात को अच्छी तरह समझ चुके हैं। बस अब हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों तक इस संदेश को पहुंचाएं, क्योंकि एक-एक वोट से लोकतंत्र की शक्ति बढ़ती है। डॉ. प्रतिभा श्रीवास्तव, डॉ. दीपमाला, डॉ. रेशमा परवीन, डॉ. रेखा रानी, डॉ. एसएस यादव व डॉ. विनीता सिंह आदि रहे।

गर्ल्स डिग्री कॉलेज में भी इस अवसर पर रंगोली एवं मेहंदी की प्रतियोगिताएं की गईं। बच्चों ने यहां भी अपनी कलाकृतियों एवं डिजाइनों से मतदान का संदेश दिया। यहां पर विजयी रहे प्रतिभागियों की घोषणा बुधवार को (आज) होने वाली गोष्ठी में की जाएगी। डॉ. सुनीता, रजिया परवीन, डॉ. नागेंद्र पाल, शत्रुजीत सिंह व मनोरमा चौहान आदि रहे।

नई कलाओं को जन्म देने वाला विश्वकर्मा: डा. वार्ष्णेय

18 Sep 19 हिन्दुस्तान

रामपुर | हिन्दुस्तान संवाद

राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में श्री विश्वकर्मा जयंती समारोह का शुभारंभ प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने दीप प्रज्जवलित कर एवं पुष्प अर्पित कर किया। इस अवसर पर प्राचार्य ने कहा कि विश्व समुदाय के लिए कर्म करने वाला प्रत्येक व्यक्ति विश्वकर्मा है। नई कलाओं को जन्म देने वाला विश्वकर्मा है।

कालेज सभागर में मंगलवार को आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने कहा कि प्रत्ये समाज और घर में विश्वकर्मा हैं। डा. दीपक कुमार ने कहा कि विश्वकर्मा दुनिया के पहले वास्तुकार हैं। डा. दीपा अग्रवाल ने कहा कि पूरा विज्ञान ही विश्वकर्मा में समाहित है। संचालन डा. वीके राय ने किया। डा. सीमा, डा. मीनाक्षी गुप्ता, डा. सहदेव, डा. एसएस यादव, डा. मुजाहिद अली, डा. अजय विक्रम सिंह, डा. अरुण कुमार, डा. बेबी तबस्सुम आदि मौजूद रहे। दूसरी ओर, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय में विश्वकर्मा जयंती आस्था एवं श्रद्धा के साथ मनाई गई। प्राचार्य डा. रजनी रानी अग्रवाल समेत तमाम प्राध्यापकों ने भगवान विश्वकर्मा जी के चित्र पर पुष्प एवं माल्यार्पण किया। इस अवसर पर डा. सबीहा परवीन, डा. सुनीता अग्रवाल, डा. अनीता रानी, डा. सुनीता, डा. अंकिता, डा. नगेंद्र पाल, डा. इफ्तेखार अहमद कादरी मौजूद रहे।

वार्षिक खेल प्रतियोगिता के विजेता सम्मानित

रामपुर के रजा पीजी कालेज में वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता में पुरस्कृत छात्राएं।

संवाद न्यूज एजेंसी

23.1.2020 अमर उजाला

दस किलोमीटर दौड़ में महेश ने बाजी मारी

रामपुर। राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का समापन हो गया। इस दौरान विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रतियोगिताओं में विजेताओं को सम्मानित किया।

दूसरे दिन प्रतियोगिताओं का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. पीके वार्ष्णेय ने किया। उन्होंने दस किलोमीटर दौड़ को हरी झंडी दिखाई। इसमें महेश सैनी प्रथम, अनिल कुमार द्वितीय एवं रोहित कुमार तृतीय स्थान पर रहे। लंबी कूद में इरशाद अली पहले, विकास कुमार दूसरे एवं विशेष कुमार तीसरे स्थान पर रहे। ऊंची कूद में विकास कुमार ने बाजी मारी, जबकि जतिन कुमार दूसरे एवं विजय कुमार तीसरे स्थान पर रहे। छात्रा वर्ग लंबी कूद में अंकिता पहले, ऋतु दूसरे एवं मीनू तीसरे स्थान पर रही। चार सौ मीटर दौड़ में अंकिता, तमन्ना एवं मीनू प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहीं। छात्र वर्ग पंद्रह सौ मीटर दौड़ प्रतियोगिता में विष्णु प्रथम, ललित सागर द्वितीय एवं महेश सैनी तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिताओं के समापन के बाद विजेताओं को पुरस्कार देकर प्राचार्य ने सम्मानित किया। इस मौके पर डॉ. विनिता सिंह, डॉ. दीपा, डॉ. राजीव, डॉ. मीनाक्षी, डॉ. रेशमा परवीन, डॉ. निधि, डॉ. सहदेव आदि रहे।

उर्दू साहित्य को लोकप्रिय बनाने में रुहेलखंड क्षेत्र का अहम योगदान

10.2.20 अमर उजाला

रामपुर के राजकीय रजा पीजी कालेज में आयोजित नेशनल सेमिनार में बोलते इराक जैदी। संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में आयोजित की गई सेमिनार

संवाद न्यूज एजेंसी

रामपुर। राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में उर्दू साहित्य के प्रसार में रुहेलखंड का योगदान विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि उर्दू साहित्य को लोकप्रिय बनाने में रुहेलखंड क्षेत्र का अहम योगदान रहा है।

कालेज में आयोजित कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि जामिया मिलिया इस्लामिया नई दिल्ली के फारसी विभाग के प्रभारी इराक रजा जैदी, मुख्य वक्ता हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय उर्दू विभागाध्यक्ष फातिमा बेगम परवीन, रजा लाइब्रेरी के निदेशक सैय्यद हसन अब्बास, रजा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पीके वार्ष्णेय ने दीप प्रज्वलन कर किया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता ने कहा कि उर्दू साहित्य को व्यापक रूप से प्रचारित एवं प्रसारित व लोकप्रिय बनाने में रुहेलखंड क्षेत्र का अहम योगदान रहा है। मुख्य अतिथि ने कहा कि उर्दू कथा साहित्य के फरोग में रुहेलखंड इसलिए अहम है, क्योंकि रामपुर समेत आसपास के जिलों में उर्दू मुख्य रूप से प्रयोग की जाती है। उन्होंने उर्दू नावेल की पृष्ठभूमि को संक्षेप में पेश किया। प्राचार्य ने सभी अतिथियों का आभार जताया। इस मौके पर संयोजक डॉ. अरशद रिजवी, डॉ. जहांगीर अहमद खां, एस फजीलत, शकील गौस, डॉ. किश्वर जैदी, डॉ. रेहान हसन, डॉ. रजिया परवीन आदि उपस्थित रहे।

एनसीसी के छात्रों ने रैली निकाल दिया स्वच्छता का संदेश

जागरूकता रैली में शामिल एनसीसी केडेट्स।

19 Sep, 19

अमर उजाला ब्यूरो

रामपुर। स्वच्छता पखवाड़े के तहत एनसीसी निदेशालय से निकाली गई साइकिल रैली रामपुर पहुंच गई। यहां राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के छात्रों ने रैली का जोरदार स्वागत किया। इस बीच छात्र छात्राओं ने स्वच्छता का संदेश दिया, ताकि देश में खुशहाली आ सके।

बरेली से रामपुर पहुंची रैली का आम्बेडकर पार्क पर जोरदार स्वागत किया गया। इसके बाद रैली के छात्रों ने रैली के उद्देश्य को लेकर विस्तार से जानकारी दी। राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पीके वार्ष्णेय ने कहा कि प्रधानमंत्री चाहते हैं कि गांधी जी की 150वीं जयंती पर पूरा राष्ट्र स्वच्छ हो जाए। इसके लिए सरकार की ओर से तो प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन स्वच्छता का यह संकल्प जन सामान्य के सहयोग के बिना पूरा नहीं हो सकेगा। इसी वजह लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है। प्राचार्य, 23 बटालियन के कमान अधिकारी शिवा सिन्हा ने हरी झंडी दिखाकर रैली को मुरादाबाद के लिए रवाना कर दिया। इस मौके पर डॉ. प्रवेश कुमार, डॉ. मुजाहिद अली, डॉ. वीके राय, कप्तान सिंह, बलदेव सिंह आदि उपस्थित रहे।

लखनऊ से दिल्ली पहुंचेगी रैली, बुधवार को रामपुर में रैली का जोरदार स्वागत

हिन्दी में कई भाषाओं के शब्द समाहित

रामपुर | हिन्दुस्तान संवाद

राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी सप्ताह के दूसरे दिन सामान्य हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें लगभग 70 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में देवेंद्र प्रताप सिंह प्रथम रहे जबकि, चार प्रतियोगियों ने संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान और चार प्रतिभागियों ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कालेज सभागार में हुई प्रतियोगिता का शुभारंभ हिन्दी विभाग के अध्यक्ष समन्वयक डा. अरुण कुमार, डा. जेबी नाज और डा. राजीव पाल द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने कहा कि हिन्दी माथे की बिन्दी है और जोकि, हमेशा चमकती है। हिन्दी ऐसी भाषा है जोकि, दुनिया की हर भाषा के शब्दों को अपने भीतर समाहित किए हुए है। उस्तरा, कैंची, चाकू, बेलन सभी तुर्की भाषा के शब्द हैं लेकिन, ऐसा प्रतीत होता है कि यह हिन्दी के शब्द हैं। सामान्य हिन्दी प्रतियोगिता में बीएड विभाग के छात्र देवेंद्र सिंह प्रथम रहे। डा. मुजाहिद अली, डा. विनीता सिंह, डा. बेबी तबस्सुम, डा. एसएस यादव, डा. वीके राय, डा. अजय विक्रम सिंह रहे।

रजा डिग्री कालेज में हिंदी परिषद की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मौजूद छात्र-छात्राएं।

रजा डिग्री कालेज में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला कल

रामपुर। राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने बताया कि 19 सितंबर को कालेज के सेमीनार हाल में व्यक्तित्व विकास (पर्सनालिटी डेवलपमेंट) पर कार्यशाला होगी। व्यक्तित्व विकास पर आयोजित कार्यशाला का अक्षिता आराध्य फाउंडेशन के तत्वावधान में दोपहर 12:30 से अपराह्न 2 बजे तक होगी।

रजा कालेज में स्वच्छता के लिए किया जागरूक

रामपुर। राजकीय रजा डिग्री कालेज में सेवा सप्ताह के अंतर्गत स्वच्छता अभियान चलाया गया। प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने सफाई अभियान का शुभारंभ किया। डा. प्रवेश कुमार, डा. प्रदीप कुमार, सोमेंद्र सिंह, माणिक रस्तोगी आदि रहे। कामरान ने पहला, स्वीटी शर्मा ने दूसरा और किशन सैनी व आलिया ने संयुक्त रूप से तीसरा स्थान प्राप्त किया।

रजा डिग्री कालेज में सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करते छात्र। • हिन्दुस्तान

लक्ष्य पर नजर रखकर भविष्य को संवारें युवा

रामपुर। राजकीय रजा पी जी कालेज रामपुर में एकल गायन, बुक्के निर्माण, फैंसी ड्रेस, नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता के माध्यम से छात्रो ने रंगा रंग एवं सृजनात्मक कार्यक्रम पेश किए। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि गौरव कुमार ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने दीप प्रज्वलन कर किया। प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने कहा कि रचनात्मक सर्जनात्मक जीवन ही सार्थक है। मुख्य अतिथि ने सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। प्राचार्य ने सभी का आभार जताया। इससे पहले सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत से कार्यक्रम का आगाज हुआ।

23.1.2020 हिन्दुस्तान

23 से रजा डिग्री कालेज का एनएसएस शिविर

रामपुर। राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. पीके वार्ष्णेय ने बताया कि एनएसएस की चारों इकाइयों का वार्षिक सात दिवसीय विशेष शिविर दिन-रात कौशल विकास हेतु युवा का आयोजन 23 से 29 जनवरी तक हकीमगंज, सींगनखेड़ा, खौद, सैदनगर में होगा।

संस्मरण प्रतियोगिता में सुधा प्रथम

रामपुर। राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी विभाग की ओर से हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इसके तहत मेरी अविस्मरणीय यात्रा विषय संस्मरण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें सुधा सैनी प्रथम, अजीम द्वितीय, ब्रजेश कुमार एवं गुलबेज तृतीय स्थान पर रहे। कार्यक्रम में विभाग प्रभारी डॉ. अरुण कुमार, डॉ. जेबी नाज, डॉ. राजीव पाल, डॉ. विनिता सिंह आदि मौजूद रहे।

प्रश्नोत्तरी में देवेंद्र प्रथम

17.9.19

रामपुर। राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी विभाग की ओर से हिन्दी भाषा साहित्य पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रश्नोत्तरी में बीएड विभाग के देवेन्द्र प्रताप सिंह प्रथम रहे, जबकि दूसरे स्थान पर चार छात्र छात्राएं रहे। इस मौके पर हिन्दी विभाग के प्रभारी डॉ. अरूण कुमार, डॉ. राजीव पाल, जेबी नाज आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

Website - www.grpgcrampur.com Mail Id : grpg.rmp@gmail.com
Contact No : 8954391244 / 8954392249